छत्तीसगढ़ विधान सभा
की
अशोधित कार्यवाही

पंचम विधान सभा **तृतीय सत्र**

गुरुवार, दिनांक 03 अक्टूबर, 2019

(आश्विन 11, शक सम्वत् 1941)

[अंक 02]

छत्तीसगढ़ विधान सभा

गुरुवार, दिनांक 03 अक्टूबर, 2019

(आश्विन 11, शक सम्वत् 1941)

विधान सभा पूर्वाह्न 11:00 बजे समवेत् हुई.

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

<u>राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा</u>

<u>(क्रमश:)</u>

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधीवाद, गोडसेवाद, जो भी वाद कहें। यहां शुरूआत करने वाले लोग पूरे गायब हैं, यही गांधी जी के लिए श्रद्धांजलि है। इधर पूरा देखिए। माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी के पीछे देखिए और ये दो दिन के टोपीवाले को देखिए, आज उसकी टोपी उतर जाएगी। संसदीय कार्यमंत्री जी, आप आगे-पीछे के दीर्घा, आपके गांधीवाद को देख लीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये श्री अमरजीत भगत ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- आज घण्टी जल्दी बज गई क्या ? (हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी की 150 वीं जयंती समारोह के अवसर पर उनको, उनके आदर्श को याद करने के लिए हम लोग सब एकत्रित हुए हैं। इस संदर्भ में आज की बात की शुरूआत मैं यहां से करना चाहता हूँ। ''यश्य नास्ती स्वयं प्रज्ञा शास्त्र तस्य करोति किम । लोचनाभ्याम् भी नस्य दर्पणम् किम करस्यति।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय कल आप संस्कृत बोल रहे थे। आज आप संस्कृत देख लीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- आप उनके पीछे क्यों पड़े हैं ?

श्री धर्मजीत सिंह :- भईया महात्मा गांधी जी की किसी भी किताब में इतनी कठिन संस्कृत गांधी जी खुद नहीं बोले हैं।(हंसी) अब आप इतना बोल रहे हो तो इसका अर्थ भी हिन्दी में समझाते चलो। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं, वह लिखा पढ़ रहे हैं। जिन्होंने लिखकर दिया है वह अर्थ थोड़ी लिखकर दिया है।

श्री अमरजीत भगत :- अच्छा सुनिये। आप ऐसा मानते हैं कहना यह है कि शास्त्र में सब बातें लिखी हुई है लेकिन जब आप उसको पढ़ेंगे, गुनेंगे...।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं छत्तीसगढ़ के संस्कृति मंत्री के भाषण को ध्यान से सुनूंगा।

श्री अमरजीत भगत :- अच्छा, चलिये। ठीक है।

श्री अजय चन्द्राकर :- ये कल बोला हूँ। अब आप एक्सटेम्पोर बोलते हैं कि देख-देख कर पढ़ते हैं, मुझे यह संस्कृति मंत्री का देखना है।

श्री अमरजीत भगत :- अब पूर्व मुख्यमंत्री जी आये हैं, आप बैठिए। आप इधर-उधर क्यों भाग रहे हैं ? मैं शुरूआत में कहना चाहूंगा कि :-

''यश्य नास्ती स्वयं प्रज्ञा शास्त्र तस्य करोति किम ।

लोचनाभ्याम् भी नस्य दर्पणम् किम करस्यति।

शास्त्र में सब बात लिखी हुई है, उसको पढ़ेंगे, ध्यान से गुनेंगे तब तो आप समझेंगे। नहीं तो व्यर्थ है, जिस प्रकार से एक नेत्ररहित व्यक्ति को दर्पण अनुपयोगी है, उसी प्रकार से है और आप जिनके पीछे बार-बार कोड करते हैं उनके बारे में लिखा है कि :-

''वरमे को गुणी पुत्रस्य ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप किसके लिए बोल रहे हैं, आप उसको भी स्पष्ट करते चलिये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय मुख्यमंत्री जी के बारे बोल रहा हूँ।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप ऐसा बोलते चलिये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय,

''वरमे को गुणी पुत्रस्य- न च मुर्ख संतान अपि।

एकस्य चन्द्रश्य तमो हन्ती न चा तारा गणोपि च। अर्थात्....।

श्री धर्मजीत सिंह :- अहंम नहि सम्झयामि् । (हंसी) तुम समझामि।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पर हर किसी व्यक्ति की चाहत रहती है कि उसको जो पुत्र मिले, वह गुणी मिले। सुसंस्कारवान मिले और मूर्ख न मिले। ठीक उसी प्रकार एक चन्द्रमा पूरे मण्डल को प्रकाशमान करता है उसमें हजारों की संख्या में तारे भी उतनी रोशनी नहीं पहुँचा पाते।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी स्वराज्य के प्रेरणा स्त्रोत थे।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपनी बात 5 मिनट में समाप्त करेंगे। आज किसी को 5 मिनट से ज्यादा समय नहीं मिलेगा।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज तो हमारा भाषण शुरू हुआ है। अच्छा ठीक है। मैं 5 मिनट में अपनी बात रख लूंगा।

असंशोधित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, एक मिनट। आपने अभी देश में एक घटना देखी होगी चन्द्रयान-2 गया था, उससे लैण्डर उतरा। फोर्स लैण्डिग हुई। वह करण्ट न ले रहा है, न दे रहा है। अभी ये लैण्डर हो गये हैं। प्रज्ञान और क्या-क्या जो होता है, ये फोर्स लैण्डिंग में उतरे हैं, आवाज आ नहीं आ रही है, करेन्ट आ नहीं आ रहा है, थोड़ा करेन्ट से बोलो। मुख्यमंत्री जी आ गये हैं, अब तो थोड़ा दमदारी से बोलो न।

श्री अमरजीत भगत :- आप कुछ बोलने देंगे तब तो बोलूंगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप संस्कृत का अर्थ समझाते चलो, कुछ पल्ले नही पड़ रहा है भैया, और कोई बात नहीं कह रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- फिर शुरूआत करूं, माननीय अध्यक्ष जी ने समय-सीमा बांध दिया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, हम आपसे निवेदन करेंगे कि इनको पूरा समय देकर हमको सुनवाईये और आप संस्कृत का ज्ञान दो।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, यदि आपकी अनुमति हो तो फिर वहीं से शुरू करूं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, मत शुरू करो। आपका समय सीमित है।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपका संस्कृत पढ़ना इसलिए जरूरी है, माननीय मुख्यमंत्री जी अब आ गये है, अब आप पढ़िये।

अध्यक्ष महोदय :- आप अपने सीमित समय का उपयोग करिये और 5 मिनट में समाप्त करें।

श्री अमरजीत भगत :- चलिये ठीक है। माननीय अध्यक्ष जी, मैं फिर वहीं से शुरू करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, वह नहीं कहना है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी स्वराज के प्रेरणास्त्रोत थे। वह विदेशी वस्तुओं का हिन्दुस्तान में उपयोग न हो, उसके पक्षधर थे। छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्यमंत्री जी भी उस दिशा में उनके विचारों को आगे बढ़ा रहे हैं। '' नरूवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी, छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी, एला बचा के रखना हे संगवारी''। जब पुरानी व्यवस्था, अर्थव्यवस्था को और जो हमारी पुरानी प्रथा थी, उसको जीवंत रखने का...।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी, आज मैं मंदिरहसौद वाली रोड से आया हूं, वहां पर भी आज एक गौमाता मरी पड़ी है, उसके ऊपर कुत्ता चढ़ा हुआ था। फिर नरूवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी से शुरू किये हैं। छत्तीसगढ़ में गांधीवाद मतलब ये चार शब्द है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, जितनी नरूवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी बनाये हैं, विधानसभा में एक लाट निकाल लो और सब कोई देखने चलते हैं कि वह कितना सफल है?

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत जी, आप अपनी बात जारी रखें।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- गांधीवाद का अर्थ समझ में आ गया, जो मंत्री खड़े होते हैं, नरूवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी तो बोलते हैं। वह समझ में आ गया, उसको पटल में रखा मान लिया जाये। उसको पटल में रखवा दें, उसको बोलने की जरूरत नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- आज सीमित समय है, उसका सदुपयोग करिये, बस इतना निवेदन है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, गांधी जी स्वराज के प्रेणता थे, यहां निर्मित वस्तुओं का उपयोग अधिक से अधिक किया जाये, इस पक्ष में थे और उसी कांसेप्ट को, पुरानी प्रथा को माननीय मुख्यमंत्री जी बढ़ाने का काम कर रहे हैं। मैं उस पार बैठे हमारे साथियों से पूछना चाहता हूं कि क्या भारत के प्रधानमंत्री इस बात को मानते हैं कि स्वराज के पक्ष में हैं, विदेशी वस्तुओं के उपयोग में कोई रोक लगाने के पक्षधर हैं? यदि हॉ तो भारत के भूभाग में चाईना ने जो डोकलाम में घुस कर आकोपाईड किया है, उस चाईना के व्यापार में कोई रोक लगाने के पक्ष में हैं? क्या उन्होंने भारत के बाजार में चाईना की निर्मित वस्तुओं के प्रयोग और यहां पर व्यापार में कोई रोक लगाने की दिशा में काम किया? गांधी जी स्वराज के, भारत में निर्मित वस्तु के उपयोग के पक्षधर थे।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय मंत्री जी, पी.ओ.के किसके समय हुआ था, यह भी बता दीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वह विदेशी वस्तुओं के उपयोग पर रोक लगाने के पक्ष में थे। क्योकि विदेशी बाजार के बहाने उसके माध्यम से अपने रोजगार को, यहां के मार्केटिंग सिस्टम को आकोपाईड करके अर्थव्यवस्था पर एकाधिकार कर लिये थे। एक ईस्ट इंडिया कंपनी आ करके व्यापार के माध्यम से पूरे हिन्दुस्तान में 200 साल तक कब्जा करके रखी। गांधी जी चाहते थे कि यहां कुटीर उद्योग बढ़े, यहां छोटे-छोटे उद्योग धंधों को बढ़ावा मिले, विदेशी वस्तुओं का प्रचलन बंद हो। उन्होंने स्वयं बैरिस्टर हो करके भी लंगोट पहन करके पूरा एक मिशाल पेश किया। इनके पक्ष के [XX] [1]

श्री सौरभ सिंह :- [XX]

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- इसको कभी नहीं भूलना ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- उसी की नकल हो रही है ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- [XX]

श्री शिवरतन शर्मा :- मुख्यमंत्री जी, यह परंपरा रही है कि जो व्यक्ति सदन का सदस्य नहीं है उसका नाम न लिया जाये इसलिये उन्होंने नाम नहीं लिया ।

श्री भूपेश बघेल :- मुझे बात तो पूरी करने दीजिये ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- यह आचरण-व्यवहार की बात है ।

[1] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

असंशोधित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेहरू जी की शख्सियत और नेहरू जी की संपन्नता पूरा देश नहीं बल्कि पूरा विश्व जानता है और नेहरू जी का इसलिये सम्मान किया जाता है क्योंकि उन्होंने सारी सुख-सुविधाओं को त्याग दिया था, घर ही त्याग दिया था और आपके नेता ने क्या किया ? आप उससे तुलना नहीं कर सकते । उनके पास सब-कुछ था, उसे उन्होंने त्याग दिया और इनके पास कुछ नहीं है [XX] [2] (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, [XX] यह तो हाल है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- श्री नेहरू जी की शख्सियत जो भी हो, जैसी भी रही हो लेकिन मैं इतिहास का एक तथ्य भी बताता हूं । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, [XX] उनकी तुलना किससे की जाती है ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आवश्यक चर्चा न करें । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, केवल एक मिनट । [XX]

अध्यक्ष महोदय :- यहां पर अनावश्यक चर्चा न करें । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- इतिहास में यह भी लिखा है [XX] (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, [XX] (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मरकाम जी, बैठिये । (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- माननीय अध्यक्ष महोदय, [XX] (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- अंग्रेजों से उन्होंने माफी मांगी थी । (व्यवधान)

श्री अरूण वोरा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं श्री शिवरतन शर्मा जी से कहना चाहता हूं कि सन् 1942 में जब महात्मा गांधी जी ने आजादी का सूत्रपात किया था, करो या मरो का नारा दिया था अंग्रेजों भारत छोड़ो की बात जब छेड़ी थी [XX] (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं अभी आपको बताउंगा ।

श्री अरूण वोरा :- क्या देश की आजादी में कोई योगदान दिया है ? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं अभी आपको बताउंगा, मेरी बारी आने दीजिये मैं सब बता दूंगा । (व्यवधान)

[2] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- श्री शिवरतन जी, आपको समय मिलेगा तब आप बताईयेगा । प्लीज आप लोग टोका-टाकी न करें, बहुत कम समय है उसका सदुपयोग होने दीजिए ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल गांधी जी के जीवन पर जीवंत नाटक का चित्रण किया गया, ये लोग नहीं थे । विभाजन के बारे में भी दिखाया था, अगर देखते तो कुछ समझते ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मंत्री जी, नाटक में एक अंतिम शब्द था और नाटक में कहा गया था [XX][3] यह भी बता दीजिये । कल के नाटक में हमने इस बात को देखा है, सबने देखा है । [XX]

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत आपत्तिजनक है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- कल के नाटक को आप देख लीजियेगा । कल के नाटक में यह सत्य है । (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- [XX] (व्यवधान) । यह बहुत गलत बोल रहे हैं । बिल्कुल गलत बात है, यह बहुत आपत्तिजनक बात है । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- यह बहुत आपत्तिजनक है ।

श्री भूपेश बघेल :- ये बहुत गलत बात बोल रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने पूरा नाटक देखा है ।

श्री भूपेश बघेल :- बहुत आपत्तिजनक बात है । [XX] यह बहुत गलत बोल रहे हैं । कल के नाटक में यह बात नहीं थी। बिल्कुल गलत बोल रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- शर्मा जी, ये गलत है । (व्यवधान) अमरजीत अपनी बात शुरू करें ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- अध्यक्ष जी, कम से कम वाणी में भी अहिंसा और हिंसा का अंतर तो समझो । [XX]

श्री अमरजीत भगत :- बोलने दीजिए, आपको भी अवसर मिलेगा ।

श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, मैं इनके लिए एक पंक्ति कहना चाहता हूं - जिस तरह मक्खी को पूरे शरीर में एक मात्र घाव दिखाई देता है, वैसे ही मैं कल से देख रहा हूं इनको गांधी जी के अच्छे विचार पर चर्चा न करके, मान लीजिए कोई गलती हुई है तो केवल उसी पर इनका ध्यान है (मेजों की थपथपाहट)

श्री शिवरतन शर्मा :- गोडसे की चर्चा किसने प्रारंभ की ?

---

[3] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- अध्यक्ष महोदय, दो दिन से सोशल मीडिया में जो चल रहा है और समाचार पत्रों की हेडिंग बना है । विनोद जी बोल रहे हैं जिस पर चर्चा नहीं होनी चाहिए, उस पर चर्चा हो रही है तो इसकी शुरूआत किसने की ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिए ।

श्री धरमलाल कौशिक :- नहीं, क्यों चलिए ? जयंती किसकी मनाई जा रही है। जयंती किसकी मनाई जा रही है तो चर्चा किसकी होनी चाहिए ।

श्री देवेन्द्र यादव :- आपने की शुरूआत की, क्योंकि आपने ही बताया नहीं कि आप कौन सी विचारधारा से जुड़े हैं, [XX] [4] । आप क्लीयर कर दीजिए, यहां पर इस बात की समाप्ति हो जाएगी ।

डॉ (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोगों ने ही शुरूआत की है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- छत्तीसगढ़ में शुरूआत कहां से हुई है और जब शुरूआत हुई है तो फिर उस बात को सुनना भी चाहिए । उसमें बुरा मानने का कोई औचित्य नहीं है । अध्यक्ष जी, आप देखेंगे कि सोशल मीडिया में देखें तो जिनकी जयंती मनाई जा रही है, उससे ज्यादा लाल बहादुर शास्त्री जी के बारे में चर्चा है और उससे भी ज्यादा जिनके बारे में मुख्यमंत्री जी ने चर्चा की है । लोगों को यह भ्रम हो रहा है कि [XX] । यह दुर्भाग्य का विषय है ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, क्षमा वीरस्य भूषणम् । गांधी जी बोलते थे कि अपराध से घृणा करो, अपराधी से नहीं । क्षमा, वीरों का आभूषण होता है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- यही बात तो मुख्यमंत्री जी को समझाओ । गोडसे-गोडसे आप लोग ही कर रहे थे । आप जो बात बोल रहे हो, वह उन्हें समझाओ ।

श्री अमरजीत भगत :- आप बोलने दोगे तब तो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मुख्यमंत्री जी का नाम लोगे तो देवेन्द्र जरूर खड़ा होगा (हंसी) ।

श्री अमरजीत भगत :- क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात । आप लोग जो कर रहे हो उसे हम स्वस्थ स्पर्धा के तहत बुरा नहीं मानते हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, विशेष सत्र गांधी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर चर्चा के लिए बुलाया गया है । जो व्यक्ति सदन के सदस्य नहीं हैं उनके बारे में जितनी भी चर्चाएं हुई हैं, मैं उन सबको विलोपित करता हूं । (मेजो की थपथपाहट)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हर कोई गांधी बनना चाहता है । गांधी जी के विचारों को आत्मसात करना चाहता है । उनके चरित्र को जीवन में उतारना चाहता है, अनुसरण करना

[4] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

चाहता है । कोई गोडसेवाद का अनुसरण नहीं करना चाहता है । क्योंकि गांधी जी इस देश के निर्माता थे, स्वप्नदृष्टा थे । उन्होंने इस देश के लिए लड़ाई लड़ी, खून-पसीना बहाकर इस देश को आजाद कराया । हर कोई चाहता है, एक नन्हा बालक भी चाहता है । (श्री अजय चन्द्राकर, सदस्य के खड़े होने पर) एक मिनट पूरा होने दीजिए ना ।

श्री अजय चन्द्राकर :- फिर बोलने देंगे ।

श्री अमरजीत भगत :- हां बिल्कुल । एक छोटा अबोध बालक भी कहता है कि मां खादी की चादर दे दे, मैं गांधी बन जाऊं । एक बालक अपने माता-पिता से क्या बोलता है कि मां खादी की चादर दे दे, मैं गांधी बन जाऊं । सब मित्रों के बीच बैठकर, रघुपति राघव गाऊं । वह बालक यह नहीं बोलता है कि मुझे गोडसे बनना है, वह कहता है कि मुझे गांधी बनना है । वह अपने मित्रों के बीच बैठकर रघुपति राघव गाना चाहता है । अध्यक्ष महोदय, गांधी का जीवन एक दर्शन है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- गांधी जीवन दर्शन में कांग्रेस के माननीय विधायकगण बात कर रहे हैं। चूंकि आप संस्कृति मंत्री हैं, इसलिए मुझे यह जरूर बताएंगे। [XX] [5] ये गांधी जी की भाषा है क्या ? इसे एल्पाई करेंगे क्या ? इससे आप सहमत हैं क्या? ये हिंसा है या नहीं है ? [XX] इसे बताने का जरूर कष्ट करेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- चन्द्राकर जी, बार-बार यही बात मत करिए। चलिए आप चर्चा कीजिए। चलिए, इसे विलोपित करिए। अमरजीत जी आगे चलिए।

श्री अमरजीत भगत :- जी। मन की शुद्धि के लिए अपने इरादे को पक्का करने के लिए वे प्रार्थना में व उपवास में विश्वास करते थे।

अध्यक्ष महोदय :- आपको 5 मिनट की बजाय 10 मिनट से भी ज्यादा हो गया। डॉ. रमन सिंह जी।

श्री अमरजीत भगत:- मैं बस 2 मिनट में खत्म कर रहा हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, अक्सर वे गाया करते थे कि वैष्णव जनतो तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे।

श्री शिवरतन शर्मा :- अमरजीत जी, आपके मन की शुद्धि हुई या नहीं हुई बताओ। मन की शुद्धि माननीय मुख्यमंत्री जी के प्रति है या राजा साहब के प्रति है, यह स्पष्ट कर दीजिए।

श्री अमरजीत भगत :- गांधी जी एक पक्के इरादे के व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे और एक बार जो ठान लेते थे, उसे पूरा करके ही मानते थे। उन्होंने यह ठान लिया था कि मुझे दूध नहीं पीना है। गाय और भैंस का दूध नहीं पीना है और एक बार दक्षिण अफ्रीका में उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। स्वास्थ्य

[5] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

खराब हुआ तो उनको कुछ लोगों ने सलाह दिया कि आप तो गाय और भैंस का दूध पीने से मना किये हैं, बकरी का दूध तो पी सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- वह तो कल नाटक में आपने देख लिया है।

श्री अमरजीत भगत :- उसी का तो अनुसरण कर रहा हूं। इन लोगों को बता रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- इन्होंने भी और बहुत लोगों ने भी देखा है। (हंसी)

श्री अमरजीत भगत :- और तब जाकर उन्होंने माना था। वे ईश्वर को अपना रक्षक मानते थे और एक बार दक्षिण अफ्रीका में ऐसी घटना हुई। आंदोलन के दौरान उनकी सुरक्षा को लेकर के कुछ लोगों के मन में शंका हुई कि गांधी जी के जीवन को कुछ लोगों से खतरा है। एक उनके मित्र पिस्तौल लेकर के उनके साथ चल रहे थे और उनकी नजर पिस्तौल पर पड़ी तो उन्होंने इस बात का प्रतिकार किया और बोले कि ईश्वर मेरे रक्षक हैं। आप उनका स्थान कैसे ले सकते हैं। ठीक उसी प्रकार अफगानिस्तान से लगे हुए क्षेत्र में जब भ्रमण कर रहे थे तो उनके साथ अब्दुल गफ्फार श्रीमंत गांधी थे, जो गांधी जी की सुरक्षा को लेकर चिंतित थे और कुछ बंदूकधारियों को बुलाकर रखा था, जिन्हें देखकर भी उन्होंने उसे दूर करने की सलाह दी। वे सन् 1917 में चम्पारण्य सत्याग्रह में थे। उस समय अंग्रेजों ने गांधी जी को मरवाने के लिए कुछ गुंडे बुलाकर रखे थे। जैसे ही गांधी जी को पता चला तो वे रात में ही अकेले निहत्थे गांधी जी उनसे मिलने पहुंच गये और उन्होंने कहा कि मैं निहत्था और अकेले आया हूं। चाहोगे तो आप मेरी जान ले सकते हो। इस बात से उनकी इतनी ग्लानि हुई कि वे सब गुंडे उनके सामने हथियार रख दिये और इतना ही कहना चाहूंगा कि हम लोग अपने जीवन में अगर गांधी जी से कुछ सीख सकते हैं, उनके आदर्श से कुछ सीख सकते हैं तो जरूर सीखना चाहिए। हमें जरूर अपने जीवन में गांधीवाद को अपनाना चाहिए। आपने मुझे बोलने के लिए मौका दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द। जय छत्तीसगढ़।

अध्यक्ष महोदय :- आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । डॉ. रमन सिंह जी।

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- अध्यक्ष जी, सबसे पहले मैं आपको धन्यवाद देना चाहूंगा कि गांधी जी की 150वीं जयंती पर आपने यह दो दिवसीय विशेष सत्र का आयोजन किया। निश्चित रूप से यह संस्कार स्वर्गीय श्री बिसाहू दास महंत के हैं और आपने जो प्रयोग किया, वह शायद छत्तीसगढ़ देश का अकेला ऐसा राज्य होगा, जिसने ऐसा आयोजन किया तो सबसे पहले मैं इस शानदार प्रयोग के लिए आपको धन्यवाद और बधाई देना चाहता हूं। गांधी जी का जन्म या गांधी जी का इस देश में आगमन या उनकी उपस्थिति चूंकि एक संत पुरूष के रूप में हम गांधी जी को मानते हैं और इस देश के हजारों साल के संस्कार, हजारों साल की ऋषि परंपरा और उस ऋषि परंपरा के राजनीतिक संत के रूप में किसी व्यक्ति का नाम लिया जा सकता है तो वह महात्मा गांधी का नाम लिया जा सकता है तो महात्मा

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गांधी का नाम लिया जा सकता है। जिस व्यक्ति ने इस देश की कल्पना में राम राज्य की कल्पना को जमीन पर उतारने के लिए प्रेरणा बुद्ध और महावीर से लेकर, राजनीति में नये शस्त्र का प्रयोग किया, जो दुनिया नहीं जानती थी, गांधी जी के उस चमत्कार से दुनिया हतप्रभ थी। क्योंकि राजनीति में कभी सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह का उपयोग नहीं हुआ था। राजनीति के मूल भाव में, जब राजनीति की शुरूआत हुई, इस देश में राजनीति काम करने लगी तो सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रम्हचर्य, स्वालंबन की, यात्रा, पदयात्रा की कोई बात नहीं करता था। ये सारे प्रयोग गांधी जी ने किए। यह निश्चित रूप से मनीषियों का उनके ऊपर संस्कार मिला था, जिसकी वजह से उनके अंदर एक आत्मबल और आत्मशक्ति थी कि वह अकेला व्यक्ति, उस सल्तनत को चुनौती देता था, जहां कहीं सूर्यास्त नहीं होता था। दुनिया की राजनीति में एक नया शब्दकोष देने का काम किया है। शायद उस समय की राजनीति में ये शब्द, शब्दकोष में थे ही नहीं। एक नये शस्त्र का जन्म देने वाले, सत्याग्रह शब्द का प्रयोग और सत्याग्रह शब्द का उपयोग करने वाला इस दुनिया में पहला व्यक्ति, जिन्होंने आग्रहपूर्वक किया। फिर उसी से असहयोग आंदोलन, खिलाफत आंदोलन शुरू हुए। फिर 1942 के बाद भारत छोड़ो आंदोलन, किसानों के चंपारण का आंदोलन, और एक साथ सभी क्षेत्रों में काम किए। न केवल इस देश की आजादी के लिए संघर्ष किए बल्कि दूसरे मौके पर अपृश्यता के खिलाफ, छुआछूत के खिलाफ, ऊंच-नीच के खिलाफ उनका संघर्ष चला। तीसरा जो भारतवंशीय जो दक्षिण अफ्रीका में थे, उनके जो हालत थे, उनके हालत को लेकर एक लंबी लड़ाई का शस्त्र बनने का काम महात्मा गांधी जी ने किया। उनकी सीमा और उनका रेंज, उनकी व्यापकता, उस दौर में ग्लोबल लीडरशीप, जिसको हम कह सकते हैं। आज सैकड़ों साल बाद भी जिस व्यक्ति को कोई छूं नहीं सकता, उनसे प्रेरणा लेकर नेल्सन मण्डेला और डाक्टर मार्टिन लूथर, आंग सान सू की (Aung San Suu Kyi) जैसे लोगों ने अपने रचनात्मक आंदोलन का श्रेय यदि किसी को दिया तो महात्मा गांधी जी को दिया। यह उनकी व्यापकता है। यह उनका बड़प्पन है कि राष्ट्रीय स्तर पर दुनिया को नई दिशा देने वाले लोग बाबा आमटे तैयार होते हैं। कुष्ट निवारण के लिए, कुष्ट के लिए अपना पूरा जीवन सौंप देते हैं तो इनकी वजह से सौंपते हैं। विनोबा भावे जी का इतना बड़ा आंदोलन, इतना बड़ा पूरा यज्ञ देश में चला तो किसकी प्रेरणा को लेकर चला ? प्रेरणा कहां से मिलती है और प्रेरणा का स्त्रोत क्या है ? उस सूर्य की तरह प्रकाशमान होकर ऐसे हजारों लोगों को रास्ता दिखाते रहे। अध्यक्ष जी, यदि टैगोर ने उनको महात्मा कहा, तो निश्चित रूप से ऐसी-ऐसी बातें, महात्मा गांधी जी के लिए जिन विचारों को आज पढ़ते हैं और देखते हैं तो हम रोमांचित होते हैं। निश्चित रूप से नई पीढ़ी को इन बातों का एहसास होना जरूरी है। ऐसा व्यक्ति, जिसने दुनिया को रास्ता दिखाया। इस देश में ऐसा कोई व्यक्ति पैदा नहीं हुआ, जिसने गांधी जी से ज्यादा शब्द बोले हों। इस देश में ऐसा कोई व्यक्ति पैदा नहीं हुआ, जिन्होंने गांधी जी से ज्यादा अक्षर लिखे हों। हिन्दुस्तान में ऐसा कोई व्यक्ति

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पैदा नहीं हुआ, जिन्होंने गांधी जी से ज्यादा सड़क नापें हों। पदयात्रा के माध्यम से पूरे हिन्दुस्तान में चले हैं। सबसे ज्यादा आंदोलन का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति का नाम है, जिनको हम महात्मा गांधी के रूप में याद करते हैं। उनको बहुविधि आयामों में महारत हासिल था। उन्होंने तीन-चार लड़ाई को एक साथ कई मोर्चों पर खोला। 1869 में जन्म लेकर निश्चित रूप से उस दौर की शुरू की बात से शुरू की। गांधी जी 1888 में बैरिस्टर बनने वकालत की शिक्षा लेने इंग्लैण्ड गये। सन् 1888 में जब वहां जाते हैं तो गांधी जी धोती और लकड़ी लेकर चलने वाले गांधी नहीं थे। उस समय के गांधी जी सूट-बूट पहनने वाले, कोट पहनने वाले, अच्छे जूते, अच्छे कपड़े पहनने वाले गांधी थे। फिर गांधी की बैरिस्टर से महात्मा बनने की यात्रा कहां से शुरू होती है ? किस धरती को श्रेय जाता है कि गांधी जी को एक वकील से एक महात्मा की यात्रा को पूरा कराये और उस यात्रा का संयोग कहां से जुड़ता है ? 1893 में शेख अब्दुला के निमंत्रण पर गये। शेख अब्दुला का दक्षिण अफ्रीका में उनका एक पर्सनल मामला था, जिसके लिए गांधी जी को मुकदमा लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रीका का यात्रा करना पड़ा और वहीं से गांधी जी की महात्मा बनने की प्रक्रिया शुरू हुई। अब्दुला के निमंत्रण पर पानी की जहाज पर सवार होकर दक्षिण अफ्रीका की धरती पर उतरे और गांधी जी डरबन पहुंचते हैं। 7 जून, 1893 को गांधी जी प्रिटोरिया जाने के लिए ट्रेन पर चढ़ते हैं और तब गांधी जी को महसूस हुआ कि दक्षिण आफ्रीका में हिन्दुस्तानियों की हालत क्या है, वहां के भारतवंशियों की स्थिति क्या है ? जिन्हें गिरमिटिया के रूप में 1860 से 1890 के बीच इन 30 सालों में हिन्दुस्तान के मजदूरों को पकड़कर, बंधक बनाकर 5 साल के एग्रीमेंट के तहत दक्षिण आफ्रीका भेजा गया, 60 हजार से ज्यादा मजदूर वहां पहुंचे और गिरमिटिया प्रथा को एक अजीब बात जो उस देश में लागू होती थी कि जब गांधी जी वहां वकालत करने गए और वहां हिन्दुस्तानियों को, भारतवंशियों को कुली के रूप में संबोधित किया जाता है और पहली बार गांधी जी का संबोधन हुआ, कुली बैरिस्टर यानि किसी व्यक्ति को नीचा दिखाने का अंग्रेजों की क्या मानसिकता हो सकती थी, गांधी जी के लिए ये शब्द यूज़ किया गया, वहां के पेपरों में कुली बैरिस्टर और कुली बैरिस्टर के रूप में महात्मा गांधी ने दक्षिण आफ्रीका की अपनी यात्रा शुरू की। क्या-क्या अपमान सहे, इस देश की हालत को बदलने की कल्पना उनको यहां से हजारों किलोमीटर दूर कैसे होती है, जब वे प्लेन से प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहे थे और प्रिटोरिया के लिए जब यात्रा में निकले, उनके पास फर्स्ट क्लास का टिकिट था, फर्स्ट क्लास की टिकिट में सिर्फ गोरे ही यात्रा कर सकते थे । गांधी जी के पास टिकिट होने के बाद वहां से उतारा गया और उनको कहा गया कि भारतीय तीसरे दर्जे में यात्रा कर सकते हैं । उन्होंने अपना टिकिट दिखाया, उनको ट्रेन से फेंक दिया गया, उनके सामान फेक दिया गया और उनसे कहा गया कि आप यहां नहीं घूस सकते । अपमान पर अपमान होता रहा । महात्मा का जन्म कैसे होता है, उसकी प्रक्रिया कितनी कठिन होती है, कितना अपमान सहना पड़ता है, कितने लांछन सहने पड़ते हैं। जैसे ही

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जुर्म और अत्याचार का सिलसिला उनके ऊपर चलता रहा, उनको होटल के अंदर कमरे नहीं मिले, होटल के अंदर प्रवेश नहीं दिया गया, खाना खाने में दिक्कत होती थी । जज के सामने गांधी जी अपने पुराने काठियावाड़ टोप लगाए फेटा बांधे उपस्थित हुए तो वहां के जज ने कहा कि इस न्यायालय में इसको उतारना पड़ेगा । गांधी जी ने वहीं से अपनी लड़ाई का, शस्त्र का पहला प्रयोग शुरू किया और उन्होंने कहा कि मैं पगड़ी नहीं उतारूंगा और आपको मेरी पगड़ी में ही सुनना पड़ेगा । यह हमारी परम्परा है, ये भारत है और सत्याग्रह का पहला सबक उनको मिला और बैरिस्टर गांधी को इस बात का अहसास हुआ कि यदि यहां लड़ना है, यहां रहना है तो पूरी मजबूती के साथ लड़ना पड़ेगा । 1893 में जिसके लिए वे दक्षिण आफ्रीका गए थे, वह समाप्त हो गया। अब गांधी जी के सामने चुनौती थी कि वे हिन्दुस्तान वापस आ जाएं, मगर जैसे ही वे हिन्दुस्तान आने की तैयारी करने लगे, वहां दक्षिण आफ्रीका एक विधेयक भारतीयों को वोट देने का अधिकार समाप्त करने का विधेयक प्रस्तुत किया गया । गांधी जी ने वहीं तय किया कि मैं इस विधेयक का विरोध करूंगा, वहां पर लोगों को आमंत्रित किया और 1894 में नेटॉल इंडिया कांग्रेस की स्थापना की और इस संगठन को एक शक्तिशाली संगठन के रूप में उभारने का काम किया और गांधी जी ने सत्याग्रह की शुरूआत वहां से की । दक्षिण आफ्रीका में रहते-रहते 1906 में पहली शुरूआत उन्होंने बड़ी लड़ाई की की, जब दक्षिण आफ्रीका सरकार ने एक नया कानून बनाया और वह कानून था कि भारतीय मूल की आबादी को पंजीकृत करना अनिवार्य होगा। उस पंजीयन के खिलाफ में 11 दिसम्बर को उन्होंने जोहानसबर्ग में 3 हजार लोगों का विरोध प्रकट करने का एक सम्मेलन किया और गांधी जी ने उस समय वहां के लोगों को पहली बार कहा कि वे हमको अहिंसक तरीके से इसका विरोध करना है । लगातार 7 साल इस बात के लिए संघर्ष करते रहे, हजारों हड़तालें हुईं, जेल में डाल दिया गया, उनको लाठी खानी पड़ी और लाठी खाने के साथ-साथ कोड़े बरसाए गए, मगर गांधी जी की 21 साल की यात्रा । यानि गांधी जी का जन्म हिन्दुस्तान से दूर कैसे हो रहा था, कोई व्यक्ति अपनी धरती को छोड़कर लगातार 21 साल संघर्ष में वहां पर लाठी खाते हुए, वहां वकालत करते हुए, वहां जेल की यात्रा करते हुए आज नई पीढ़ी को बताया जाएगा कि दक्षिण आफ्रीका में गांधी जी ने 21 साल बिताए । यहां बैठे हुए बहुत से लोगों को भरोसा नहीं होगा कि 21 साल का वह प्रमुख समय जब बैरिस्टर बनकर उन्होंने शुरूआत में वकालत की, वह पूरा अमूल्य क्षण उन्होंने दक्षिण आफ्रीका की धरती पर संघर्ष करते हुए बिताया, लाठी खाते हुए बिताया और इस आन्दोलन में 1983 से लेकर 1914 तक वहां के नागरिकों के अधिकार के लिए लगातार संघर्षरत् रहे । 1915 में गांधी जी से आग्रह किया गया कि अब आपकी दक्षिण आफ्रीका की लड़ाई बहुत हो गई है, अब आप हिन्दुस्तान आ जायें और उनके राजनीतिक गुरू गोपालकृष्ण गोखले जी दक्षिण अफ्रीका गये, गोपालकृष्ण गोखले ने राजनीतिक दृष्टि से गांधी जी के उन यात्रा में प्रमुख भूमिका निभाई । अध्यक्ष महोदय, जब वे दक्षिण अफ्रीका में आंदोलन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कर रहे थे तो उस आंदोलन को दिशा देने के लिए गोपालकृष्ण गोखले की ही भूमिका थी, उनकी उपस्थिति हुई, उन्होंने उनको कहा कि अब दक्षिण अफ्रीका की लड़ाई का एक रास्ता तय हो चुका है, अब आपको हिन्दुस्तान आना चाहिये और हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के खिलाफ लोगों को इकटठा करना चाहिये । मुझे लगता है कि गांधी जी को यात्रा का एक पड़ाव जो करीब-करीब 21 साल चला, वहां से गांधी जी तपकर निकले, दक्षिण अफ्रीका जहां हीरे के खदान है, जहां भारत के गिरमिटिया मजदूर की भूमिका में हीरे को तोड़ते हैं तो प्रताड़ित किया जाता है । उसी दक्षिण अफ्रीका के हीरे के खदान में एक हीरे का जन्म होता है, जिसे हम महात्मा गांधी कहते हैं । वही उनकी लड़ाई का एक हिस्सा होता है । शस्त्र का हिस्सा होता है । गांधी जी के छत्तीसगढ़ की यात्रा के संदर्भ में आ जाता हूँ । हमारे बहुत सारे सम्माननीय सदस्यों ने बताया, 1920 दिसम्बर में आये, फिर 1933 में आये, दो बार इनका प्रवास हुआ । जिस दौर में गांधी जी छत्तीसगढ़ के लिए आये, आजादी का वह दौर था । आजादी की जो लड़ाई थी और वातावरण देश में बन चुका था । उस समय पंडित रविशंकर शुक्ला, प्यारेलाल सिंह, सेठ शिवदास डागा, यतियतनलाल, खूबचंद बघेल, वामन बलिराम लाखे, जमुना लाल चोपड़ा, डॉ.राधा बाई, मौलाना अब्दुल रऊफ, नारायण राम मेघावाले, कांति कुमार, पंडित सुंदरलाल शर्मा, बैरिस्टर छेदीलाल, वी.राघवेन्द्र राव, ऐसे सैकड़ों नाम है, जो उस दौर में छत्तीसगढ़ में रहकर अंग्रेजों के खिलाफ अपने संघर्ष को जारी रखने के लिए अपनी लड़ाई को अपने-अपने स्तर पर लड़ने का काम कर रहे थे । निश्चित रूप से मैं यह कहना चाहूंगा कि वह दौर जो वर्ष 2015 में गांधी जी ने हिन्दुस्तान आने के लिए निर्णय लिया, वह दौर था, जब देश की राजनीति में बाल गंगाधर तिलक सर्वमान्य नेता के रूप में स्थापित हो चुके थे । दुर्भाग्य से 1 अगस्त 1920 को तिलक साहब का निधन हो गया और वर्ष 1920 के बाद, तिलक जी के निधन होने के बाद, इस देश की राजनीति का पूरा का पूरा, राजनीतिक, सामाजिक, वैचारिक सोच की जवाबदारी, आंदोलन की जवाबदारी महात्मागांधी के कंधे में आ गयी । इस बीच छत्तीसगढ़ के धमतरी में, कंडेल में, किसानों का आंदोलन छोटेलाल श्रीवास्तव के नेतृत्व में चल रहा था, जिसमें पंडित सुंदरलाल शर्मा, पंडित नारायण राव मेघावाले का समर्थन था । कंडेल में किसानों को पानी चोरी का आरोप लगाया गया, चार हजार रूपये उनको जुर्माना किया गया । आंदोलन चलता रहा, अंत में पंडित सुंदरलाल शर्मा और छोटे लाल श्रीवास्तव ने तय किया, इस आंदोलन को गांधी जी को सौंप दिया जाये । पंडित सुंदरलाल शर्मा 2 दिसम्बर को कलकत्ता गये । 20 दिसम्बर को गांधी जी छत्तीसगढ़ प्रवास पर आते हैं, गांधी जी को बैरिस्टर ठक्कर के बंगले में ठहराया जाता है । उस समय खिलाफत आंदोलन के प्रमुख नेता शौकत अली, मोहम्मद अली, अली बंधुओं की माता के साथ गांधी जी आते हैं । 21 दिसम्बर 1920 को आजाद चौक स्थित बाल समाज वाचनालय के सामने धमतरी रवाना होते हैं । वहां जाकर धमतरी में और धमतरी से लौटने के बाद गांधी चौक में गांधी जी की सभा होती है और

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गांधी जी के साथ जुड़े हुये लोग इस विषय के साथ जुड़ते हैं और पूरा छत्तीसगढ़ इस आंदोलन से जुड़ता है। मुझे इस बात की खुशी है कि कल से जो मैं चर्चा देख रहा हूँ, मुझे लगता है कि जब इतना बड़ा सत्र का समय आपने दे दिया, छत्तीसगढ़ के विधान सभा की अनूठी परम्परा आपने डाल दिया, इसमें पाजिटिव उपयोग क्या हो सकता है । निगेटिविटी जिसके दिल में भरा रहता है, वह निगेटिव ही बोलता है । जब आपने एक वातावरण का निर्माण कर दिया कि पाजिटिव वातावरण यहां से बने, पाजिटिव संकेत पूरे देश में जाये, प्रदेश में जाये, वहां गांधी की चर्चा होनी चाहिये कि दूसरे व्यक्ति की चर्चा होनी चाहिये, यही फर्क है, मानसिकता और सोच का यही बारिक फर्क है, जिसको गांधी जी ने कहा था, भईया यह छोड़ दो तो सब कुछ ठीक हो जायेगा । आदमी यदि इन बातों से दूर रहकर देश हित में, प्रदेश हित में बात करता है, निश्चित रूप से इस विधान सभा का हम बेहतर उपयोग कर सकते हैं और करना भी चाहिये । अध्यक्ष महोदय, पूरे देशव्यापी अभियान चल रहा है । हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूरे एक साल के लिए उन्होंने बहुत पहले से इस बात की तैयारी कर ली थी कि हम गांधी जयंती को गांवों में जाकर, लोगों के बीच पदयात्रा करके, उनके साथ बैठक करके, उनके साथ प्रभात फेरी निकालकर, उनके साथ रामधुनी करके खादी का ज्यादा से ज्यादा प्रचार कैसे हो सकता है अलग-अलग माध्यमों से 3 लाख गांवों में जाने का लक्ष्य दिया है और ये लक्ष्य लोकसभा के सांसद, विधायक से लेकर सभी लोग इसमें सम्मिलित होंगे और इसमें स्वच्छता अभियान, खादी और गांधी के आदर्शों पर हम चर्चा करते रहेंगे। गांधी जी पर चर्चा हो रही थी तो मुझे लग रहा था कि इस अवसर का लाभ उठाया जायेगा और इस अवसर का लाभ उठाते हुए कुछ ऐसी योजनाएं छत्तीसगढ़ में आयेंगी जिससे 150 वें गांधी जी के जन्मदिन को आने वाले 150 साल हम याद कर सकते हैं। यह अवसर हमको मिला था, जिस अवसर को हम चूक गये। इतिहास में अपना नाम दर्ज कराने के लिए उस अवसर का उपयोग करने का यह दो दिन का विशेष सत्र बहुत बड़ा अवसर था जो निश्चित रूप से आपने कृपा करके किया मगर उसमें सरकार बड़े- बड़े पेपरों में फोटो छपा रही है, टी.वी. में एड चल रहे हैं, नई-नई योजनाओं के बारे में जानकारी आ रही है कि आज गांधी जयंती पर पांच बड़ी योजनाएं प्रारंभ की जायेंगी। मुझे लगा कि कुछ नई योजना आ रही है, कुछ नये कार्यक्रम आ रहे हैं, कुछ योजनाओं की शुरूआत हो रही है। जब मैं इन योजनाओं के बारे में पढ़ने लगा तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि मुख्यमंत्री सुपोषण योजना छत्तीसगढ़ में पांच वर्ष से कम आयु के 0 से 5 उम्र के बच्चे जो कुपोषित हैं और 15 से 49 वर्ष आयु के 41 प्रतिशत महिलाओं को कुपोषण से मुक्त करने के लिए महिला स्व सहायता समूह के माध्यम से पौष्टिक आहार दिया जायेगा। मेरे हाथ में यह छः साल पुराना नोटीफिकेशन है जो सरकार के स्वास्थ्य विभाग ने जारी किया था, उस समय हम लोगों ने यह तय किया था कि शून्य से 3 वर्ष उम्र के बच्चों के लिए हमने कहा था कि उनके लिए फुलवारी योजना प्रारंभ की जाए। आंगनबाड़ी योजना 5 साल से ज्यादा उम्र के बच्चों के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लिए है। क्योंकि पहले 3 वर्ष से 5 वर्ष तक के बच्चों के लिए योजना थी शून्य से 3 वर्ष के बच्चों के लिए योजना नही थी, इसलिए फुलवारी योजना में उन बच्चों को जो कुपोषित थे उन बच्चों के लिए योजना बनाई गई और छत्तीसगढ़ की इस फुलवारी योजना को इस देश के प्रधानमंत्री जी ने पुरस्कृत किया है। (मेजों की थपथपाहट) ये फुलवारी योजना उस समय की है जो कि इसका विस्तार करने की योजना है। इसके लिए फंड कि यह फंक्शन कैसे होगा। इसके लिए 600 करोड़ रूपये की अतिरिक्त राशि, यदि इस योजना को व्यापकता देना चाहते हैं, जूदेव जी अभी बैठे नहीं है, उनके ही सरगुजा के 600 आंगनबाड़ियों में अतिरिक्त शून्य से तीन वर्ष के बच्चों के लिए इस योजना की शुरूआत हुई। इसी प्रकार महिलाओं को गर्म पका हुआ खाना देने की योजना पहले से चल रही है। आप इसका किस रूप में विस्तार कर रहे हैं? पुरानी योजना को नया लेबल लगाकर नये तरीके से स्थापित करके कम से कम गांधी जयंति में तो ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए। कोई नई योजना शुरू होती तो बहुत अच्छा था।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार प्रदेश के आदिवासी वनांचल क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए मुख्यमंत्री हाट-बाजार क्लीनिक योजना है। अध्यक्ष महोदय, डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी जी जब स्वास्थ्य मंत्री थे तो हमने बस्तर में हाट-बाजार क्लीनिक की योजना उस समय से शुरू की थी। उस समय साप्ताहिक बाजारों में, हाट-बाजारों में डॉक्टर जाते थे और उनकी टीम जाती थी और वहां पर इलाज होता था और ये हाट बाजार योजना लगातार इस प्रदेश में चल रही है। बीच में 9 महीने से बंद हो गई, अब फिर से नया शुरू करने का प्रयोग हो रहा है। यानी हाट-बाजार योजना छत्तीसगढ़ के लिए नई नहीं है इसके लिए यदि आपने कोई नई योजना बनाई है, आप नई गाड़ियां ले रहे हैं, पूरे छत्तीसगढ़ में लागू करना चाहते हैं, बस्तर, सरगुजा, सभी मैदानी इलाकों में आपको कितनी गाड़ियां लगेंगी, कितने डॉक्टर लगेंगे, कितने लोग लगेंगे और उसके लिए बजट में क्या प्रावधान है, कुपोषण के लिए क्या प्रावधान है?

संस्कृति मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. साहब इसमें आपको खुश होना चाहिए कि कम से कम योजना संचालित हो रही है, लोगों को उसका लाभ मिल रहा है।

डॉ. रमन सिंह :- मैं थोड़ी बोल रहा हूं, मैं तो यह बोल रहा हूं कि ऑनगोईंग प्रोजेक्ट को नये रेपर में लगाने की जरूरत नहीं है।

श्री देवेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी कह रहे थे कि पॉजिटिव बातें करनी है। मुझे यह नहीं समझ में आ रहा है कि उनकी तरफ से पॉजिटिव बातें हो रही है या निगेटिव बातें आ रही हैं? अगर उस पर कोई विचार है तो एडऑन कर सकते हैं, केवल क्रिटिसाईज न करें।

डॉ. रमन सिंह :- मैं इनकी बात को ज्यादा सुनता भी नहीं हूं, सुनना भी नहीं चाहिए, अध्यक्ष महोदय, आपको भी नहीं सुनना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, तीसरी योजना स्लम के बारे में है। मुख्यमंत्री

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रम स्वास्थ्य योजना, इस योजना को छत्तीसगढ़ के बिलासपुर, रायपुर से लेकर बाकी बड़े शहरों में श्रम योजना में हेल्थ को बेहतर करने के लिए योजना और योजना की प्रारंभ हुई। मितानीन प्रेरक इनकी नियुक्ति हुई। वह शहरी मिशन के तहत हुआ, बाद में एन.एच.एम. (नेशलन हेल्थ मिशन) में जोड़ दिया गया और उन क्षेत्रों में मितानीन नहीं थे तो मितानीन की नियुक्ति की गई। प्रेरक की नियुक्ति की गई, चिकित्सा की नियुक्ति की गई, नर्स की नियुक्ति की गई और यह शहरी क्षेत्र में जो इसके पीछे रिजन यह था कि यदि बस्तर में आई.एम.आर. एम.एम.आर सुधर रहा है सरगुजा में आई.एम.आर. एम.एम.आर सुधर रहा है तो हमने कैल्कुलेट किया था कि रायपुर में, दुर्ग में क्यों नहीं सुधर रहा है ? यहां मेडिकल कॉलेज है, यहां बड़े-बड़े हास्पिटल हैं, उसके बाद भी क्या दिक्कत है, यहां पर सुविधाएं मिलने के बाद भी, तो बाद में लगा कि स्लम को यदि फोकस नहीं किया जायेगा तो इन आंकड़ों को आप कम नहीं कर सकते। इसलिए इस योजना को शुरू किया गया और यह योजना छत्तीसगढ़ में बहुत सफलतापूर्वक चली।

अध्यक्ष महोदय, मैं इसमें दूसरा आग्रह करता हूं। गांधी जी को यदि हम सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो छत्तीसगढ़ के उन हजारों परिवार जो कुटीर उद्योग करते हैं, जिस इलाके से आप आते हैं, जहां बुनकर रहते हैं, जहां दिन का उनका 42 हजार परिवार बुनकर है, जिनके लिए बुनकरी का कोई काम नहीं बचा है, इस नौ महीने के अंदर 42 हजार लोग बेराजगार हो चुके हैं, उनको न धागा मिल रहा है, न उनसे कपड़ा लिया जा रहा है, न उनको सिलाई का काम दिया जा रहा है। 42 हजार परिवार में सिर्फ बुनकर की स्थिति नहीं है, उससे जुड़े हुए लोग हैं। यदि आपको योजना शुरू ही करना था तो उनको जो हम योजना चला रहे थे, उनको धागा देते थे, डेढ़ सौ करोड़ का कपड़ा सील के देते थे, उसके बाद स्व सहायता समूह के द्वारा उसको सीला के बच्चों को ड्रेस में देते थे। आप कम से कम गांधी जयंती में यह तो तय कर देते। छत्तीसगढ़ में....।

संस्कृति मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- डॉ. साहब, अभी बायर सेलर यहां कार्यक्रम हुआ था, उसमें इतने आर्डर मिल गये हैं कि अभी यहां के बुनकर उसको पूरा नहीं कर पायेंगे। उनको इतना ज्यादा आर्डर मिल गया। छत्तीसगढ़ के बुनकर को अभी इतना पर्याप्त काम मिल गया है।

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में कम से कम हम इस पवित्र विधानसभा में ले सकते थे, इस पवित्र विधानसभा में ले सकते थे कि हमारे यहां के बुनकरों को आने वाले पांच साल के लिए पचास हजार परिवार को रोजगार की गारंटी हम देते हैं और उनके सीले कपड़ों का ही ड्रेस बनाया जायेगा। उनको धागा दिया जायेगा, उनके बैंक की व्यवस्था की जायेगी, मगर इसकी हालत यह हुई कि 42 हजार हाथ रूक गये। एक रूपये की खरीदी नहीं हुई जो डेढ़ सौ करोड़ रूपये कपड़े की खरीदी होती थी और इसके लिए छै: महीने का एडवांस प्लानिंग करना पड़ता है। उनको पहले धागा देना पड़ता है, फिर कपड़ा लेना पड़ता है। मगर इसके लिए न बजट है, न फण्ड है। आज यदि इसकी घोषणा गांधी जयंती में

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हो जाती या आज लेट लतीफ हो जाये, अभी हो जाये आज के समापन में कि उनके कपड़े ही सिलेंगे..।

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय डॉ. साहब, माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी, इस हिन्दुस्तान में कितने बेरोजगार हो गये हैं, दो हजार नौकरी मिलने वाली थी, पांच साल में कितना मिला और सूरत में बड़े-बड़े उद्योग बंद हो रहे हैं। साहब, यह भी तो बता दो।

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, यह एक बड़ी योजना का क्रियान्वयन किया जा सकता है ताकि छत्तीसगढ़ के लोगों को यदि गांधी जी का सपना पूरा करना है तो बुनकर के उद्योग में लगे हुए, हस्तशिल्प के काम में लगे हुए लोगों को रोजगार मिले और बुनकरी का काम पुनर्जीवित हो सके। दो सौ, डेढ़ सौ करोड़ का काम है, बहुत ज्यादा फण्ड की जरूरत नहीं होती। मगर यह अवसर है, इस अवसर का दूसरा अवसर, इन सारी घोषणाओं को करने की अपेक्षा यदि आज समवेत स्वर में, इसके बारे में आपने घोषणा पत्र में डाला है, आपने कहा है कि कांग्रेस की सरकार आती है तो हम इस पूरे छत्तीसगढ़ को शराब मुक्त करेंगे, गांधी जयंती, महाशय जी, गांधी 150 से बड़ा अवसर आने वाला सौ साल नहीं आने वाला है। ये समवेत स्वर में यदि आपने कोई संकल्प पारित किया है, उस संकल्प को मैं पढ़ रहा था, उस संकल्प से छत्तीसगढ़ के लोगों का क्या लेना देना, यह संकल्प यदि समवेत स्वर से पारित हो जाये। छत्तीसगढ़ का विधानसभा यह तय करता है कि आज से छत्तीसगढ़ में शराब बंद हो गया है तो हम मानेंगे कि कोई काम हो गया है। (मेजों की थपथपाहट) गांधी जी की 150वीं साल, जिसके नाम से हम राजनीति करते हैं, जिन गांधी का नाम ले लेकर 72 साल में 50 साल सत्ता में बैठे रहे, उस गांधी को श्रद्धांजलि देने का...।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- डॉ. साहब, 15 साल में बंद काबर नई करे, 15 साल में एकात ऐसे संकल्प पारित कर देतेव ।

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, श्रद्धांजलि देने का अवसर आया है कि इस अवसर को .....।

संस्कृति मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- डॉ. साहब, एक निवेदन था।

डॉ. रमन सिंह :- अध्यक्ष महोदय, इनको पूरा बोलवा लिया करो न।

श्री अमरजीत भगत :- डॉ. साहब, मेरा आपसे एक निवेदन था।

डॉ. रमन सिंह :- एक बार में पूरा बोल लिया करिये।

श्री अमरजीत भगत :- डॉ. साहब, मेरी आपसे बात करने की थोड़ी सी चेष्टा है। गांधी जी दृढ़ संकल्प वाले थे और वह जो चीज बोल देते थे, उसको पूरा करते थे। उनके पास एक महिला अपने बच्चे को लेकर आयी कि ये बच्चा गुड़ बहुत खाता है। गांधी जी आप इसको बोलेंगे तो यह मान जाएगा। आप इसका गुड़ छुड़वा दीजिए तो उन्होंने एक सप्ताह बाद उसको बुलाया।

डॉ. रमन सिंह :- यह सब पढ़ लिये।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अमरजीत भगत :- एक सप्ताह बाद, जब फिर वह बच्चे को लेकर गई तो उन्होंने कहा कि बेटा, आप गुड़ खाना छोड़ दीजिए। यह दांत खराब करेगा। इस पर उसकी मां बोली कि गांधी जी, जब मैं एक सप्ताह पहले इसको लेकर आयी थी, आप उसी दिन यह बात बोल सकते थे। उन्होंने कहा कि मैं उस समय स्वयं गुड़ खाता था इसलिए इसको मना नहीं कर सकता था।

श्री शिवरतन शर्मा :- अमरजीत जी, यही बात आपको सीखने की जरूरत है। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- एक मिनट आप लोग सुनिये। मुझे बोलने तो दीजिए।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- पूरा कांग्रेस दल इसी बात का इंतजार कर रहा है क्या? कि हम दारू छोड़ेंगे तभी इस पर पाबंदी लगायेंगे। ऐसा इंतजार कर रहा है क्या ?

श्री अमरजीत भगत :- आप मेरी लाईन तो पूरी होने दीजिए। जो शराबबंदी पर बात करने वाले हैं उनसे सबसे पहले आग्रह है कि उन लोग स्वयं पहले शराब छोड़े और घोषणा करे कि हम शराब नहीं पियेंगे। (व्यवधान)

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- इसी बात का पूरा कांग्रेस दल इंतजार कर रहा है क्या ? कि कांग्रेस छोड़गी तभी इसका पालन करेगी। बहुत अच्छी बात, संकल्प है।

अध्यक्ष महोदय :- डॉ. साहब चलिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- अमरजीत जी, यह छोड़ने की घोषणा करने के बजाए, मैं इससे एक कदम आगे बढ़कर कहा था कि यहां पीकर आना बंद करें।

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- आपकी बातों में कोई वजन नहीं है। आपने कहा था कि कर्जा माफी होगा तो इस्तीफा दूंगा। आप इस्तीफा कब देंगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- यहां हाऊस में भी लोग पीकर आये हैं। इसको बंद कर दें। कम से कम इसकी घोषणा कर दें। आप क्यों खड़े होते हैं ? आपको थोड़ी कह रहा हूँ।

श्री कवासी लखमा :- नहीं। मैं आपको नहीं कह रहा हूँ। आप इस्तीफा देने वाले थे? यह पूरा मीडिया में आया था कि किसानों की कर्ज माफी होगी तो मैं इस्तीफा दूंगा, आप इस्तीफा कब देंगे ?

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत सारे विषय आ गये। हम सब यहां पूज्य बापूजी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उपस्थित हैं, अंत में इतना ही कहूंगा कि ''जग में जिया है कोई तो बापू तु ही जिया।

तुने वतन की राह में सबकुछ लूटा दिया
मांगा न कोई तख्त न कोई ताज लिया।
अमृत दिया तो ठीक, मगर खुद जहर पिया।
जिस दिन तेरी चिता जली, रोया था महाकाल।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

साबरमति के संत तुने कर दिया कमाल।।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

अध्यक्ष महोदय :- आपका बहुत-बहुत धन्यवाद्। माननीय चौबे जी।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो आपके प्रति धन्यवाद् और आभार। पूरे देश में हमारा ये विधान सभा गांधी जी की 150 वीं जयंती और वर्षगांठ मनाने के लिए, आपने 2 दिवसीय सत्र का आयोजन किया। माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय सदन के नेता दोनों के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि आज बहुत सारी बातों को सुनने, गांधी के आदर्शों पर अपने विचार व्यक्त करने, इसी बहाने गांधी साहित्य को पढने, उसके रास्ते पर चलने, यहां पर बहुत माननीय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किये। ये भी अच्छा लगा कि गांधी जी को बहुत सारे मुद्दों पर दोष देने वाले भी गांधी जी की आज प्रशंसा कर रहे हैं और आपके प्रति डॉ. साहब ने जैसे महंत बिसाहू दास जी को याद किया। मैं आपको भी कहना चाहता हूँ कि जब हमेशा सदन की शुरूआत होती है तो आप शुरूआत में कहते हैं कि शब्द संभाले बोलिए, वही से आज सबकी शुरूआत हो रही है। कल भी दिनभर चर्चा हुई। गांधी जी की चर्चा हुई तो थोड़ी सी विरोधाभाषी विचारों की भी चर्चा हुई, उसमें किसी को बहुत ज्यादा टिप्पणी नहीं करना चाहिए। लेकिन इस देश को गांधी को जानना आवश्यक है। इसलिए भी जरूरी है कि थोड़े दिनों बाद आने वाली पीढियां गांधी जी के रास्ते को भूल जाएंगी। यह जरूरी इसलिए भी है क्योंकि उस पीढ़ी को याद दिलाना है। सारे सदस्यों ने महात्मा गांधी जी के शरीर, शिक्षा, जन्म, रहन-सहन, आचार-विचार के बारे में बात कही। लेकिन आज का अवसर तो उनको हम सबको नमन, श्रद्धानवत करने का अवसर है। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर है। इस अवसर पर सभी माननीय सदस्यों को मैं बधाई और धन्यवाद दूंगा। विचारों में कुछ इधर से, कुछ उधर से बातें आ जाती हैं, लेकिन सम्यक रूप से इस बात में ये सदन सहमत तो हुआ कि आज भी गांधी जी प्रासंगिक हैं, आज भी गांधी इस देश की जरूरत है और आज भी गांधी के विचारों में चलने की हम सबको आवश्यकता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, बापू की काया के बारे में चर्चा होती है। कृषकाय काया। हम लोग देख रहे हैं कि अपने सदन में भी बापू की जो तस्वीर लगी है, उस काया को परिभाषित करती है। लेकिन उसके बारे में मैं अखबार पढ़ रहा था, उसमें उनके बारे में कहा गया है। ''वह व्यक्ति अंतर्राष्ट्रीय इतिहास का एक फिनामिना है। उसको समझने की कोशिश करना, धुंए को अपनी बाहों में भरना है। विराट देहाती, औसत हिन्दुस्तानी की खोपड़ी, चमकती, दमकती हुई, शरारतपूर्ण और करूणामय उनकी आखें, इकहरी देह के बावजूद सिंह शावक की बौद्धिक क्षमता, चपलता, बेहद पुराने फैशन की घड़ी, एक सदी पुराने फैशन का चश्मे का फ्रेम, गडरियेश्त की सी लाठी, सड़क किनारे हाथों सिली हुई

असंशोधित/पुनरावलोकन के लिए नहीं

सैण्डल, चप्पलें, अधनंगा बदन, भारत के सबसे महान योद्धा के कंटूर हैं। उन्हें सात समंदर पार भी सूरज अस्त नहीं होने वाले ब्रिटिश साम्राज्यवाद के हुक्मरानों ने कम आंका। मुझे गांधी कभी बुढे, लिजलिजे या तरसते नहीं लगे। दहकते प्रौढ़, अंगारों के ऊपर पपड़ाई राड़ जैसा उनका पुरूष व्यक्तित्व बार-बार लोगों को प्रश्नवाचक चिन्ह की कतार में खड़ा करता रहा। प्रचलित समझ के विपरित मैंने गांधी को ऋषि, संत, मुनि या अवतार जैसा नहीं देखकर करोड़ों भारतीय सैनिकों के लडाकू सेनापति के रूप में देखा।'' माननीय अध्यक्ष महोदय, इन चंद लाईनों ने गांधी के विराट व्यक्तित्व को परिभाषित कर दिया।

माननीय अध्यक्ष जी, जब गांधी जी के बारे में चर्चा करते हैं। उनका जन्म पोरबंदर में हुआ, किस तरीके से बैरिस्टरी करने गये, किस प्रकार से आजादी का आंदोलन शुरू हुआ, साउथ अफ्रीका से उसकी शुरूआत हुई। लेकिन इन सारी बातों के अतिरिक्त विश्व में उनको माना जाता है। वह वैचारिक क्रांति के दूत थे। वह जनक्रांति के महानायक थे। वह सामाजिक चेतना के प्रणेता थे। सत्य और अहिंसा उनके अस्त्र थे। हर कसौटी पर खुद को कसना, परखना उनका अस्त्र हुआ करता था। हम सबने उनको देवत्व प्राप्त महामानव की संज्ञा दिया है। अभी मैं कुछ अखबारों में पढ़ रहा था। विश्व के लगभग 100 से अधिक देशों में गांधी जी की स्टेच्यू है। ऐसा कौन मानव हो सकता है, संसार में 100 से अधिक देशों में तो परमात्मा के भी कहीं कहीं तस्वीरे नहीं लगी होंगी, लेकिन गांधी जी इतने महामानव थे। माननीय अध्यक्ष महोदय, उनकी अहिंसात्मक क्रांति के रास्ते पर चल करके लगभग 3 दर्जन से अधिक देशों ने आजादी प्राप्त किया। कल हमारे विद्वान सदस्य आदरणीय अजय चन्द्राकर जी चर्चा कर रहे थे, वह कुछ नाम गिना रहे थे, निश्चित रूप से हम सबको प्रशंसा करनी चाहिए। आपने मार्टिन लूथर किंग का नाम लिया, नेल्सन मंडेला, आंग सांग सू की, हो ची मिन्ह, फिदेल कास्त्रो, वैज्ञानिक आइन्सटीन, पल एशबर्ग, चार्ली चैपलिन, दलाईलामा से लेकर बराक ओबामा तक, कौन ऐसा मानव होगा जिसको सारे विश्व में इस प्रकार पूजा जाता हो, जिसको सारे संसार में उनके रास्ते, सत्य, अहिंसा, प्रेम, सदाचार के कारण जाना जाता है, इसीलिए रविन्द्रनाथ टैगोर जी ने उनको 'महात्मा' की उपाधि दी थी। संसार में ऐसा कोई मानव पैदा नहीं हुआ । छत्तीसगढ़ की धरती पर उनके आगमन की भी कल बहुत चर्चा हुई। आज डॉ. साहब अपनी बात में कह रहे थे, सन् 1920, 1930, 1933 कल चर्चा हो रही थी । श्री अमितेष जी ने खड़े होकर बताया कि बापू का चबूतरा उनके बूढ़ापारा के निवास में है । हम सब लोगों को सौभाग्य मिला कि इस धरती को कि बापू का यहां आगमन हुआ, हिंदुस्तान की आजादी के लिये जब सारे देश में वे शंखनाद करते हुए घूम रहे थे । जैसा अभी डॉ. साहब कह रहे थे न कि उनसे ज्यादा किसी ने पदयात्रा नहीं की, इस देश को भारत दर्शन के रूप में चूंकि उनसे ज्यादा यात्राएं किसी ने नहीं की यह छत्तीसगढ़ की धरती है । यह बापू के आदर्शों को आत्मसात करने वाली धरती है । जब बापू छत्तीसगढ़ में आये तो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उन्होंने जब सुना कि यह वह धरती है जहां आकर उनको जानकारी हुई कि परमपूज्य बाबा गुरूघासीदास जी ने सत्य और अहिंसा का अलख जगाया हुआ है । बापू को यह जानकर ताज्जुब भी हुआ ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पंडित सुंदरलाल शर्मा ने अश्पृश्यता दूर करने का जो यहां बीड़ा उठाया था । बापू को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने पंडित सुंदरलाल शर्मा जी के प्रति कहा कि वे उनके गुरू हैं, उनके आदर्शों पर चलना है, उनसे सीख लेनी है और यह शहीद वीर नारायण की धरती है जहां अकाल और भूखमरी से हमारे किसान और मजदूर परेशान हो रहे थे उन्होंने मौत को गले लगाया लेकिन अंग्रेजों के सामने उन्होंने जन आंदोलन बनाया और गांधी जी का अगर सत्याग्रह हुआ करता था। गांधी का आंदोलन, गांधी का असहयोग तो यह तो उसी की परिणति थी, यह धरती गांधी के आदर्शों पर चलने वाली धरती आखिर क्या था तंडेल का सत्याग्रह, किसानों का आंदोलन ? बापू को आने की जरूरत पड़ी । वे पूरे हिंदुस्तान में जहां भी जरूरत होती है, कहीं किसानों की, कहीं मजदूरों की आखिर दांडी मार्च क्या था, आखिर नमक सत्याग्रह क्या था, चौरा-चौरी का आंदोलन आखिर क्या था, यह सारे चंपारण का सत्याग्रह क्या था ? कहीं मजदूरों का आंदोलन था, कहीं किसानों का आंदोलन था, कहीं गरीबों का आंदोलन था । इस धरती पर जो शोषित और पीड़ित लोग थे, अंग्रेजों के खिलाफ जहां भी खड़े होते थे, बापू वहां स्वयं विद्यमान होते थे । संघर्षों को उन्होंने अपने आप शामिल होकर अमलीजामा पहनाया । गरीबों के लिये, मजदूरों के लिये, किसानों के लिये स्वयं आंदोलन में कूद पड़ते, नेतृत्व करते और न्याय दिलाते । जनआंदोलनों को बापू ने आजादी का आंदोलन बनाया, हम लोग इसीलिये देश में गांधी को महात्मा कहते हैं और उन्हें पूजा करते हैं । गांधी जी बैरिस्टर थे, यहां से पढ़ने गये थे, बहुत बड़े घराने से थे । साउथ अफ्रीका से जो स्वाभिमान की चेतना से आजादी की कल्पना गांधी जी के मन में पैठ किया, संघर्षों की शुरूआत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, भारतीयों का संगठन, दादा भाई नौरोजी, गोखले, बालगंगाधर तिलक के मार्गदर्शन और उसके बाद बालगंगाधर तिलक जी का स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है । सन् 1915 के बाद जब बापू हिंदुस्तान आये, भारत आकर के सबसे पहला काम बालगंगाधर तिलक के सुझाव पर उन्होंने भारत दर्शन के लिये सारे हिंदुस्तान का भ्रमण किया, विदेशी वस्तुओं का परित्याग किया, वस्त्रों का स्वयं परित्याग किया, बापू छोटी धोती पहनकरके पूरे हिंदुस्तान के आंदोलनों में नेतृत्व करने लगे और देश की आत्मा बन गये उसके बाद जनता के बीच में वे महात्मा बन गये ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बापू का यह जो सफर था वह हिंदुस्तान की आजादी का सबसे बड़ा सफर था । माननीय अध्यक्ष महोदय, आंदोलन सब करते थे लेकिन बापू के आंदोलनों में असहमति होती थी । कल हमने देखा एक नाटक का चरित्र-चित्रण बहुत सारी जानकारी तो हमको कल के नाटक के बाद ही प्राप्त हुई । असहमति, असहयोग, सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह, मौन उपवास, मौन उपवास भी बापू का

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कितना बड़ा अस्त्र हुआ करता था आजादी के आंदोलन में इसकी आप कल्पना नहीं कर सकते । अनशन और उसके बाद स्व-अनुशासन । यही आंदोलन की ताकत हुआ करती थी, बापू का यही अस्त्र हुआ करता था और इसी अस्त्र से उन्होंने हिंदुस्तान की आजादी की पूरी लड़ाई लड़ी । किसी को विश्वास नहीं लेकिन बापू ने यह कर दिखाया । कल, आंइसटीन के बारे में आप कह रहे थे कि आने वाली नस्लें शायद इस बात पर विश्वास नहीं करेंगी कि हाड़-मांस का यह व्यक्ति भी इस प्रकार धरती में हुआ करता था । अध्यक्ष महोदय, यह सारी बातें बापू को महान् बनाती थीं, बापू इस देश के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक चेतना के भी प्रतीक थे । बापू, पता नहीं कितना सोच सकते थे, कितना कर सकते थे, कितना लिख सकते थे, गरीब से गरीब का उत्थान, गांव के विकास के बारे में उनकी कल्पना जो होती थी, मैं ग्रामीण विकास के विषय में उनकी बातों को कहना चाहता हूं । अध्यक्ष जी, कल ही आपने विधान सभा में ये सारी किताबें वितरित करवाई हैं । गांधी जी ने राजनीति में 1915 में प्रवेश करने के बाद, गांव के प्रति नया दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते आ रहे थे । जमीन पर बेहद दबाव और सहायक उद्योगों के अभाव के कारण गांवों में कभी तो 6 से बारहों महीनों तक बेकारी बनी रहती थी, किसानों की यह घोर दरिद्रता गांधी जी एक क्षण भी चैन नहीं लेने देती थी । चरखे से किसानों को तात्कालिक राहत मिल जाती थी, इसलिए गांधी जी इतना समर्थन और प्रचार करते थे । आशय यह था कि गांव की गरीबी, गांव के बेकारी के बारे में हमेशा चिंतित रहते थे । बापू का चरखे का आशय स्वावलम्बन से जुड़ा हुआ था । गांव वालों को काम देने से जुड़ा हुआ था । अध्यक्ष महोदय, गांधी जी कहा करते थे कि हमारे गांव में जो उत्पाद है, गांव की जो लक्ष्मी है वह चारों दिशाओं में भाग खड़ी होती है, अगर हम उसको रोक सकें तो गांव सुखी होंगे । यह देहाती लक्ष्मी कौन-कौन से रास्तों से भागती है । पहला रास्ता- बाजार, दूसरा रास्ता-शादी ब्याह, तीसरा-साहूकार और चौथा-सरकार और पांचवा-व्यसन । इन सारी चीजों से उनकी लड़ाई होती थी । बाजार का आशय यह था कि गांधी जी गांववासियों को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे । हमारे गांवों में सब उत्पाद होते हैं, लेकिन बाजार जाकर किसान लुट जाता है । खर्चीली शादी-ब्याह का भी वे विरोध करते थे । तीसरा -साहूकार, जिस जमाने में गांधी जी आजादी के आंदोलन में भाग लेते थे उस समय कर्जे का चलन पूरे हिंदुस्तान में हुआ करता था। अध्यक्ष महोदय, बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद लोगों को थोड़ी राहत मिली । चौथा- सरकार, ये जो टैक्सेशन है, यहा जो विवाद है, ये जो पुलिस थाने हैं, आपसी झगड़े हैं, जिस प्रकार उनको दंड की प्रवृत्ति होती है । पांचवा - व्यसन के बारे में ।

श्री अजय चन्द्राकर :- व्यसन को थोड़ा परिभाषित कर दीजिए ना । व्यसन पर बोल दीजिए, व्यसन माने क्या होता है ।

श्री भूपेश बघेल :- आपसे ज्यादा कौन जानता है (हंसी)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आप विचलित मत होइए चौबे जी, अपनी बात कहते रहिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यसन के बारे में अभी बताता हूं। माननीय अजय जी ने व्यसन के बारे में कहा । शराबबंदी के बारे में सभी सदस्यों ने अपनी बात कही । मैं अभी भी कहता हूं कि सरकार अपनी बातों पर अडिग है, हमने कहा है कि प्रदेश में शराबबंदी लागू करेंगे । हमने कहा है और घोषणा पत्र में उल्लेख किया है लेकिन इस बात से आपको सोचना होगा । अध्यक्ष महोदय, हम गुजरात जैसी शराबबंदी नहीं चाहते । छत्तीसगढ़ से जयादा शराब आज भी गुजरात में बिकती है, हम बिहार जैसी शराबबंदी भी नहीं चाहते, बिहार में हर साल लगभग 500 से 1000 मौतें अवैध और नकली शराब से होती हैं । इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी ने एक कमेटी बनाई हुई है। आखिर इस बारे में, इसके विकल्प के बारे में आने वाले समय में हम शराबबंदी अगर लागू करें तो किस तरीके से कर सकते हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- शराबबंदी की कमेटी बनायी है। आपके घोषणा पत्र में भी है। यदि आपमें इतना आत्मविश्वास है तो कमेटी की समयावधि के बारे में बोल दीजिए कि कमेटी कितने दिन में रिपोर्ट देगी? बड़े ही आत्मविश्वास से आप अच्छी बात कह रहे हैं। मैं आपकी किसी बात का खंडन नहीं कर रहा हूं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हम तो आप लोगों को शामिल करना चाहते हैं। पिछले समय आप लोगों ने शराबबंदी के लिए एक कमेटी बनायी थी, उसमें तो पूरी तरह से दारू की दुकान बढ़ाने की सहमति दी थी, अनुशंसा की थी। हम ऐसी कमेटी नहीं बनाना चाहते।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी, वो नोटबंदी जैसी घलो नहीं करना चाहत हन।

श्री रविन्द्र चौबे :- सदन में आज अच्छी शुरूआत हुई है। हमारी कमेटी के बारे में अजय जी चिंतित हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- चिंतित नहीं हैं। (हंसी)

श्री रविन्द्र चौबे :- अभी आपने कहा न।

श्री अजय चन्द्राकर :- अवधि बता दीजिए कि आपकी कमेटी कितने दिन में आप जिस मॉडल में शराबबंदी करना चाहते हैं, उसकी रिपोर्ट सदन के पटल में साल भर में, डेढ़ साल में, चुनाव तक या 15 दिन पहले तक रख देंगे, ऐसी कुछ अवधि बता दीजिए। आप अच्छी बात कह रहे हैं। मैंने आपकी हर बात में कहीं नहीं टोका। आपने व्यसन को परिभाषित नहीं किया, तब यह बात आयी है।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मैं उसी में आ रहा था। बहुत अच्छा लगा कि माननीय प्रतिपक्ष के साथी ने कमेटी के बारे में चिंता व्यक्त की। माननीय मुख्यमंत्री जी ने जब कमेटी गठन किया तो

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उसमें स्पष्ट उल्लेख है और इस कमेटी के अध्यक्ष आदरणीय सत्यनारायण शर्मा जी ने आपसे नाम भी मांगे हैं। आप केवल सदन में राजनीति करने के लिए बात करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब सदन में राजनीति की शुरूआत हो रही है। अब आप राजनीति शुरू कर रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं, प्रश्न तो आपने किया।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं-नहीं। आपकी शराबबंदी की कमेटी आपका घोषणा पत्र है। आप हमसे क्यों नाम ले रहे हैं? आपके पास पर्याप्त संख्या बल है। आप बना लीजिए। किसी के ऊपर आप निर्भर क्यों हैं? आप कमेटी बना लीजिए और घोषित करिए। यदि हम नाम नहीं दे रहे हैं तो इसका यह मतलब नहीं है कि आपके पास आदमी नहीं है।

श्री बृहस्पत सिंह :- इसका मतलब आप सहयोग कर रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- अब असली राजनीति आपने शुरू किया।

श्री रामकुमार यादव :- हम लोग गांधीवादी हैं, सबको लेकर चलने वाले हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- संसदीय कार्य मंत्री जी, आप समिति की बात कर रहे हैं। समिति के लिए किसने नाम मांगा ? आप जरा उसका नाम बता दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, आगे चलिए विचलन हो रहा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष महोदय, यह बहस का विषय नहीं है।

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं-नहीं, मैंने आपसे नाम पूछा है। आपने समिति की बात की। मैंने नाम पूछा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं अभी बताता हूं। हमारी कमेटी के सभापति माननीय सत्यनारायण शर्मा जी ने आपसे नाम मांगा। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी भारतीय जनता पार्टी के आपके कोई अध्यक्ष जी होंगे..।

श्री धरमलाल कौशिक :- एक मिनट। आज माननीय सभी सदस्य बैठे हुए हैं। मुख्यमंत्री जी से लेकर के मंत्री भी बैठे हैं। उस कमेटी के संदर्भ में यही बात तो शिवरतन शर्मा जी पूछ रहे हैं कि आपसे किसने नाम मांगा ? किसने मांगा आप बता दीजिए। इसलिए मांगा कि आप बार-बार उसका उल्लेख कर रहे हैं, उसका यहां पर राजनीति कर रहे हैं। आप बताइए न उसे किसने मांगा।

अध्यक्ष महोदय :- मैं शराबबंदी की सभी बातों को विलोपित करता हूं। माननीय चौबे जी मैं शराबबंदी की सभी बातों को विलोपित करता हूं। आप व्यक्ति पर चर्चा करें।

श्री रविन्द्र चौबे :- विलोपित कर रहे हैं।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- ये राजनीति कर रहे हैं। जब नाम की बात आती है तो किसने मांगा? सभी बैठे हुए हैं। यहां पर बताइए।

श्री शिवरतन शर्मा :- गांधी जी नशे के खिलाफ थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपसे आग्रह है कि यहां पर कोई भी असंसदीय शब्द नहीं है। किसी भी तरह की असंसदीय बात नहीं कर रहे हैं। इसे विलोपित मत करिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह विलोपित करने का प्रश्न नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसमें कहीं भी अससंदीय नहीं है। कहीं कोई विषय से बाहर बात नहीं कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- जितना जरूरी है वह देख लेंगे। अनावश्यक जो बातें हैं, मैं उसे विलोपित कर रहा हूं।

श्री धरमलाल कौशिक :- मुख्यमंत्री से लेकर आबकारी मंत्री, सभापति व कमेटी के सभी सदस्य बैठे हुए हैं। इसलिए नाम मांगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- महात्मा गांधी जी नशे के खिलाफ थे। शराब बंद होना चाहिए और जब शराबबंदी पर चर्चा हुई तो उसे विलोपित करने की क्या आवश्यकता पड़ गई।

अध्यक्ष महोदय :- अनावश्यक जो बाते हो रही हैं, उसे विलोपित कर रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, हमारे दल ने तो उसके लिए घोषणा पत्र में रखा है।

अध्यक्ष महोदय :- आज के लिए समय नहीं है।

श्री शिवरतन शर्मा :- घोषणा पत्र में रखा है तो बंद करो न। फिर क्यों नाटक कर रहे हो।

श्री अमरजीत भगत :- सभी सदस्यों से यह आग्रह है कि पहले स्वयं शराब छोड़े।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, छोड़िए न।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, तीनों दलों से नाम मांगा गया है। नेता प्रतिपक्ष जी यदि पावती चाहते हैं तो इनकी पार्टी को दिया गया है। हमारे पास पावती है। हम दे देंगे। हम आपको तीनों दल की पावती दिखायेंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- मुझे पावती से मतलब नहीं है। मैं तो यहां पर पूछ रहा हूं कि किसने नाम मांगा?

अध्यक्ष महोदय :- समय खराब मत कीजिए।

श्री मोहम्मद अकबर :- हम आपको पावती दिखायेंगे। आपसे नाम मांगा गया है, सरकार की तरफ से।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरम लाल कौशिक :- किसने नाम मांगा ? मैं उस पावती पर नहीं जा रहा हूँ। मैं तो पूछ रहा हूँ कि किसने नाम मांगा ? आप यहां पर बताईये ?

श्री मोहम्मद अकबर :- हम आपको पावती दिखायेंगे। आपसे नाम मांगा गया है, सरकार की तरफ से।

अध्यक्ष महोदय :- डेढ़ घण्टे तक नहीं बचे हैं।

श्री मोम्मद अकबर :- हम आपको तीनों पार्टी की पावती दिखा देंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपने जो कमेटी बनाई है, वैधानिक रूप से, संवैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त है क्या ? सत्यनारायण जी को नाम मांगने का अधिकार किसने दिया ? आपके विभाग के मंत्री जी की तरफ से आना चाहिए था। आप सत्यनारायण की कमेटी बनाओ या अमरजीत जी की कमेटी बनाओ, ये नाम मांगने वाले कौन हैं ?

अध्यक्ष महोदय :- डेढ़ बजे सत्र समाप्त होने वाला है।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप नाम मांगिये न। विभाग की तरफ से नाम मांगिये न। विभाग का मंत्री नाम मांगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके घोषणा-पत्र में नहीं लिखा है कि हम पूछकर कमेटी बनाकर शराब बंदी करेंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- इस कमेटी की वैधानिकता क्या है, पहले आप यह बताओ?

अध्यक्ष महोदय :- आप दोनों समझदार हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- नाम देने के लिए कोई कमेटी बनी है, तो उसकी कोई वैधानिकता नहीं होती है।

श्री मोहम्मद अकबर :- माननीय अध्यक्ष जी, राज्य सरकार की तरफ से कमेटी बनी है। वैधानिक कमेटी है। सत्यनारायण शर्मा जी, उसके अध्यक्ष हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- उस कमेटी का गजट नोटिफिकेशन हुआ है ?

श्री मोहम्मद अकबर :- राज्य सरकार का आदेश है। राज्य सरकार का आदेश, आदेश नहीं है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं-नहीं, नोटिफिकेशन हुआ है ? आप वैधानिक बोल रहे हैं तो आप गजट नोटिफिकेशन दिखाईये। अगर वैधानिक है तो उसका गजट नोटिफिकेशन दिखाईये।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, आप घर में कोई कमेटी बना लो और उसके बाद वह आदेश करे, हम क्यों नाम देंगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आप कान्स्टीट्यूट किए हो, उसका गजट नोटिफिकेशन दिखाईये।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री मोहम्मद अकबर :- नाम देना, नहीं देना, आपका विशेषाधिकार है।

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं।

श्री मोहम्मद अकबर :- आप नाम दे, चाहे आप नाम न दें, लेकिन आपने यह आरोप लगाया कि किसने नाम मांगा। नाम मांगा गया, तीनों दलों की पावती हमारे पास है। यदि आप कहेंगे तो तीनों दलों की पावती आपको दिखाया जायेगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- नाम मांगना आपका विशेषाधिकार नहीं है। जब तक वह संवैधानिक रूप से नहीं हो जाता। आप नाम नहीं मांग सकते।

श्री अजय चन्द्राकर :- यदि कमेटी कान्स्टीट्यूट है, कब तक करेंगे, उसका गजट नोटिफिकेशन किया है क्या ? उसकी वैधानिकता क्या है ? ...(व्यवधान)

श्री मोहम्मद अकबर :- तीनों दलों से नाम मांगा गया है। जो आपने आरोप लगाया है, उसका जवाब है कि सब से नाम मांगा गया, सबकी पावती हमारे पास है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष जी, यह जो कमेटी बनी है, यह आपकी पार्टी की कमेटी है।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, दो सौ चूहे का खाकर बिल्ली हज को चली। 15 साल ये दारू बेचे हैं और हमको दिखा रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- कांग्रेस विधायक दल के एक नेता का कमेटी बना दिया गया। अब वह हमसे नाम पूछेंगे ? सरकार में उसकी वैधानिकता क्या है ? क्या वैधानिकता है ? कहीं है ? सरकार के गजट नोटिफिकेशन में हो, गवर्नमेंट के सर्कुलर में हो, आर्डर में हो।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत जी, चन्द्राकर जी। आप समय देख लीजिये, कितने बज गये हैं ? ..(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- सरकार ऐसे ही चल रही है। नरवा, गरूवा, घुरवा, बारी। ...(व्यवधान) मौखिक बोल दिया गया। ...(व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- चन्द्राकर जी, तकलीफ क्या हो रही है ? आप तो कुछ कर नहीं पाये।

अध्यक्ष महोदय :- मरकाम जी, आप बैठो। मरकाम जी, आप बैठिये।

श्री मोहन मरकाम :- उनको करने दीजिये न। 15 साल तो कुछ किए नहीं। 15 साल आपके विभाग में क्या चल रहा था, हमको पता है।

अध्यक्ष महोदय :- आप बैठ जाईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- उसकी चिंता मत करिये। अभी आपको पांच साल मौका है, चिंता मत करिये। चलिये, आप बताईये कि कब रिपोर्ट आयेगी ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री मोहन मरकाम :- हमारी सरकार कर रही है और आपकी केन्द्र सरकार उसकी तारीफ कर रही है।

अध्यक्ष महोदय :- मरकाम जी, आपके सामने घड़ी लगी है क्या ? अगर नहीं लगी है तो आजू-बाजू देखिये, 12 बजकर 17 मिनट हो गए हैं, डेढ़ बजे तक समाप्त करना है। अगर आप लोग इसी तरीके से बातों में समय जाया करना चाहते हैं, तो कर लीजिये।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मैं अपनी बात करना चाहता हूं। मैं उस टॉपिक में नहीं जा रहा हूँ। अध्यक्ष जी, कल विद्वान सदस्य अजय चन्द्राकर जी ने बापू से असहमति पर अपनी बात कही। एक नाम आया, बापू की छाती को जिसने छलनी किया, हिंसा की राजनीति में विश्वास करने वाले लोगों के खिलाफ बहुत सारे सदस्यों ने अपनी बात कही। तो कल विद्वान सदस्य नाम गिना रहे थे कि भगत सिंह जी से भी बापू की असहमति थी। सुभाष चन्द्र बोस से भी बापू की असहमति थी। कृपलानी जी से असहमति थी, आपने अम्बेडकर जी का भी नाम ले दिया। जिसने बापू की छाती को छलनी किया, आपने उसको भी कहा कि वैचारिक असहमति थी। आप हिंसा को समर्थन करते या नहीं करते, मैं इस बात को नहीं कहना चाहता। लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि आप गोडसे की हिंसा की असहमति, उनकी असहमति के बाद जो हिंसा हुई, आप उसको अम्बेडकर, कृपलानी और सुभाष, बापू की असहमति से जोड़ते हुए अपनी बात कह रहे थे, यह दुर्भाग्य है। यह आपकी वैचारिक दरिद्रता को प्रदर्शित करता है। आपकी सोच की गरीबी को प्रदर्शित करता है। वह असहमति नहीं हो सकती। इस देश में हिंसा को कोई स्वीकार नहीं करने वाला है। (सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट)

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, बृजमोहन जी कल भाषण में कह रहे थे कि कांग्रेसी रामलीला करा रहे हैं, राम मन्दिर जा रहे हैं, गौ माता की सेवा कर रहे हैं। किसने आपको हमें रामभक्त होने या नहीं होने सर्टिफिकेट देने का अधिकार दिया है ? (सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- चुनाव के समय जनेऊ तो आप ही दिखाये थे, गोत्र आप ही बताये थे। हमने तो पूछा नहीं था। हमने तो नहीं पूछा था कि कौन से गोत्र के हो, दिखाने की जरूरत है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- गोड़से मुर्दाबाद कहने की तो हिम्मत नहीं है और आज आप गोड़से वाला ड्रेस पहनकर आये हो । गोड़से ऐसे ही ड्रेस पहनते थे ।

श्री कुलदीप जुनेजा :- 3 दिन रामलीला है, आप सबको निमंत्रण हैं। आप लोग सब रामलीला में आना ।

श्री धर्मजीत सिंह :- (श्री अजय चन्द्राकर की ओर इशारा करते हुए) जब जान रहे हो कि गोड़से-गोड़से चल रहा है तो काहे को पहनकर आ गए भैया । (हंसी) सफेद-काला कुछ भी पहन लेते।

असंशोधित/अप्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बापू के राम और आपके राम में बहुत अंतर है । बापू के राम मर्यादा पुरूषोत्तम राम थे, वे शबरी के राम थे, वे निषाद राज केंवट के राम थे, वे छत्तीसगढ़, हिन्दुस्तान के गरीबों के हृदय में बसने वाले राम थे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- चौबे जी, दूसरे राम कौन से थे, वह बता दीजिए।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं बता देता हूं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- राम की परिभाषा विधान सभा की किताब में है।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं उसी को पढ़ रहा हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, ये जिस राम की बात कह रहे थे, वह रामशीला के बहन एक चंदा के राम थे, इनके धंधा के राम थे ।

श्री शिवरतन शर्मा :- वे रावण के वध करने वाले राम थे । इस बात को आप ध्यान रखो ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- राम पूरी दुनिया में एक ही हैं, शास्वत हैं, मर्यादा पुरूषोत्तम हैं और आप इस प्रकार की बात करके प्रभु राम का अपमान कर रहे हैं, इस देश की मर्यादा का अपमान कर रहे हैं, इस देश की सोच का अपमान कर रहे हैं । प्रभु राम एक हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- राम सिर्फ एक हैं, रावण सिर्फ एक थे, गांधी सिर्फ एक थे और गोड़से भी सिर्फ एक थे ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, इतनी उत्तेजना क्यों ? जब हम अपने राम की बात करते हैं तो आप क्यों परेशान हो जाते हैं ? (हंसी) ये वह राम नहीं थे । गांधी जी के बारे में कल आप ही बोल रहे थे, धर्मजीत भैया ने कहा था कि आखरी समय में गांधी जी ने **हे राम** कहा था ।

श्री अजय चन्द्राकर :- राम की परिभाषा किताब में लिखी है, वह विधान सभा की है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- उसको पढ़ लेंगे । अध्यक्ष जी, कल गो सेवा, गोधन पर भी बृजमोहन जी अपनी बात कर रहे थे । ये सरकार जो है, जो बहुत व्यंगात्मक बातें अजय जी बार-बार कहते हैं कि नरवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी में क्या करने जा रहे हैं ? अजय भाई, छत्तीसगढ़ सरकार का यह बहुत दूरगामी कार्यक्रम है । (मेजों की थपथपाहट) जब लोग बहुत दिन याद करेंगे कि गांधी के रास्ते की जब बात हो रही है, जिस गोबर की कल्पना आप करते हैं न, जिसकी कोई कीमत नहीं हुआ करती थी, आप आदरणीय धनेन्द्र भैया के विधान सभा क्षेत्र अभनपुर जाईए, राजस्थान के मुख्यमंत्री आये थे । जिस गोबर को आप कह रहे थे कि केवल हम यही काम करेंगे क्या, इस प्रकार से कार्यक्रम दिए हैं क्या ? आप लगातार व्यंग्य करते जा रहे हैं । थोड़ी समझ हो, नरवा के बारे में आपकी सोच क्या है, वाटर कंजरवेशन की बात है, नरवा छत्तीसगढ़ी शब्द है । इसमें आप व्यंग्य और हंसी का शब्द बनाना चाहते हैं। नरवा का मतलब हम छत्तीसगढ़ के नालों में पानी का संधारण करना चाहते हैं, उसको सुरक्षित रखना चाहते हैं ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आपकी कुछ चीजें मैं बोल रहा हूं । मैंने कह भी कहा था, आज भी कह रहा हूं कि उस कांसेप्ट में आप विधान सभा में चर्चा क्यों नहीं करवाते, सरकार बात क्यों नहीं करती, घूमा-फिराकर उसको क्यों बोलती है ? उसके बजट, उसकी प्रक्रिया, उसकी कार्यवधि, उसकी कार्य एजेंसी, उसकी सारी चीजें, उसकी पड़ने वाले प्रभाव, इसमें तो आप अपना कान्सेप्ट रखिए, मैं तो हमेशा चाहता हूं तो आप लाईन बोल देते हैं कि ये कृषि विभाग नोडल विभाग है, बस आपका इतना ही कान्सेप्ट है ।

श्री मोहन मरकाम :- आपकी तरह वह योजना नहीं थी । न लंदन से, न खाड़ी से, डीजल मिलेगा बाड़ी से । उसका क्या हुआ (मेजों की थपथपाहट) 5 सौ करोड़ से ज्यादा खर्च हो गए, मगर हमारी सरकार योजना बना रही है तो अच्छी योजना है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- मोहन मरकाम जी, अध्यक्ष जी, एक तो कल टोपी पहने, आज उतार दिए । गांधी जी के बारे में बार-बार बहुत धोखा हो रहा है कि इधर कहां से आ गए । कल उतार देना था ।

श्री बृहस्पत सिंह :- मैं टोपी उतारकर आया, गांधी जी वाला ड्रेस आप उतारकर आये ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, माननीय अजय जी और धर्मजीत भैया जी बार-बार टोका टाकी कर रहे हैं । देखिए, कितना समय जाया हो रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं नहीं जानता, मैं डेढ़ बजे खतम कर दूंगा । अभी 12:24 को चुका है, आप देख लीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आखरी मिनट बस ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, उनको बोलना आता है, कैसे आपसे समय लेना है । वे सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- बाकी शेष लोगों को समय नहीं मिल पायेगा ना । इसलिए बोल रहा हूँ ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, सरकार का कार्यक्रम है । माननीय अजय जी ने कहा कि चर्चा करा लीजिए, आने वाले समय में चर्चा करा लीजिएगा । सरकार तैयार है । उसके लिए कोई अड़चन नहीं है । लेकिन यह जो कंसेप्ट है, उसको स्वीकार करना होगा । अभी आप बता रहे थे कि गइया हमको रास्ते में दिखा । है, उन्नीस हजार गांव छत्तीसगढ़ के हैं । हमने अभी 2000 गांवों में गोठान का निर्माण शुरू किया हुआ है । अभी करना है छत्तीसगढ़ में । आप दो महीना में सारे रिजल्ट की अपेक्षा करेंगे ? मैं एक उदाहरण दे रहा था, चरौदा गांव के । वर्मी कम्पोस्ड बनाने का जो काम शुरू हुआ है, 50 हजार आर्डर हुआ है दिल्ली से । गोबर की कीमत नहीं है बोलते हैं, 7 रूपया किलो में एडवांस में वहां के किसान गोबर बेच रहे हैं । खाद बेच रहे हैं, वर्मी कंपोस्ड बेच रहे हैं ।

श्री नारायण चंदेल :- चौबेजी, जांजगीर के पास खोखरा गांव है, वहां 9 गाय मर गई, 10 दिन पहले ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- उसके पहले याद है कि राजनांदगांव में कितने गाय मरे थे । गौशाला में क्या कर रहे थे ?

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरा गांव लोहरसी है, 22 गायें तड़प-तड़प कर मरी है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- वहां मुख्यमंत्री नहीं गये थे । वनचरौदा भर में गये थे ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अगर अपने गांव के बारे में डॉ. बांधी कह रहे हैं, उनके खुद के गांव में 22 मवेशी काल कवलित हुआ, मैं समझता हूँ कि आप भी उसके लिए जिम्मेदार है । यह बिल्कुल गलत तरीका है । योजना सरकार की है, इसका मतलब ...।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- कोई भी सदस्य गोठान में अपना जन्म दिन नहीं मनाया है, डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी ने गोठान में जाकर मनाया है । लेकिन आपकी पूरी कार्यव्यवस्था, कौन जिम्मेदार है । कौन चारा देगा, पता नहीं है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप डॉक्टर साहब, आदमी का डॉक्टर हूँ, जानवर का डॉक्टर नहीं हूँ, ऐसा कहकर बचना चाहते हैं ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, मैं कोई व्यंग्यात्मक बात नहीं कर रहा हूँ ।

श्री रविन्द्र चौबे :- जन्म दिन मनाये तो गइया को कुछ खिला देते ना ।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- आपकी योजना, आपकी व्यवस्था ने उसे खत्म कर दिया ।

श्री धर्मजीत सिंह :- एक मिनट सर, एक गौठान के उदघाटन में गया था । मैंने वहां यह कहा कि माननीय मुख्यमंत्री जी ने ग्रामीण परिवेश को पुर्नजीवित करने के लिए जो काम किया है, उसमें हम सब को मदद करना चाहिये । यह मैंने सार्वजनिक रूप से बोला । कलेक्टर और तमाम अधिकारी और जनप्रतिनिधि थे । दिक्कत उसमें नहीं है । जो ये बोले कि मर गया, मैंने एक अधिकारी का बयान पढ़ा कि उसमें दूसरे गांव के गइया आ गये थे । गइया पढ़ा लिखा थोड़े ही है कि इस गांव के गौठान में जाना है, उस गांव के गौठान में जाना है । यह थोड़ा अधिकारियों को समझाओ । थोड़ा व्यवहारिक रूप से सोचे ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, मेंरा आशय महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज से ओतप्रोत सरकार की एक कार्यक्रम है । मैं किसी को दोष नहीं दे रहा हूँ । हमारा आशय यह है । मैं तो बांधी जी को बधाई भी दूंगा, उन्होंने गौठान में अपना जन्मदिन मनाया । हमारे जितने भी कार्यक्रम है, गांधी दर्शन से ओतप्रोत हैं । हमारे ग्रामीण विकास का कार्यक्रम है । ग्राम स्वराज की बात बापू कहा करते थे । हमारा स्वराजी गांव योजना उसी से है । कल माननीय मुख्यमंत्री जी ने कार्यक्रम लांच किया, कुपोषण से मुक्ति के लिए, स्वास्थ्य के लिए, हाट बाजार के लिए, सार्वभौम खाद्यान्न के लिए, वार्डों में कमेटी बनाने के

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लिए, इसमें किसको आपत्ति हो सकती है । अभी डॉक्टर साहब कह रहे थे कि कुछ कार्यक्रम को आप आगे बढ़ाये । सरकार को दीजिए ना बधाई । आपके कार्यक्रम को आगे बढ़ाया तो हम और आप यहां दोनों क्यों बैठे हैं ? जनता की भलाई के लिए बैठे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, एक बहुत भारी लगातार चर्चा हो रही है, सामुदायिक हिंसा की । छत्तीसगढ़ भी लाल आतंक से लगातार रक्तरंजित होते जा रहा है । अध्यक्ष महोदय, हम लोग चाहते हैं कि उसके बारे में भी समूचे सदन का सोच कई बार इस प्रकार से तय हो गया है कि छत्तीसगढ़ में इसे दूर किया जाना चाहिये । अंत में माननीय सभापति महोदय, सभी सदस्यों से आग्रह करना चाहता हूँ कि हम बापू की 150 वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, हम सबको अपने जीवन में भी, अपने चरित्र में भी, बदलाव लाना चाहिये, एकाध संकल्प भी हम लोग अपने जीवन में ले लें, आप सब से कहना चाहता हूँ, हम सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में काम करने वाले लोग हैं, विशेष रूप से आदरणीय विद्वान सदस्य अजय चन्द्राकर जी, आप पढ़ते भी बहुत हैं, शब्द भी आपके पास बहुत है, ज्ञान भी बहुत है और बोलते भी बहुत हैं, लेकिन विनम्रता थोड़ी जरूरी है । यह केवल मैं आपसे नहीं कर रहा हूँ, मैं सभी माननीय सदस्यों से कहना चाहता हूँ, अगर बापू के बारे में हम चर्चा कर रहे हैं, अपने जीवन में हम लोग विनम्र बनें, अहंकार को त्यागें और जनसेवा निष्ठा से करें । गांधी जी, अंग्रेजों को केवल इसलिए नहीं भगाना चाहते थे कि वह हम पर रूल कर रहे थे, गांधी जी इसलिए इस देश से उनकी मुक्ति चाहते थे कि हम गरीबों के कल्याण के कार्यक्रम करें, गांव के विकास के कार्यक्रम करें, आम जनता के विकास के कार्यक्रम करें और हम सब सदस्य अगर इस बात का संकल्प लेंगे तो माननीय अध्यक्ष जी ने जिस उद्देश्य से यह दो दिवसीय सदन बुलाया है और माननीय मुख्यमंत्री जी और नेता प्रतिपक्ष जी ने उसमें समर्थन दिया है और दो दिन पूरा छत्तीसगढ़ और पूरा हिन्दुस्तान देख रहा है कि दो दिवसीय सदन में हम लोगों ने बापू के चरित्र एवं उनके आदर्शों पर चर्चा अगर की है तो उसे हम अपने जीवन में भी उतारेंगे। माननीय सभापति महोदय, इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय सभापति महोदय, सर्वप्रथम तो माननीय अध्यक्ष जी और सदन के नेता, सदन के प्रतिपक्ष के नेता को धन्यवाद देता हूं कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के अवसर पर दो दिन का ये विशेष सत्र बुलाया गया। शायद देश की दो विधानसभाओं उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ में ही इस प्रकार का सत्र आयोजित हुआ है। माननीय सभापति महोदय, कल माननीय मुख्यमंत्री जी ने अपने उद्बोधन के दौरान एक प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया कि- यह सदन संकल्प लेता है कि हम महात्मा गांधी द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलेंगे और समाज में साम्प्रदायिक सद्भाव और समरसता बनाये रखेंगे और सभी सामाजिक बुराईयों से साथ मिलकर लड़ेंगे। इस प्रस्ताव का समर्थन तो पूरा सदन करेगा, कर ही रहा है पर कल जब ये प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ तो माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

और अजय चन्द्राकर जी ने एक विषय रखा था कि देश के द्वितीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी के नाम का भी जिक्र करते हुए उनके प्रति भी कृतज्ञता का प्रस्ताव आना चाहिए, आपने उसको नहीं जोड़ा। चलिए, आपका सदन में बहुमत है जो चाहें करें पर माननीय सभापति जी, जिस भाव से यह विशेष सत्र आयोजित किया गया था कि गांधी जी के विचारों पर चर्चा, गांधी जी के जीवनकाल में किए गए कार्यों पर चर्चा, गांधी जी की 150वीं जयंती है और 04 महीने बाद गांधी जी की 74वीं पुण्यतिथि भी आ जायेगी और मैं समझता हूं कि देश में अपवाद स्वरूप शायद कोई व्यक्ति बचा हो जिसने कभी गांधी जी के साथ काम किया हो। हम यहां जितने लोग बैठे हैं उनको न तो गांधी जी को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और न ही गांधी जी को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हम सबने गांधी जी को पढ़ा है और गांधी जी के बारे में सुना है। चर्चा होनी थी, गांधी जी पर एवं गांधी जी के विचारों पर पर दुर्भाग्य से सदन के नेता ने ही उस चर्चा की दिशा बदल दी और चर्चा की दिशा बदल दी कि गोडसे पर भी विचार आना चाहिए। माननीय सभापति महोदय, मैं तो सबसे पहले आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करूंगा कि गांधी जी के नाम पर राजनीति करने के बजाय गांधी जी के विचारों को, गांधी जी के दर्शन को पढ़ें और समझें तो छत्तीसगढ़ का ज्यादा अच्छा भला होगा, ज्यादा अच्छा काम कर सकेंगे। माननीय सभापति महोदय, माननीय विधानसभा के द्वारा एक पुस्तक कल सभी सदस्यों को दी गई है। गांधी जी का दंड के विषय में क्या विचार था इसमें इसका उल्लेख है। मैं कुछ पंक्तियां पढ़ रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- सभापति महोदय, कल मैं किताब में से थोड़ा सा देख रहा था तो आपको आपत्ति हो रही थी। आप किताब देखकर पढ़ेंगे? इसको सभा पटल पर रख दीजिए, पढ़ा हुआ माना जायेगा। वह किताब सबको मिला है जो आपके हाथ में है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, गांधी जी से पूछा गया। यदि कोई बच्चा शिक्षक द्वारा किये गये, भरसक प्रयासों के बावजूद भी नहीं सुधरता है तो उसके लिये क्या दंड किया जाना चाहिए ? गांधी जी ने उत्तर दिया, दंड शिक्षक को दिया जाना चाहिये न कि बच्चे को, शिक्षक द्वारा अपने को तब तक दंडित करना चाहिए जब तक बच्चा सुधर न जाये। यह विचार माननीय गांधी जी के थे और बार-बार गोडसे की बात कर रहे हैं। सर्वविदित है गोडसे ने महात्मा गांधी की हत्या की और गोडसे की हत्या करने की सजा हमारे देश की न्यायपालिका ने उनको मृत्यु दंड के रूप में दी।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, गोडसे से आपत्ति क्या है ? गोडसे का नाम लेने से आपको कोई आपत्ति है क्या ? क्या गोडसे के नाम लेने से आपको कोई आपत्ति है ? गांधी जी के हत्यारे का नाम हम हत्यारा कह रहे है उसमें क्या आपत्ति है ?

संस्कृति मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय सभापति महोदय, किताब को पहले किनारे रखिये न। शर्मा जी, किताब को पहले किनारे रखिये न। ऐसी बात करिये।

असंपादित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति जी, एक खतरनाक बात इस सदन में पैदा हो रही है। (व्यवधान) समर्थकों की संख्या बहुत कम हो रही है। आपके लिये यह खतरा है, इनके ज्यादा समर्थक पैदा हो रहे हैं, ऐसा-ऐसा करते हैं तो कई खड़े होते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, विधानसभा से जो किताब मिली है, उसी को पढ़ रहा हूं।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपने तो किताब देखकर बोलने पर आपत्ति उठाई थी।

श्री अमरजीत भगत :- किताब का वाचन कर रहे हैं ये क्या बात हुई ? नहीं नही, किताब देखकर पढ़ना है तो ऐसी किताब सबके पास है।

सभापति महोदय :- माननीय शर्मा जी, थोड़ा संक्षिप्त में करिये, बहुत लोगों को बोलना है। बहुत से वक्ता हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, मैं बिल्कुल संक्षिप्त कर रहा हूं। अभी तो शुरू ही किया हूं। मैं जो कोड कर रहा हूं, ये विधानसभा से ही जो पुस्तक वितरित की गई है, उसी को कोड कर रहा हूं। गोडसे को फांसी हुई, पर शायद उस घटनाक्रम में गांधी जी बच जाते, तो गोडसे के प्रति दया का भाव प्रदर्शित करते, गांधी जी ने व्यक्तिगत रूप से जो बात कही है, इस पुस्तक में लिखा है मैं अब पढ़ रहा हूं :- गांधी जी व्यक्तिगत रूप से अपराधी को जेल में बंद करने के पक्ष में नहीं थे, वास्तव में वे व्यक्तिगत व सावर्जनिक अपराधी के लिये दंड प्रथा में विश्वास नहीं रखते थे। यदि उनके हाथों में व्यवस्था होती तो वे जेल के दरवाजे खोल देते और हत्यारे को भी स्वतंत्र छोड़ देते। ये इस पुस्तक में लिखा है और आप बार-बार गांधी की चर्चा, गांधी की चर्चा, कर रहे हैं। माननीय सभापति जी, सदियों में एक गांधी पैदा होता है, मोहनलाल करमचंद गांधी से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी बनने तक गांधी जी की जो कठिन यात्रा है, जो उनने कर्म किया है उसको समझने की आवश्यकता है। जेल की यात्राएं की, परिवार की प्रताड़ना सही, अगर आप उनकी जीवनी को पढ़ों तो आपको यह देखने में आयेगा कि उनके पुत्र भी परिवार के प्रति ध्यान न देने के चलते उनसे नाराज रहते थे, पर उनने राष्ट्र के लिये सबकुछ समर्पित किया और किस स्तर तक सहना पड़ा। समाज ने भी उनको बहिष्कृत किया, परिवार में लड़कों ने तिरस्कार का भाव पैदा किया, पर आज क्या हो रहा है ? गांधी के नाम पर राजनीति करने वाले लोग गांधी के विचारधारा में कितने चल रहे हैं। मैंने जब जिक्र किया था, कल जो नाटक हुआ, माननीय मुख्यमंत्री जी फिर से बोल रहा हूं आप क्लीपिंग देख लेना, बहुत स्पष्ट रूप से कल नाटककर्ता ने कहा था, गांधी मर जाये तो मर जाये, यह नाटक (व्यवधान) ।

संस्कृति मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय सभापति महोदय, यह आपत्तिजनक है। ये नाटक का मंचन नहीं देखे हैं, बिना देखे बात कर रहे हैं। इनसे पूछो, ये कहां थे। (व्यवधान)

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- सभापति महोदय, सबसे बड़े नाटक तो आज यहीं है। यहां आकर नाटक कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आधारहीन गुमराह करने वाली बात कर रहे हैं। एक अल्पज्ञानी बहुत खतरनाक होते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, गांधी की उपेक्षा आजादी के तत्काल बाद जो पहली सरकार बनी...।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय सभापति महोदय, ये अल्पज्ञानी बहुत खतरनाक होते हैं। आधी अधूरी बात को कहीं जोड़कर कहीं बता देते हैं। कल उस मंचन के नाटक पर नहीं थे। ये कहां सुन लिये।

सभापति महोदय :- कृपया बैठ जायें। अपनी बात पूरी करने दें।

श्री शिवरतन शर्मा :- अच्छा चलिये, मैं अल्पज्ञानी हूं, मैं स्वीकार कर लेता हूं, आप तो पूर्णज्ञानी हैं न। मैं स्वीकार कर लिया, आप पूर्णज्ञानी हैं न ।

श्री अजय चंद्राकर :- सभापति महोदय, नरवा, गरवा, घुरूवा, बाड़ी के बारे में जाने लिये तो ज्ञानी हो गये।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- इसीलिये तो बोल रहे हैं आप बात मत करो, नाटक देखो। उसमें जो कहा गया है उसको पढ़ो लिखो।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपसे कोई मुकाबला कर ही नहीं सकता। संसदीय कार्य मंत्री में आप नंबर वन हैं।

सभापति महोदय :- आप अपनी बात रखिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, मैं बोलना शुरू कर रहा हूं तो भाई लोग बोलने नहीं देते हैं। ये गांधी की विचारों की बात करते हैं। आजादी के बाद गांधी जी के विचारों का, गांधी जी की भावनाओं का गांधी जी जो चाहते थे उसका कांग्रेस पार्टी ने और वहां के उस समय के शासकों ने कभी ध्यान नहीं दिया। पंचवर्षीय योजना शुरू हुई । माननीय सभापति महोदय, मैं जो भी बोल रहा हूं इस पुस्तक से बोल रहा हूं। पंचवर्षीय योजना की शुरूआत हुई।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय शर्मा जी, गांधी जी भी बैरिस्टर थे, आप भी वकील हैं। अपने जीवन में उनका कुछ तो अंश उतार लीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं तो अल्पज्ञानी हूँ। आपने कहा तो मैंने मान लिया।

माननीय सभापति महोदय, पंचवर्षीय योजनाओं की शुरूआत हुई और शुरूआत में ही गांधी जी के विचारों, विचारों के विपरित काम करने की शुरूआत हुई। जो इसमें दिया गया है, विनोभा भावे जी की कुछ पक्तियों को मैं आपके सामने रख रहा हूँ। पंचवर्षीय योजना के मसौदे के बारे में जब विनोभा जी

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

की राय नेहरू जी के पास पहुंची तो उन्होंने विनोभा को तार से संदेश भेजा कि वे कृपया दिल्ली आकर, योजना आयोग के सदस्यों के सामने अपनी बात रखें। विनोभा ने तत्काल तार से उत्तर दिया और अपेक्षानुसार वे चलकर आये। दिल्ली पहुंचकर, विनोभा ने योजना आयोग के सामने अन्न स्वावलंबन की बात रखी। योजना आयोग के विद्वान सदस्यों ने विनोभा को जवाब दिया कि अन्न की चिंता करने की जरूरत नहीं है। हम अपनी चीजें दुनिया के महंगे बाजार में बेचेंगे और वहां का सस्ता अनाज देश में लाएंगे। माननीय सभापति महोदय, परिणाम क्या हुआ? यह सबके सामने है। वर्ष 1965 में लाल बहादुर शास्त्री को सार्वजनिक रूप से देश की जनता से सप्ताह में एक दिन का उपवास का निवेदन करना पड़ा। सरकार बनने के तत्काल बाद गांधी जी के विचारों को तिलांजलि देने का काम अगर किसी ने किया है तो कांग्रेस के लोगों ने दिया है। गांधी जी का विशेष जोन स्वच्छता के ऊपर रहता था और मोदी जी की सरकार ने स्वच्छता, आवास किया है और अटल जी की सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान चलाकर शिक्षा के क्षेत्र में किया है। अटल जी की सरकार ने जो चिकित्सा के क्षेत्र में शुरूआत की, वास्तव में ये सरकारें गांधी जी के विचारों पर चलने वाली रही हैं। ये जो सरकार चला रहे हैं, ये गांधी के विचारों पर चलने वाली सरकार नहीं है।

माननीय सभापति महोदय, गांधी जी कभी भी संवादहीनता को स्वीकार नहीं करते थे। विचारों में मतभेद हो सकते हैं। आपकी हमारी विचारधारा अलग हो सकती है, पर गांधी जी का कथन रहता था कि संवाद हमेशा बने रहना चाहिए और उन्होंने अपने जीवनकाल में हिटलर और मुसोलनी को भी चिट्ठी लिखी है। वे एक बार मुसोलनी से तो मिले हैं। गांधी जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के दो बार कार्यक्रम में भी गये हैं। एक बार वर्ष 1934 में गये हैं और एक बार वर्ष 1947 में गये हैं और वे जब संघ के कार्यक्रम में गये। 25 दिसंबर, 1934 को सुबह 6.00 बजे महात्मा गांधी जी वर्धा में आर.एस.एस. के शिविर में गये और शिविर में जाने के बाद, उनने सबसे ज्यादा वहां गणवेश पहने स्वयं सेवकों की प्रशंसा की थी, भोजन और ठहरने के सारे प्रबंध किये और सारे प्रबंध में स्वयं सेवकों ने स्वयं खर्च किया था, उसकी प्रशंसा की और दूसरी बात अपृश्यता को दूर करने की बात की। स्वंयसेवक आपस में एक दूसरे की जाति तक नहीं जानते थे, उनने इस बात की प्रशंसा की थी। उस वर्ष 16 सितम्बर, 1947 को भी संघ की शाखा में माननीय गांधी जी गये हैं और वहां भी भंगी बस्ती में शाखा, शिविर लगी हुई थी, वहां जाकर उनने संघ के स्वयं सेवकों को संबोधित किया था और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ गांधी जी के प्रति क्या विचार रखता है, कल माननीय बृजमोहन जी ने उसका जिक्र किया था। कल दैनिक भास्कर जैसे बड़े समाचार पत्र में संघ प्रमुख आदरणीय मोहन भागवत जी का एक पूरा लेख छपा था।

श्री बृहस्पत सिंह :- उस लेख में इसका भी उल्लेख है क्या ?

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, एक एकात्मता शोध गाया जाता है। उस एकात्मता शोध में भारत की राष्ट्रीय एकता का उद्‌बोधन भी था, जो राष्ट्रीय स्वयं सेवक की शाखा में गाया जाता है। यह संस्कृत में है।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय शर्मा जी, सुनेंगे ? मैं ये पूछ रहा था कि गोडसे आर.एस.एस. के कैम्प में जाते थे या नहीं जाते थे? आप इतना ही बता दीजिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- अब आप यह इतिहास खोजिए, आप ज्ञानी हैं। मैं तो अल्पज्ञानी हूँ।

श्री अमरजीत भगत :- आप पूरी किताब लेकर बैठे हैं तो यह भी बता दीजिए ? कि वे आर.एस.एस. के कैम्प में जाते थे या नहीं जाते थे ?

श्री शिवरतन शर्मा :- अब आप इतिहास खोजिए, आप ज्ञानी हैं।

श्री संतराम नेताम :- क्या है, माननीय शर्मा जी को सब मालूम है, लेकिन यहां बोलना नहीं चाह रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, इसमें आदिकाल से लेकर अब तक के भारत के महान सपूतों एवं सुपुत्रियों की नामावली है जिन्होंने भारत एवं महान हिन्दु सभ्यता के निर्माण में योगदान दिया। इसके अलावा इसमें आदर्श नारियॉं, धार्मिक पुस्तकें, नदियॉं, पर्वत, पौराणिक पुरूष, वैज्ञानिक, सामाजिक एवं धार्मिक, प्रवर्तक आदि सब नामों का उल्लेख है। माननीय सभापति जी जो गीत गाया जाता है, उसकी संस्कृत की दो लाईन आपको सुना रहा हूं। दादा भाई गोप बंधु, तिलको गांधी राष्ट्रीयता, रमणो मालिश्वता, श्री सुब्रमण्यिम भारतीय:, सुभाष प्रमानंद: क्रांति वीरो विनायक:, ठक्करो भीमा रश्व, सूले नारायण गुर:, ये पूरी पुस्तक है, आप चाहें तो मैं आपको भेट कर सकता हूं। संघ की शाखा में प्रात: स्मरण में भीमराव अंबेडकर की भी प्रार्थना की जाती है और महात्मा गांधी को भी याद किया जाता है। पर गांधी के नाम पर जो लोग राजनीति कर रहे हैं, वह गांधी की विचारधारा को कैसे अपना रहे हैं, इस पर विचार करने की आवश्यकता है। कल माननीय मुख्यमंत्री जी ने गोड़से के बारे में बात की। मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि आपकी सरकार का मंत्री बच्चों के बीच जाकर यह कहे कि बड़ा आदमी बनना है तो एस.पी. और कलेक्टर की कालर पकड़ो। क्या यह गांधी की विचारधारा है? आपकी पार्टी का विधायक मंत्रियों की उपस्थिति में सार्वजनिक मंच में ये कहे कि अधिकारियों को जूता मारो, क्या यही गांधी की विचारधारा है? और अगर गांधी की विचारधारा है।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप उस वीडियों को ढंग से देख लीजिए, आप हवा-हवाई में गोड़से की तरह बात मत करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपका तो नाम ही नहीं लिया है, क्यों स्पष्टीकरण दे रहो हो ?

अशासकीय/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- आपके जैसे गोड़से की भाषा मत बोलिये, आप गोड़से के लोग हैं, गोड़से की भाषा बोलना बंद करिये।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय सभापति महोदय, वास्तविक में चर्चा तो गांधी जी की 150वीं जयंती के ऊपर हो रही है, लेकिन गोड़से के ऊपर इनका इंट्रेस्ट ज्यादा है और गोड़से के बारे में ज्यादा जानना चाहते हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- जहां गांधी जी की बात होगी, गोड़से की बात आयेगी। राम की बात होगी तो रावण की बात होगी।

श्री धरमलाल कौशिक :- मैं आपसे आग्रह करूंगा कि एक विशेष सत्र बुलाया जाये और उसमें गोड़से के ऊपर पूरी चर्चा कराई जाये। गोड़से के ऊपरे में चर्चा कराने के बाद में गोड़सेवादी, गांधीवादी, ये सारी बातें आ जायेंगी। क्योकि गांधी के बारे में जितना इन्होंने नहीं कहा है उससे ज्यादा गोड़से के बारे में कहा है। मैं आग्रह करूंगा कि गोड़से के बारे में विशेष सत्र बुला करके उस पर चर्चा होनी चाहिए, यह मैं मांग करता हूं।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय नेता जी, मैंने यह कहा गांधी जी जिंदाबाद, गोड़से मुर्दाबाद, अगर आपको तकलीफ है तो गोड़से मुर्दाबाद मत बोलिये।

सभापति महोदय :- कृपया आप बैठ जायें, आप अपनी बात पूरी करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन उनका नाम नही लिया गया है, माननीय सदस्यगण उत्तेजित मत हों।

श्री बृहस्पत सिंह :- आप इतने बड़े विद्वान हैं, गोड़से मुर्दाबाद कहने में क्या तकलीफ है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय गांधी जी के विचार अहिंसा के विचार थे। अगर सरकार कोई काम न करे वह सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन चलाने की बात करते थे, कभी कालर पकड़ने और जूता मारने की बात नहीं करते थे। मैं आपके माध्यम से निवेदन करूंगा कि छत्तीसगढ़ में कौन सी संस्कृति माननीय मुख्यमंत्री जी ला रहे हैं, स्पष्ट करेंगे ? माननीय सभापति जी, वास्तव में आजादी के बाद गांधी जी ने जो प्रमुख बात कही थी।

श्री अजय चन्द्राकर :- बृहस्पत सिंह जी, आज के पेपर में फिर छपा है कि स्कूल शिक्षा विभाग के ट्रांसफर में गड़बड़ी हो गई है, उसमें कुछ बोलना चाहेंगे ?

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय, मैंने ये भी पहले पेपर में पढ़ा था कि मुख्यमंत्री समग्र योजना का आपके जमाने में बिना 10 परसेन्ट लिये नहीं होता था।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, ये पुस्तक ''मेरे सपनों का भारत'' है, इस पुस्तक को महात्मा गांधी जी ने लिखी है। गांधी जी ने 29 जनवरी 1948 को एक पत्र लिखा था, माननीय

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मुख्यमंत्री जी, जिसको गांधी जी का आखिरी वसीयतनामा कहा जाता है। अगर आप पढ़ेंगे तो मैं आपको पढ़ने के लिए भेट करूंगा। मेरे सपनों का भारत महात्मा गांधी जी की लिखी हुई किताब है।

सभापति महोदय :- कृपय जल्दी पूरा करें, अभी काफी लोग हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, गांधी जी ने 29 जनवरी 1948 को अपनी मृत्यु के एक दिन पहले बनाया गया लेख था, इसलिए इसे उनको आखिरी वसीयतनामा कहा जाता है। इसमें उन्होंने जो लिखा है, वह महत्वपूर्ण बात है। इसको कितना पालन करेंगे, मुख्यमंत्री जी बतायेंगे। कांग्रेस को हमें राजनीतिक पार्टियों और सांप्रदायिक संस्थाओं के साथ गंदी होड़ से बचाना चाहिए । ऐसे ही दूसरे कारणों से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी नीचे दिये गये नियमों के मुताबिक अपनी मौजूद संस्था को तोडते हुए लोकसेवक संघ के रूप में प्रकट करना चाहिए यह गांधी जी के विचार हैं और गांधी जी के विचारों को मानने के बजाय गांधी जी के बारे में राजनीति कर रहे हैं ।

माननीय सभापति महोदय, गांधी जी ने तो कांग्रेस को समाप्त करने की बात की थी, केवल होड़ लेने के लिये गांधी जी की राजनीति कर रहे हैं । माननीय मुख्यमंत्री जी, जरा बतायेंगे कि सन् 1977 का आपातकाल लगा था तो क्या यह गांधी की विचारधारा थी ? सन् 1984 में पूरे देश में सिक्खों का कत्लेआम हुआ, आपकी सरकार थी क्या यह गांधी की विचारधारा थी ? सन् 1989 से 1990 के बीच पूरे कश्मीर घाटी से हिंदुओं को हटाया गया, उनको वहां से हटने के लिये मजबूर किया गया, आपकी समर्थक सरकार थी, दिल्ली में आपकी सरकार थी यह क्या गांधी जी की विचारधारा थी ?

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, गांधी के नाम पर राजनीति करने की बजाय गांधी के विचारों को पढ़ें और समझें और उस पर राजनीति करें तो ज्यादा अच्छा होगा । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- यहां गांधी जी की राजनीति की बात न करें । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- यहां विचारधारा की बात रही है । महाराज जी, आप गांधी जी की कितनी बात को मानते हैं वो वाली बात है, ज्ञान होना जरूरी बात नहीं है । (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- शर्मा जी, यहां गोडसे की विचारधारा पर बात नहीं हो रही है । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने कहा न कि आप एक विशेष सत्र बुला लीजिये जिसमें गोडसे पर भी चर्चा हो जाएगी। माननीय मुख्यमंत्री जी सक्षम हैं, सत्र बुला लें हम लोग अपनी बात रखेंगे, आप भी अपनी बात रख लेना, आप इस विषय पर सत्र बुलाईये, हम अपनी बातें रखने को तैयार हैं ।

श्री रामकुमार यादव :- श्री शर्मा जी, आप कौन से विचार को मानते हैं । (व्यवधान)

असंपादित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, एक दिन का विशेष सत्र बुला लेने की आसंदी से घोषणा हो जाये । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- अच्छा, आप कृपया बैठिये । शर्मा जी आप अपनी बात जल्दी पूरी करिये । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- आप कौन सी विचारधारा को मानते हैं, गांधी जी की विचारधारा या गोडसे जी की विचारधारा को मानते हैं यह बताईये । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- आप उनके बारे में बोलकर देखिये । (व्यवधान) आप उनका भी उल्लेख करके बताईए न । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय मुख्यमंत्री जी ने राष्ट्रवाद की चर्चा की । हां, हम लोग सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बात करते हैं ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- शर्मा जी, ये चिन्मयानंद जी आपकी पार्टी के सांसद हैं न ? (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- जी, महाज्ञानी अमरजीत भगत जी ।

श्री अमरजीत भगत :- चिन्मयानंद जी आपकी पार्टी के सांसद हैं न, वे कहां हैं?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय, महाज्ञानी अमरजीत भगत जी ये क्या है कि आपके जो प्रवक्ता हैं अभिषेक मनु सिंघवी उनके मित्र हैं बस इतना याद रखना । अगर मालूम न हो तो अभिषेक मनु सिंघवी कौन हैं माननीय मुख्यमंत्री जी से पूछ लेना ।

सभापति महोदय :- शर्मा जी, कृपया समाप्त करें ।

श्री अजय चंद्राकर :- वे निलंबित क्यों हुए थे, वह भी आप जान लेना । अभिषेक मनु सिंघवी किन कारणों से उसके ड्राईवर, उसके कंडक्टर वह सब आपको बता देंगे।

श्री अमरजीत भगत :- मैंने तो केवल इतना ही पूछा कि चिन्मयानंद जी आपकी पार्टी के सांसद हैं, मैंने केवल इतना ही तो पूछा है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैंने बताया न कि अभिषेक मनु सिंघवी जो कांग्रेस के प्रवक्ता हैं उनके मित्र हैं अब बाकी डिटेल आप पूछ लेना ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- पंडित शिवरतन जी, गांधी जी पर चर्चा कर रहे हैं न, आप अभी कहां जा रहे हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है कि आपके लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है पहले 3 थे, आज 6 हो गये हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं तो आपको भी अपने में शामिल करता हूं ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- लेकिन आपकी अनुपस्थिति में भी आपका फ्लोर मैनेजमेंट दिखता है यह हम मानते हैं ।

सभापति महोदय :- शर्मा जी, कृपया समाप्त करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, कल माननीय मुख्यमंत्री जी ने राष्ट्रवाद की चर्चा की थी । हम और हमारी पार्टी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बात करते हैं । माननीय सभापति जी, गांधी जी जिस राष्ट्रवाद की बात करते थे उसको अगर सही मायने में किसी ने स्वीकार किया है तो भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोगों ने स्वीकार किया है । गांधी जी जाति-पाति, धर्म से ऊपर उठकर देश की बात करते थे और आप अपने पुराने रिकॉर्ड को अपने प्रधानमंत्रित्व कार्यकाल की बातों को देख लें । धर्म की हमेशा बात होती थी ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय शर्मा जी, 50 साल तक मुख्यालय में तिरंगा झंडा नहीं फहराये, आप किस राष्ट्रवाद की बात कर रहे हैं ? जिस आर.एस.एस. मुख्यालय नागपुर में 50 साल तक आप तिरंगा झंडा नहीं फहराये, आप किस राष्ट्रवाद की बात करते हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, गांधी जी ने जिस राष्ट्रवाद की बात की थी उसमें धर्म-जाति की व्यवस्था नहीं थी लेकिन आपकी सरकार ने क्या किया । आपके सम्माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का भाषण हुआ और भाषण में कहा कि इस देश के संसाधनों पर पहला अधिकार देश के मुसलमानों का है । यह राष्ट्रवाद है क्या ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- इस तरह की बात करना गलत है, सभापति महोदय।

सभापति महोदय :- शर्मा जी आपको 25 मिनट से ज्यादा हो गए हैं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यह सदन का समय खराब कर रहे हैं । इस तरह की बात कर रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं सदन का समय खराब नहीं कर रहा हूं, आपकी जानकारी में ला रहा हूं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- जाति और धर्म के नाम पर भाजपा राजनीति करती है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- जाति के आधार पर देश को तोड़ने का काम किया है तो कांग्रेस ने किया है और कांग्रेस की सरकारों ने किया है । इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा ।

श्री अमरजीत भगत :- सभापति जी, ये कहां से ऊल-जलूल किताब ले आए हैं और उसको पलट-पलट कर पढ़ रहे हैं ।

डॉ. शिव कुमार डहरिया :- कुतर्क कर रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- जो किताब विधान सभा से मिली है मैंने उसका उल्लेख किया है ।

सभापति महोदय :- आज भोजन की व्यवस्था माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी की ओर से

अप्रमाणित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है, कृपया सुविधानुसार भोजन ग्रहण करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- इस सत्र को बुलाने की सार्थकता तभी होगी । माननीय मुख्यमंत्री जी और उधर के सारे लोग यह संकल्प लें कि हम गांधी जी के बताए रास्तों पर चलेंगे, तभी इस सत्र की सार्थकता होगी । इसी निवेदन के साथ आपने समय दिया उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद् ।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय सभापति महोदय, देश की सभी विधान सभाओं में ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति जी, अरूण वोरा जी और सीनियर वोरा जी तो दूसरे गांधी परिवार को जानते हैं, उनके साथ ही काम किया है । कौन से गांधी के बारे में बोलेंगे, इसको स्पष्ट कर दें ?

श्री अरूण वोरा :- सभापति जी, मैं पिछले 6 वर्षों से अजय चन्द्राकर जी के साथ मेरे शब्दकोष में शब्द ही खत्म हो गए हैं, मैं किन शब्दों में आपकी इस बात का जवाब दूं । शब्दकोष ही खत्म हो गया है । माननीय सभापति महोदय, देश की विधान सभाओं में छत्तीसगढ़ की विधान सभा को यह गौरव प्राप्त हुआ है, जिसने महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती पर विशेष सत्र का आयोजन कर सभी सदस्यों की भावनाओं को समझने का प्रयास किया है । आज मुझे कहने में खुशी है कि दो दिनों तक हमारे सभी माननीय सदस्यों ने महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला और जिस बात को लेकर उन्होंने कहा, उससे कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी देश के अतीत ही नहीं, बल्कि भविष्य भी हैं । सभापति जी, आज इस देश को फिर से गांधी की जरूरत है । इस बात से पूरा राष्ट्र सहमत है । राष्ट्र उत्थान और मानव उत्थान में महात्मा गांधी जी ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था । देशवासियों को उन्होंने सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, शांति सद्भाव का संदेश दिया था, जिसकी आज बहुत ज्यादा आवश्यकता है । सद्भावना की, भाईचारे की, एकता की और सर्वधर्म समभाव की आज बहुत ज्यादा आवश्यकता है । महात्मा गांधी जी ने बड़े ही साहस एवं संयम से स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व कर देश को आजादी दिलाई । सभापति महोदय, मुझे यहां इस बात को कहने में खुशी है कि हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी महात्मा गांधी के पद्चिन्हों पर चलकर प्रदेश के अंतिम छोर तक रह रहे व्यक्ति को शासन की योजनाओं का लाभ दिलाने में कोई कसर बाकी नहीं रख रहे हैं । मैं यह कह सकता हूं कि हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश की सरकार ने बापू की करूणा को अपना मूल मंत्र बनाया है । उसके आधार पर ही पूरे प्रदेश का सर्वांगीण विकास किया जा रहा है । सभापति महोदय, गांधी जी ने हमेशा समता व समानता पर आधारित एक शोषणरहित समाज की स्थापना की थी । जिसमें उन्होंने कहा था कि समाज में कोई छोटा-बड़ा नहीं है, ऊंच-नीच की भावना को उन्होंने समाप्त किया, साथ ही उन्होंने जो ग्राम स्वराज की कल्पना की, उनका यह कहना था कि बिना

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

किसी भेदभाव के अमीरी व गरीबी की दूरी को पाटा जा सकता है, ग्राम स्वराज की भावना के आधार पर । ग्राम स्तर के विवाद हैं उनको ग्राम पंचायत का गठन करके समाप्त किया जा सकता है । सभापति महोदय, आज से 150 वर्ष पूर्व एक नश्वर शरीर का ही नहीं बल्कि सत्य, अहिंसा, त्याग और तपस्या के गुणों से भरपूर भारत को आजादी दिलाने वाला अजर-अमर विचार का सूत्रपात महात्मा गांधी के रूप में हुआ था । बापू ने सत्य और अहिंसा की राह पर अडिगता से चलते हुए गुलामी, अस्पर्श्यता, अत्याचार के खिलाफ जिस बुलंदी से अपनी आवाज उठाई, वह अविश्वसनीय है ।

समय :
1:00 बजे

माननीय सभापति महोदय, किसी हिंसक क्रांति के इतिहास में वह जगह नहीं जो बापू के सविनय अवज्ञा आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो जैसे अहिंसक आंदोलनों की है। वे वकालत छोड़कर जब अफ्रीका से भारत आये तो पूरे देश का भ्रमण किया। उसमें हमारा छत्तीसगढ़ भी अछूता नहीं था। वे रायपुर, दुर्ग और धमतरी में गये। कंडेल में उन्होंने जल सत्याग्रह किया। साथ ही 1933 में जब वे दूसरी बार हिन्दुस्तान में आये तब उन्होंने भेदभाव और अछूतोद्धार की यात्रा उन्होंने प्रारंभ की। हमारा यह सौभाग्य है कि दुर्ग में भी महात्मा गांधी के चरण पड़े। दुर्ग में मोहनलाल बाकलीवाल विद्यालय में वे वहां पहुंचे और उसके साथ ही उन्होंने जैतुसाव मठ की सभा बैथलपुर के कुष्ठ आश्रम में आज महात्मा गांधी के पदचिन्ह के प्रमाण मिलते हैं। दुर्ग के बारे में मैं कहना चाहूंगा कि हमारे मुख्यमंत्री जी वहां पर हैं। मोहनलाल बाकलीवाल जो विद्यालय है, उसे महात्मा गांधी के रूप में एक संग्रहालय बनाया जाए ताकि आने वाली पीढ़ी इस बात को याद करती रहे कि दुर्ग में भी महात्मा गांधी जी का एक संग्रहालय बना है जो आने वाली पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा के स्रोत का कारण बनेगा। जैसा कि हमने मुख्यमंत्री जी का उद्बोधन सुना। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को याद करने, नमन करने और श्रद्धासुमन अर्पित करने से हमारा काम खत्म नहीं होता, बल्कि यहां से हमारा काम शुरू होता है। बापू के विचारों पर आगे बढ़ते हुए कांग्रेस सरकार ने सुराजी ग्राम योजना की दिशा में कार्य करना शुरू किया। नरवा, गरूवा, घुरवा, बारी के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं। सभी को भोजन, सभी को राशन के साथ ही सभी को स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवाने, गांवों में हाट बाजार, क्लिनिक, शहरी स्लम क्लिनिक जैसी महती योजना बनाई गई है। महात्मा गांधी जी ने देश के प्रति जो योगदान दिया, उनकी महानता को बताना सूरज को दिया दिखाने के समान है । मैं इस अवसर पर इतना ही कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा।

वैष्णव जन तो तेने कहिये,
जे पीड परायी जाणे रे।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पर दु:खे उपकार करे तो ये,

मन अभिमान न आणे रे।।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद।

सभापति महोदय :- श्री देवेन्द्र यादव जी।

श्री देवेन्द्र यादव (भिलाई नगर) :- बहुत-बहुत धन्यवाद सम्माननीय सभापति महोदय, आज गांधी जी को याद करने के लिए यह विधानसभा का विशेष सत्र आयोजित किया गया है। इस विशेष सत्र में सभी सम्मानित विधानसभा के सदस्यगण और यहां पर हमारे बीच में बैठे हमारे मुखिया श्री भूपेश बघेल जी का मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने यह अवसर दिया कि हम लोग अपने विचार गांधी जी के बारे में आज यहां पर रख सकें। मुझे बोलने का अवसर मिला है। मैं जो भी बातें कहूंगा, जो मेरे दिल की भावना है, मैं उसे आपके सामने रखूंगा। मैं कोई राजनीतिक चर्चा आपके बीच में नहीं करूंगा। मैं छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय रहा। छात्र जीवन में मुझे प्रदेश के बहुत सारे राज्यों में भ्रमण करने का अवसर मिला। एक बार एक कार्यशाला वर्धा गांधी जी के आश्रम में आयोजित की गई। उस कार्यशाला में मैं गया। वहां गांधी जी के सभी विचारों को मैंने सुना और पढ़ा। उनका जीवन-व्यापन कैसे होता है, उसे नजदीक से देखा। वहां मैंने एक वाक्य पढ़ा- अंत्योदय से सर्वोदय तक और वह वाक्य मेरे दिल और दिमाग में बस गया। मैं राजनीति में सक्रिय था। चूंकि जब हम सब लोग राजनीतिक रूप से कार्य करते हैं तो हम सबका मकसद रहता है कि हम बेहतर से बेहतर कार्य करें। मैंने भी यह संकल्प लिया कि अंत्योदय से सर्वोदय तक की भावना को अपना मूल मंत्र बनाकर मैं अपने राजनीतिक जीवन को आगे बढ़ाउंगा, लेकिन जब-जब मैं किसी उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ता हूं तो कहीं न कहीं मुझे कोई राजनीतिक हानि या लाभ दिखता है तो जो मुख्य उद्देश्य है अंत्योदय से सर्वोदय तक का, वह पूरा नहीं होता। अभी भी प्रयास कर रहा हूं कि इस मुख्य उद्देश्य को पूरा कर लूं। मैंने अपने जीवन में बहुत सारे नेताओं को देखा है और अध्ययन किया है। विपक्ष में रहा तब उनकी बातें सुनी और उनकी बातों को समझा भी, लेकिन जब वे पक्ष में आते हैं तो कहीं न कहीं बातें बदल जाती हैं। मैंने अपने जीवन में किसी को गांधी जी के विचारों को पूरी तरह अपने जीवन में ढालते हुए उसके हिसाब से अपने कर्तव्यों को निभाते हुए देखा, तो माननीय भूपेश बघेल जी को देखा। (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट) जब वे सत्ता में आये, उनको अवसर मिला। गांधी जी कहते थे कि अगर हमें देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है तो हमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना पड़ेगा। वे सत्ता में आये, उनको मौका मिला और उन्होंने तुरन्त किसानों का कर्ज माफ किया। उनको धान का समर्थन मूल्य 2500 रूपये दिया। उनका सम्मान पूरे देश में बढ़ाया। उनको अवसर मिला तो उन्होंने आदिवासियों

असंशोधित/पुनरावलोकन के लिए नहीं

भाईयों की जमीन पूंजीवाद, प्रशासनिक तन्त्र के हत्थे चढ़ गई थी, वह जमीन उनको वापस की। उनको अवसर मिला तो हमारी जो सामाजिक न्याय व्यवस्था है, उसको सुधारने के लिए चाहे जनरल केटेगरी हो, ओ0बी0सी0 केटेगरी हो, एस0सी0 हो, सबको उचित स्थान गांधी जी के विचारों के आधार पर दिया है। उनको अवसर मिला तो वह नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी योजना के तहत हमारे ग्रामीण भाईयों को मजबूत करने के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। उन्होंने एक बड़ा संकल्प लिया। हम सब लोग बड़ी बातें करते हैं, लेकिन जब हम बड़े संकल्प के संघर्ष करने जाते हैं तो उसके रास्ते कठिन होते हैं। उन्होंने एक बड़ा संकल्प लिया-सुपोषण अभियान की छत्तीसगढ़ में शुरूआत की। उन्होंने संकल्प लिया कि 19 हजार गांवों में जैविक खाद का उत्पादन होगा। मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि आने वाले दो सालों में देखियेगा कि अगर देश के अंदर सबसे ज्यादा जैविक खाद का उत्पादक राज्य होगा तो छत्तीसगढ़ होगा। कल बहुत सारी बातें हो रही थीं। महात्मा गांधी जी के लिए बहुत सारी बातें हो रही थीं। आज जब मैं भाषण सुन रहा था तो माननीय रमन सिंह जी कह रहे थे कि महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व को कोई भी छू नहीं सकता है। मैं यहां पर बैठे हुए प्रतिपक्ष के सभी सदस्यों का बहुत सम्मान करता हूँ। मैं उनकी कार्यप्रणाली का भी आदर करता हूँ। मैं जानता हूँ कि वे जमीन से आते हैं, लोगों के बीच से आते हैं। लोग उनको चुनकर भेजते हैं तो कहीं न कहीं जनता की बात करते हैं। मैं आप सबको गांधी जी की एक बात याद दिलाना चाहता हूँ। गांधी जी ने कहा था कि अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने का समान है, जो धरातल की सतह को चमकदार और साफ कर देती है। वैसे ही आप स्वामी विवेकानंद जी की बात कर रहे थे तो मैं आपको स्वामी विवेकानंद जी की बात याद दिलाता हूँ। उन्होंने कहा था कि उठो मेरे शेरों, इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो, तुम एक अमर आत्मा हो। स्वछंद जीव हो, धन्य हो, सनातन हो, तुम तत्व नहीं हो, न शरीर हो। तत्व तुम्हारा सेवक है, तुम तत्व के सेवक नहीं हो। यह बात स्वामी विवेकानंद जी ने कही थी। मैं सम्माननीय प्रतिपक्ष के साथियों ने अनुरोध करता हूँ कि महात्मा गांधी जी की बात को याद कीजिये। कल जो इस सदन के अंदर हमारे महात्मा गांधी की बात हो रही थी, उसके जगह जो गोडसे की बात निकली। आप लोगों के मुंह में ताला बंद था, तो मुझे लगता है कि कहीं न कहीं जैसा पूरा देश भय में है, हमारे प्रतिपक्ष के साथी भी रंगा-बिल्ला के भय में है। रंगा-बिल्ला जिस तरीके से देश में अपना ..।

डॉ0 कृष्णमूर्ति बांधी :- यादव जी, आपने जो शुरूआत किया था तो आपने कहा था कि मैं कोई राजनीतिक बात नहीं कहूंगा, ऐसा संकल्प के साथ शुरू किए थे। लेकिन आपके भाषण का अंत तो राजनीतिक ही चल रहा है।

सभापति महोदय :- देवेन्द्र यादव जी, कृपया समाप्त करें।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री देवेन्द्र यादव :- रंगा-बिल्ला का भय पूरे प्रदेश में जिस तरीके से है, उस तरीके से मुझे लगता है कि आपके दल के अंदर भी है। इसलिए आप मुखरता से बोल नहीं पा रहे हैं। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं , आप लोग जिनके विचारों पर चलते हो, उनकी बात याद दिलाना चाहता हूँ। पंडित दीनदयाल उपाध्याय कहते थे कि किसी सिद्धांत को न मानने वाले अवसरवादी हमारे देश की राजनीति नियंत्रित कर रहे हैं और वह अवसरवादी चेहरे आपके रूप में दिखते हैं। आप एक तरफ गांधी जी की जय-जयकार करते हो और दूसरी तरफ गोडसे की बात पर आपके मुंह में ताला बंद हो जाता है, इससे आपका दोहरा चरित्र दिखता है।

सभापति महोदय :- यादव जी, कृपया समाप्त करें।

श्री देवेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, मैं आप लोगों को यह भी कहूंगा कि अगर आप किसी की नहीं, अभी के जो आपके बाबा हैं, जिनको आप परम आदरणीय मानते हो, आपके बाबा रामदेव । आपके बाबा रामदेव कहते हैं कि विचारों में शुद्धिकरण ही मात्र एक नैतिकता है । तो आप कम से कम अपना दोहरा चरित्र, अपना दोहरी राजनीति खतम कीजिए और एक विचार से आईए। या गांधी जी के विचार से आईए या स्वीकार कीजिए कि आप गोड़से को मानने वाले हो । सभापति महोदय, आज हम लोग गांधी जी को याद करने के लिए यहां उपस्थित हैं । महात्मा गांधी के जन्म दिवस को अहिंसा दिवस घोषित संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया गया है । इससे बड़ी उपाधि हमारे देश के लिए, महात्मा गांधी जी को स्मरण करने के लिए उससे ज्यादा नहीं हो सकती। मैं प्रतिपक्ष के सभी सम्माननीय सदस्यों से यह अनुरोध करूंगा कि अगर आप गांधी जी को मानते हो, अगर आप गोड़से की विचारधारा के खिलाफ हो तो अभी पिछले दिनों में फ्रेंड्स आफ साऊथ एशियन अमेरिकन कम्यूनिटी द्वारा गोड़से अवार्ड की घोषणा की गई है । अगर आप महात्मा गांधी जी के अनुयायी हो, अगर आप गोड़से को नहीं मानते हो तो इस गोड़से अवार्ड की जो घोषणा की गई है, उसके खिलाफ हमारे सामने निंदा कीजिए और हम सभी साथी इसकी निंदा करते हैं । आप आपना दोहरा चरित्र मत दिखाईए । गांधी को मानना है तो भाषाओं में, बोली और भाषणों में मत मानिए, अपने जीवन में अनुसरण कीजिए । सभापति महोदय, आपने बोलने का समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री कुलदीप जुनेजा (रायपुर उत्तर) :- सभापति महोदय, गांधी जी की 150वीं जयंती है और आपने कल से दो दिन का विशेष सत्र बुलाया है, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । सभी वक्ताओं ने अपनी-अपनी बातें रखी हैं । गांधी जी के ऊपर दुष्यंत जी की एक कविता मैं आपको सुनाऊंगा-

मैं फिर जनम लूंगा
फिर मैं इसी जगह आउंगा
उचटती निगाहों की भीड़ में

असंशोधित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

अभावों के बीच
लोगों की क्षतविक्षत पीठ सहलाऊंगा-
लंगड़ाकर चलते हुए पावों को
कंधा दूंगा
गिरी हुई पदमर्दित पराजित विवशता को-
बांहों में उठाऊंगा ।
इस समूह में
इन अनगिनत अचीन्ही आवाज़ों में
कैसा दर्द है
कोई नहीं सुनता !
पर इन आवाजों को
और इन कराहों को
दुनिया सुने मैं ये चाहूंगा ।

ये दुष्यंत जी की कविता है, जो आदरणीय बापू जी के ऊपर लिखी गई थी और हम लोगों ने बहुत सारी बातें की हैं, लेकिन उनके बताए हुए रास्तों पर चलेंगे, तभी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी । सभापति जी, धन्यवाद।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर-चांपा) :- माननीय सभापति महोदय, कल और आज हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर बापू को हम नमन करते हैं, उनके श्री चरणों को प्रणाम करते हैं । इस देश में जय किसान, जय जवान और जय विज्ञान का नारा देने वाले पंडित लाल बहादुर शास्त्री जी को भी हम नमन करते हैं, उनके श्री चरणों को प्रणाम करते हैं । हम इस विधान सभा परिवार को भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने यह विशेष सत्र आहूत किया । उत्तरप्रदेश विधान सभा का भी कल से विशेष सत्र हो रहा है, लेकिन मैं सदन को बताना चाहता हूं कि वहां पर विपक्ष ने विशेष सत्र का वाक आउट कर दिया, जिसमें कांग्रेस भी शामिल है । ये दुर्भाग्यपूर्ण है । जिस बापू के बारे में हम चर्चा कर रहे हैं, बापू कोई व्यक्ति नहीं थे, बापू एक विचारधारा थे । बापू एक सिद्धांत, बापू एक मानवता की प्रतिमूर्ति थे, जिसको पूरा देश नहीं, बल्कि पूरी दुनिया उसको अनुसरण करती थी और आज इस विधान सभा में मैं इस बात को दोहराना चाहता हूं कि जो गायत्री परिवार का मूल मंत्र है कि हम बदलेंगे, युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा, इस अवधारणा को लेकर चलने की आवश्यकता है । हम सब लोग बदलाव की शुरूआत अपने से शुरू करें । माननीय सभापति महोदय, गांधी जी का पूरा जीवन एक पाठशाला है । हम सब लोगों को गांधी जी के पूरे जीवन से सीखने की आवश्यकता है । अभी कई

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सदस्यों ने, सारे सदस्यों ने यहां पर विचार-विमर्श किया । इस सदन ने पूरे बापू के जीवन का वृतान्त यहां पर रखा । लेकिन यह जो चर्चा चल रही है, यह चर्चा दिशाविहीन नहीं होना चाहिये । यह चर्चा सकारात्मक होनी चाहिये । यह चर्चा नकारात्मक नहीं होनी चाहिये । माननीय सभापति महोदय, जब हम गांधी पर चर्चा कर रहे थे तो गोडसे कहां से आ गये, कई लोग कहते हैं कि गोडसे मुर्दाबाद का नारा लगना चाहिये । गांधी जी को हम सब मानते हैं । हिन्दुस्तान की हमारी यह संस्कृति है, कभी भी मरे हुये आदमी का मुर्दाबाद का नारा हम नहीं लगाते ।

श्री अमरजीत भगत :- जो नकारात्मक विचारधारा है, उसके खिलाफ तो आवाज उठेगी ही । और आपका क्या हाल इन लोगों ने कर रखा है । सीधा खड़ा होते नहीं बन रहा है । एक तरफ शर्मा जी, दूसरे तरफ चन्द्राकर जी ।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है, परम ज्ञानी माननीय भगत जी और संसदीय कार्य मंत्री का नंबर 5, थोड़ा समझो और सीखो ।

श्री अजय चन्द्राकर :- परम ज्ञानी आपको पदवी मिल गयी ।

श्री बृहस्पत सिंह :- पंडित शर्मा जी, जिस तरह से आप रामलीला देखते हैं, अंतिम दिन रावण का दहन करते हैं । जब आज सत्र का अंतिम हो रहा है तो गोडसे जी का भी दहन कर लीजिए ना ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय सभापति महोदय, गांधी जी के हम पूरे व्यक्तित्व से, मैं बहुत विस्तार से नहीं जाना चाहता हूँ, हम यह सीखते हैं कि बड़े मन से राजनीति करना चाहिये । व्यापक सोच कर राजनीति करना चाहिये । मैं इस सरकार से कहना चाहता हूँ कि हमारे कवियों ने कहा है कि - छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता ।

माननीय सभापति महोदय, बहुत ज्यादा विस्तार में न जाते हुये, इस सदन में जब हम गांधी जी की चर्चा कर रहे हैं, अहिंसा की चर्चा कर रहे हैं, इस प्रदेश में प्रदेश अध्यक्ष के इलाके में जिस तरीके से हिंसा का तांडव हो रहा है, नक्सलवाल के खिलाफ, माओवाद के खिलाफ, आतंकवाद के खिलाफ, इस प्रदेश में चारो तरफ लूट हो रही है, फिरौती हो रही है, सरे आम सड़कों पर वसूली हो रही है, इसको रोकने के लिए सरकार को कारगर कदम उठाने की आवश्यकता है । हम बहुत सी चर्चा यहां पर किये । इससे अच्छा अवसर नहीं है कि सरकार शराबबंदी की घोषणा कर दे । माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी यहां पर बैठे हैं, उन्होंने चर्चा की और कहा कि यहां पर प्रदेश में गांधी भवन बनवायेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- हाल के अंदर माननीय मुख्यमंत्री जी से ज्यादा प्रभाव संसदीय कार्य मंत्री जी का है । उनके इशारे पर कहां है, सब चले गये हैं, दो चार मौजूद है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- ऐसा बार-बार क्यों बोलते हो, सद्भावना रखो भईया ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री मोहन मरकाम :- टूटे मन से चित्रकूट का प्रभार बना दिये हैं । माननीय शर्मा साहब को दंतेवाड़ा का बना दिये थे । रोड-रोड़ घूम कर आ गये । अब आपको टूटे मन से प्रभार बना दिये हैं, अब क्या करें ।

श्री नारायण चंदेल :- वह तो परिणाम बतायेगा, इस बार । माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी से, माननीय मुख्यमंत्री जी की अनुपस्थिति में कहना चाहता हूॅ, उन्होंने कहा कि हम गांधी भवन बनवायेंगे । हमारी यह मांग है कि प्रदेश में नहीं, बल्कि प्रत्येक जिले में गांधी भवन बनवाने की आप घोषणा करें । प्रत्येक जिले में एक गांधी भवन बनें । मैं माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी से जो यहां पर बैठे हैं, उनसे भी कहना चाहता हूॅ, संस्कृति मंत्री जो आज संस्कृत में बोल रहे थे । माननीय सभापति महोदय, गांधी जी कुष्ठ रोगियों के निदान के लिए उन्होंने लड़ाई लड़ी । मैं सरकार से यह कहना चाहता हूॅ कि महासमुंद और जांजगीर-चांपा जिले में सबसे ज्यादा कुष्ठ रोगी है । आप जांजगीर-चांपा जिले में कुष्ठ रोगियों के लिए कोई सार्थक अस्पताल बनवाने का कष्ट करें। स्वास्थ्य मंत्री जी भी यहां पर हैं, वह हमारे जिले के प्रभारी मंत्री भी हैं। सभापति महोदय, मैं सकारात्मक बात कर रहा हूं। चांपा नगर में भारतीय कुष्ठ निवारण संघ का एक आश्रम है। वहां पर महाराष्ट्र के पुणे के गांव के पास से आकर दामोदर गणेश राव बापट ने पूरा जीवन कुष्ठ रोगियों को समर्पित किया और कुष्ठ रोगियों की सेवा की और वहां पर उन्होंने आश्रम बनाया। मैं प्रभारी मंत्री और मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा कि एक बार उस आश्रम को देखकर आयें। और ऐसे लोगों का सम्मान भी इस गांधी जी की 150वीं वर्षगांठ पर होना चाहिए। सिर्फ बापट जी की बात नहीं है, ऐसे जितने भी लोग इस प्रदेश में ऐसा काम कर रहे हैं, कुष्ठ रोगियों की सेवा कर रहे हैं, दलितों की सेवा कर रहे हैं और समाज सेवा के काम में अग्रणी हैं ऐसे लोगों के सम्मान का कोई कार्यक्रम गांधी जी की 150 वीं वर्षगांठ पर होना चाहिए, यह सरकार को मेरा सुझाव है। मैं बहुत ज्यादा नहीं बोलूंगा, अंत में मैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के बारे में इतना ही बोलता हूं कि गांधी जी इतिहास पुरूष थे।

है समय नदी की धार, जिसमें सब बह जाया करते हैं।

कुछ ऐसे भी होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं।।

श्री अमरजीत भगत :- क्या है ये पहले वाली बात अब चंदेल जी में रही नहीं। ये बगल वाले उनको इतना प्रताड़ित कर दिये हैं। (हंसी) (श्री नारायण चंदेल सदस्य के बगल में श्री अजय चन्द्राकर सदस्य का आसन है।)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव (सिहावा) :- सभापति महोदय, महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती पर मैं सादर नमन करती हूं, प्रणाम करती हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी का जीवन सादा जीवन, उच्च विचार, त्याग तपस्या की मूर्ति थे। अहिंसा और सत्य उनके दर्शन के आधार थे और उसी अहिंसा के

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

शस्त्र से भारत को आजाद कराने के लिए ब्रिटिश साम्राज्य से लोहा लिया। यदि सतय और अहिंसा और प्रेम के द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराने के लिए यदि भारत का जनसैलाब उमड़ा है तो उसका श्रेय आज तक किसी को नहीं गया है वह है महात्मा गांधी जी।

सन् 1893 में दक्षिण अफ्रीका में गोरो और काले का जो भेदभाव था उसका उन्होंने विरोध किया और वहीं से उनके राजनीतिक जीवन की शुरूआत होती है। भारतीय राजनीति में जब वह पदार्पण किए तो भारत को आजाद कराने के लिए उन्होंने तीन बड़े आंदोलन किए- असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन। भारत छोड़ो आंदोलन और द्वितीय विश्व युद्ध के वातावरण से ऐसा लगने लगा था कि अब भारत बहुत जल्द आजाद हो जायेगा और आजादी दिलाने में महात्मा गांधी जी के योगदान को हम कभी भी नहीं भुला सकते और उस समय लोग उन्हें राष्ट्रपिता के रूप में स्वीकारते थे। वह अभी भी राष्ट्रपिता हैं और आने वाले समय में भी बापू हमारे राष्ट्रपिता रहेंगे। आजादी के बाद जब संविधान का निर्माण किया गया तो संविधान के निर्माण में बापू के जो आदर्श थे, चिंतन थे उसको संविधान के Preamble में शामिल किया गया। सामाजिक-आर्थिक न्याय, समानता, स्वतंत्रता ये बहुत ही उच्च कोटि के सामाजिक और राजनीतिक मूल्य हैं जिसको संविधान में स्थान दिया गया है और आज आजादी के बाद जितने भी काम राजनीतिक सत्ता के द्वारा हो रहे हैं, उसमें बहुतायत अंश बापू की जो सोच है, बापू के जो विचार हैं, जिसको प्रत्येक सरकार क्रियान्वित करती आ रही है। मैं उनके कृतित्व और उनके कार्यो और भारत के विकास में जो योगदान है उन्हीं के बारे में मैं कुछ कहना चाहती हूं। अभी तक किसी माननीय सदस्यगण ने महिलाओं के बारे में अपना विचार व्यक्त नहीं किया। चूंकि मैं महिला हूं, इसलिए मैं सबसे पहले मैं महिलाओं के बारे में बापू की जो सोच थी, उसके बारे में मैं अपना विचार रखना चाहूंगी। वे महिलाओं के सुधार की, स्थिति के सुधार के पक्ष में थे और बापू का कहना यह था कि महिलओं को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए। यदि महिलाओं को कमजोर समझते हैं तो वह उनके प्रति अन्याय है, अपमान है। महिलाओं में जो सत्य, अहिंसा और नैतिकता की जो भावना है, सहिष्णुता की भावना है, पुरूषों से कहीं ज्यादा ऊपर है। इसलिए उस समय जो भारत की तात्कालिक स्थिति थी, महिलाओं की दशा बहुत ही कमजोर थी लेकिन बापू ने स्वावलंबी बनाने के लिये महिलाओं की जो पर्दा प्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीति जो प्रचलित थी उसको दूर करने का आह्वान किया। क्योंकि वे जानते थे कि यदि भारत का विकास होगा तो महिलाओं का जब तक विकास नहीं होगा और आज हम महाशक्ति का सपना देख रहे हैं, जब तक महिलाओं का बराबरी से विकास नहीं होगा, जब तक सदन में महिलाएं बराबरी से नहीं बैठेंगी तब तक भारत को महाशक्ति बनाने में हम कामयाब नहीं होंगे, लेकिन उस स्थिति में बापू यह बात सोच सके थे। दूसरा मूल्य समानता और सहिष्णुता है तो हमारे यहां भारत विविधता में एकता है। बहुत सारे समाज के लोग रहते हैं, बापू का मानना था कि सारे समाजों का, सारे

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

धर्मों का सम्मान होना चाहिए। सभी के प्रति सहिष्णुता होना चाहिए, लेकिन मैं आज राष्ट्रीय राजनीति में देखती हूं तो एक धर्म की बात बहुत होती है और बाकी धर्म जो उपेक्षित सा, ठगा सा महसूस कर रहे हैं, इस पर हम सभी नेताओं को धार्मिक सहिष्णुता और भारत के सभी वर्ग के लोगों का सम्मान के लिये काम करना चाहिए। समानता और सहिष्णुता दो बड़े मूल्य हैं, मैं समानता के बारे में यह कहना चाहती हूं कि समानता में भी हम लोगों को बहुत सारा काम करना है। क्योंकि जब तक पूरे भारत में समानता स्थापित नहीं होती तब तक बोलना दोगलापन होगा। क्योंकि समानता के क्षेत्र में देखते हैं तो मैं ज्यादा समानता की बात नहीं कहूंगी, अगर एक समानता शिक्षा की समानता यदि पूरे भारत में स्थापित हो जाती है तो समानता के ये मूल्य सार्थक हो जायेंगे और सभी व्यक्ति अपना अपना विकास करेंगे

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- सभापति महोदय, मैं दूसरी बात अश्पृश्यता की करना चाहती हूं। इसके लिये भी बापू ने कहा, मद्य निशेध के बारे में कहा, न तो उत्पादन होगा न तो बिक्री होगा। उसी तरह बुनियादी शिक्षा....।

सभापति महोदय :- एक मिनट रूकिये, सभा के समय में 2.30 बजे तक वृद्धि की जाये। मैं समझता हूं सदन सहमत है।

(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- सभापति महोदय, दो मिनट, एक तो सत्ता का विकेन्द्रीयकरण करना चाहते थे, आर्थिक विकेन्द्रीयकरण चाहते थे, कुटीर उद्योग को आधार बनाना चाहते हैं, क्योंकि आज भारत की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है। इसलिए यदि बेरोजगारी को दूर करना है, भारत के प्रत्येक व्यक्ति को स्वावलंबन लाना है तो कुटीर उद्योग को किसी भी हालत में बढ़ावा देना होगा और प्राथमिक शिक्षा में दस्तकारी शिक्षा, टेक्निकल शिक्षा, यदि आ जायेगा तो गांधी का सपना पूरा हो जायेगा। बस इन्हीं शब्दों के साथ मैं यह कहना चाहती हूं कि :-

"आजादी मिल गई, खडग वीणाढाल।
साबरमती की संत तूने कर दिया कमाल,
रघुपती राघव राजाराम" ।

सभापति महोदय :- श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू (धमतरी) :- माननीय सभापति महोदय, कल 2 अक्टूबर और आज 3 अक्टूबर लगभग दो दिन यह सदन चला और सभी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सभी विषयों और उनके सभी विचारधाराओं पर अपनी-अपनी बातें रखीं और चूंकि मैं धमतरी विधान सभा से आती हूँ। मैं अपने आप को बहुत गौरावान्वित महसूस करती हूँ कि धमतरी की वह पुन्य धरा थी जहां राष्ट्रपिता

अशासकीय/प्रकाशन के लिए नहीं

महात्मा गांधी जी ने 21 दिसम्बर, 1920 को मकईबंद के पास अपनी एक बड़ी सभा की और वहां के लोगों का देशप्रेम और देशभक्ति की भावना से वे इतने गदगद हुए और उन्हें यह कहना पड़ा कि यहां के किसानों का आन्दोलन, देशभक्ति, देशप्रेम इतना अटूट है कि बिहार के चंपारण्य का आन्दोलन और गुजरात के बांदोही के आन्दोलन से भी मजबूत आन्दोलन यहां के लोगों का है। चूंकि धमतरी के स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास को कहीं देखा जाए तो जब तक यदि कंडेल के नहर सत्याग्रह का जिक्र नहीं होगा तो शायद यह अधूरा सा लगेगा। मैं इसीलिए यहां पर कंडेल के नहर सत्याग्रह का उल्लेख करूंगी, जो पूरे देश को आकर्षित कर देने वाला सत्याग्रह था और चूंकि यह सत्याग्रह अहिंसात्मक रूप से था इसीलिए गांधी जी इससे और ज्यादा प्रभावित हुए, क्योंकि वह सत्य और अहिंसा की राह पर चलने वाले थे तो उस समय जब प्रथम बार वहां के कंडेल ग्राम के प्रमुख मुखिया बाबू छोटे लाल श्रीवास्तव जी थे और वहां के लोग उन्हीं के पीछे-पीछे चलते थे। वर्ष 1912 को प्रथम बार रूद्री बैराज बना और जब वहां पर महानदी परियोजना की शुरूआत हुई तो उस समय वहां नहर नाली के माध्यम से आसपास के लोगों को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करायी जाती थी, लेकिन अंग्रेज और उनके नौकरशाही इतने हावी हुए कि उन्होंने सोचा कि यदि हम किसानों से इसके लिए पैसा लें तो और उचित होगा, इससे अंग्रेजों का खजाना भरेगा। उन्होंने वहां के किसानों के साथ 10 वर्ष का अनुबंध करना चाहा। किन्तु अनुबंध की राशि इतनी अधिक थी कि वहां पर उतनी राशि में स्थानीय एक तालाब बनाया जा सकता था। अत: किसानों ने मना कर दिया कि हमें आपसे अनुबंध नहीं करना है। लेकिन किसानों के मना करने पर, अंग्रेजों को उनकी बातों का पता चला तो उन्होंने अपनी हार समझी और एक दमन चक्र रचते हुए, वहां के किसानों पर एक झूठा आरोप लगाया कि उन्होंने नहर नालियों को तोड़कर पानी अपने खेतों में लिया है, जो गलत था। लेकिन उनकी यह दमन चक्र नीति काम कर गई और उन्होंने एक चक्रव्यूह रचा और वहां पर उसके तहत जितने किसान थे, उनकी चल और अचल संपत्ति को कुर्क करने का निर्णय लिया और यहां तक उनकी संपदा के साथ-साथ उनकी जो गायें थीं, उन्होंने उसको रख लिया और उनका यह विचार था कि यदि हम इनके पशु धन, संपदा को नीलाम करते हैं तो हमें वह राशि मिल जाएगी। जिस प्रकार से प्रथम बार धमतरी का इतवारी बाजार जो बहुत प्रसिद्ध और प्राचीनतम् बाजार है, वहां उन्होंने पशु धन, ले ला कर नीलामी करने का निर्णय लिया। मैं धमतरी के लोग देशप्रेमी, देशभक्त, नवजवान साथियों की बात करती हूँ कि वे नीलामी के पूर्व उस बाजार में पहुंच जाते थे और वहां के लोगों से आग्रह करते थे कि आपको नीलामी में भाग नहीं लेना है। चूंकि इस प्रकार समय बीतता गया, यहां तक की धमतरी के कंडेल के पशुओं की नीलामी दुर्ग और भांटापारा तक करने का का प्रयास किया गया, चूंकि अंग्रेज अपने इस प्रयास में सफल नहीं हुए और उन्होंने द्वितिय बार फिर दमन चक्र रचते हुए, बाबू छोटे लाल श्रीवास्तव जी और उनके भाई, दोनों को ही गिरफ्तार कर लिया। चूंकि वहां पर बहुत ही विपरित परिस्थितियां बन

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गईं और उस समय धमतरी एक तहसील था और तहसील के बड़े-बड़े नेताओं, जिसमें बाबू छोटे लाल श्रीवास्तव की गिरफ्तारी को देखते हुए, वहां पंडित सुन्दरलाल शर्मा, नत्थू जी जत्ताप ऐसे आदि बड़े-बड़े नेताओं ने मिलकर इस विषय को जाना, समझा और उन्होंने कहा कि यह नेतृत्व हमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी को सौंप देना चाहिए और जैसे ही यह अंग्रेजों को पता चला कि धमतरी की धरा पर महात्मा गांधी का आगमन होने वाला है, उससे पूर्व रायपुर के डिप्टी कमिश्नर को यह कार्य सौंपा गया कि वह कंडेल में जाये और कंडेल की वस्तुस्थिति पता करें। और जब वह वहां पर पहुंचे और यह देखा गया कि वहां के किसानों पर 4 हजार रुपये का जो जुर्माना लगाया गया था, वह निराधार था। चूंकि वहां पर जो परिस्थितियॉ बनी हुई थी और गांधी जी को यहां पर आने का निमंत्रण दिया गया था। गांधी जी धमतरी की उस पवित्र धरा पर पहुंचे और उन्होंने एक बड़ी सभा को संबोधित किया। सभा स्थल पर जैसे ही वह उतरे, उनका मंच तक जाना बहुत कठिन था, लेकिन उमरशेत नामक कुरूर के एक व्यापारी ने उन्हें अपने कंधो पर उठाकर मंच तक लेकर गये। वहां के बाजीराव कृदत्त जी प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, उन्होंने अपनी तरफ से महात्मा गांधी जी को भेंटस्वरूप 501 रुपये की भेंट दी और ये धमतरी का इतिहास रहा है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति जी, माननीय मुख्यमंत्री जी का 6 तारीख को कंडेल की धरा पर आगमन है और शायद उनकी कुछ पदयात्रा है। मैं इस सदन को अवगत कराना चाहती हूं कि कंडेल की इस पवित्र धरा को मैंने भी विधायक आदर्श ग्राम के रूप में गोद लिया है। चूंकि बापू जी के हर विषय में अलग-अलग बातें रहीं, अलग-अलग विचारधारा रही। यहां पर मैं पंचायती राज का उल्लेख करना चाहती हूं। बापू जी हमेशा से यही चाहते थे कि मेरे देश के 7 लाख गांव स्वावलंबी बनें। वह किसी और पर निर्भर न रहें। वह स्वयं अपने कार्यों को जानें-समझें और प्राथमिकता से जिस कार्य को उन्हें करना है, वहां के पंचायत प्रतिनिधियों को अधिकार दिया जाये।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, जब से अभी लगभग 8 महीने से नई सरकार आई है, पंचायत प्रतिनिधियों का अधिकार छिन गया है। वहां पर काम अधिकारियों के मन के मुताबिक होता है। यदि पंचायत प्रतिनिधि अपने काम को करवाना चाहते हैं और यदि अधिकारी के मन मुताबिक काम नहीं होता तो या तो सरपंचों पर एफ.आई.आर. की जाती है, प्रताड़ित किया जाता है या जनप्रतिनिधियों पर कोई न कोई आरोप लगाया जाता है। माननीय सभापति महोदय मैं इस सदन के माध्यम से इस बात को इसलिए अवगत कराना चाह रही हूं क्योकि बापू जी की मंशा थी कि उनके

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ग्रामीण क्षेत्र आगे बढ़ें, वह स्वावलंबी बनें, लेकिन उनकी इस मंशा को कुचला जा रहा है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह (तखतपुर) :- माननीय सभापति महोदय, मुझे बोलने का अवसर देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आज मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझती हूं कि उस विधानसभा का हिस्सा हूं जो विधानसभा बापू की 150वीं जयंती को वर्ष भर मनाने के उद्देश्य से 2 अक्टूबर और 3 अक्टूबर 2019 को विधानसभा का विशेष सत्र कर रही है। कल 2 अक्टूबर गांधी जी की जयंती थी, स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती थी। उन दोनों ने हमारे देश के लिए जो अविस्मरणीय योगदान दिया है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। मैं बापू और शास्त्री जी दोनों का नमन करती हूं और दोनों को स्मरण करते हुए अपनी बात कहना चाहती हूं। मैं बिलासपुर जिले में गांधी का आगमन का जिक्र करते हुए अपनी बात शुरू करूंगी। गांधी जी का आगमन बिलासपुर में भी हुआ था। हमारे यहां शनिचरी पड़ाव एक जगह है, जहां पर गोड़पारा बस्ती है, गोड़पारा में अग्निहोत्री जी के घर में उनका ठहरना हुआ था। वह कुछ घंटे के लिए आये थे। शनिचरी पड़ाव में उस जगह अभी भी जय स्तम्भ है। जो मेरे पिताजी थे, उनका कहना था कि जिस दिन गांधी जी वहां आये थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह तो अमितेश जी घर में भी गांधी चौरा है। उनके घर में आये थे, भजन किये थे।

सभापति महोदय :- चन्द्राकर जी, आप टोकिये मत, कृपया बोलने दीजिए।

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- गांधी जी के आने के बाद अग्निहोत्री जी ने अपना सब कुछ दान कर दिया था। मैं वही उल्लेख करना चाह रही हूं कि जितनी महिलायें उपस्थित थीं।

श्री अमितेश शुक्ल :- सभापति जी, मुझे बोलने का मौका मिलेगा, मैं बोलूंगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपको बोलने के लिए समय मांगना पड़ रहा है? सात पीढ़ियों की सेवा किसके पास है?

श्री शिवरतन शर्मा :- गांधी जी के सही कथनों का पालन करना है तो सी.एम. साहब के सामने सत्याग्रह में बैठ जाओ।

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- भैया, महिलायें अध्यक्षीय दीर्घा से चली गईं, जब महिलायें अध्यक्षीय दीर्घा में आई थीं तो सब खड़े होकर खूब बोलने लग गये थे।

श्री बृहस्पत सिंह :- महिला बोल रही हैं, व्यर्थ की बात मत रखें।

असंशोधित/मुद्रण के लिए नहीं

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- सभापति महोदय, मैं ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूं कि जब अध्यक्षीय दीर्घा में बहुत सारी महिलायें आ करके बैठ गई थीं तो शराबबंदी पर सब बोलने लग गये थे। मैं सदन का विशेष ध्यान दिलाना चाहूंगी। जब गांधी जी की वह सभा हुई थी, उसमें सभी महिलाओं ने अपने गहने उतारकर गांधी जी को दे दिये थे । निश्चित तौर पर यदि एक परिवार में चार लोग रहते हैं तो सभी के बीच में मतभेद होते हैं, किसी ने इतिहास को किसी तरह लिखा तो किसी ने इतिहास को किसी तरह लिखा । अपनी-अपनी सोच है, अपना-अपना दर्शन है । जिनको सकारात्मक गांधी जी लगे उन्होंने गांधी जी के सकारात्मक दर्शन पर ध्यान दिया है । अगर सबके मतभेद थे लेकिन उस मतभेद से अलग-अलग समय में परिवर्तन हुए और अंतत: अंग्रजों को बाहर जाना पड़ा, जिन अंग्रेजों ने एक दिन गांधी जी को ट्रेन के डिब्बे से बाहर फेंका था उन गांधी जी ने अंग्रेजों को भारत से बाहर कर दिया, यह कांग्रेस थी । मैं बार-बार यह कहना चाहूंगी कि उस आंदोलन के जो अग्रणी लोग थे, उस आंदोलन के सामने जो झंडा उठाये लोग थे वे कांग्रेस के लोग थे, इसे कोई नकार नहीं सकता, इतिहास को कोई झूठला नहीं सकता । सन् 1992 में मुझे गुजरात जाने का सौभाग्य मिला और उस समय मैं पोरबंदर गांधी जी के घर गयी थी, उनके भवन को जो स्मारक संग्रहालय बना दिया गया है वहां मुझे सपरिवार जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं कहना चाहूंगी कि गांधी जी से पहले हिंदुस्तान में ऐसा उभरकर विश्व परिदृश्य में कोई भी व्यक्तित्व नहीं आया था । भाजपा के अभी पूर्व मुख्यमंत्री जी ने स्वयं स्वीकारा कि जिस दक्षिण अफ्रीका में हीरे का उत्खनन होता था वहां से 21 वर्षों के संघर्ष से एक हिंदुस्तानी हीरा निकलकर आया जो भारत के क्षितिज में चमका वह मोहनदास करमचंद गांधी हैं । रविन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें महात्मा कहा, सुभाषचंद्र बोस ने उन्हें राष्ट्रपिता कहा, हम सब जो स्थापित इतिहास है उसे नकार नहीं सकते । मैं कहना चाहूंगी कि मेरी पीढ़ी, जो मेरे साथ के लोग हैं मध्यप्रदेश में एक पुस्तक चला करती थी जिसका नाम होता था सहायक वाचन । जिसमें गांधी जी के बारे में आठवीं क्लास में पूरी किताब गांधी के ऊपर एक होती थी और उसमें हमें परीक्षा देनी होती थी तो यह कहना कि आपने गांधी को कहां रखा, हम गांधी को पढ़ाते थे, आज की तारीख में वह गांधी पढ़ाई से विलोपित किन्होंने कर दिया यह शोध का विषय है ।

माननीय सभापति महोदय, एक कविता जो कमला चौधरी जी ने लिखी थी उसका भी जिक्र करना चाहूंगी कि मॉ खादी की चादर दे दे । भैया, अमरजीत भगत जी ने एक बात कही थी ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- भाभी जी, एक मिनट । जैसा आपने कहा कि गहने वगैरह सब गांधी जी को देकर स्वाधीनता आंदोलन को सपोर्ट किये थे । उसी प्रकार आपको जितने गिफ्ट मिले थे, सरकार से जाते समय श्री चंद्राकर भाई आपने उसको वापिस किया कि नहीं किया ? (हंसी)

सभापति महोदय :- कृपया आप भाषण जारी रखें ।

असंशोधित/पुनरावलोकन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय परमज्ञानी जी, माननीय अमितेष शुक्ला जी की आवाज को दबाया जा रहा है । वे बोलने चाहते हैं लेकिन उनको बोलने का अवसर संसदीय कार्यमंत्री जी नहीं दिला रहे हैं । (हंसी) अभी उन्होंने खड़े होकर निवेदन किया कि मुझे बोलने का अवसर नहीं दिया जा रहा है । संसदीय कार्यमंत्री जी, एक सीनियर लीडर की आवाज को दबा रहे हैं, यह ठीक नहीं है ।

श्री अमरजीत भगत :- शर्मा जी, श्री अमितेष जी की कद-काठी, पर्सनेलिटी से क्या ऐसा लगता है कि कोई इनको दबा सकता है ? (हंसी)

सभापति महोदय :- कृपया आप भाषण जारी रखें ।

श्री अमितेष शुक्ल :- अभी यहां हमारे माननीय सभापति जी हैं इसलिये कृपया चिंता न करें ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, सभा का सौभाग्य है कि शुक्ल परिवार की पीढ़ी का एक सदस्य यहां मौजूद है । जिन्होंने गांधी जी के साथ काम किया है, यदि वे बोलना चाहते हैं तो जरूर उनको अवसर दिया जाना चाहिए । माननीय सभापति महोदय, अगर समय की कमी है तो हम अपनी तरफ से एक सदस्य हटा देंगे ।

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैं कमला चौधरी जी की उस कविता को दोहराते हुए हम सबको बचपन में ले जाना चाहूंगी कि -

मॉ खादी की चादर दे दे, मैं गांधी बन जाउं,
सब मित्रों के बीच बैठकर रघुपति राघव गाउं,
निकर नहीं धोती पहनूंगा, खादी की चादर ओढ़कर घड़ी कमर में लटकाउंगा,
सैर सबेरे कर आउंगा, मैं बकरी का दूध पीउंगा,
जूता अपना आप सिउंगा, आज्ञा तेरी मैं मानूंगा,
सेवा का प्रण मैं ठानूंगा, मुझे रूई की पोनी दे दे, चरखी खूब चलाउं,
मॉ खादी की चादर दे दे, मैं गांधी बन जाउं । (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- गांधी जी ने निरीह प्राणियों पर दया भाव रखते थे, वे समझते थे कि वे जो करेंगे वह समाज में अनुकरणीय होगा । गांधी जी निरीह प्राणियों के प्रति सेवा भाव रखते थे । रिचर्ड एटनबरो की गांधी फिल्म सबने देखी होगी । अगर सहायक वाचन नहीं पढ़ा, अगर गांधी दर्शन नहीं पढ़ा तो रिचर्ड एटनबरो की गांधी फिल्म देखें । रिचर्ड एक विदेशी नागरिक हैं उन्होंने गांधी पर फिल्म बनाई और उस फिल्म की विश्व पटल पर चर्चा हुई । गांधी की चर्चा विश्व पटल पर होती है । गांधी जी में निरीह प्राणियों के प्रति जो सेवा भाव था, हमारे यहां ग्राम सुराज अभियान में हमने जो प्रस्ताव रखे हैं, हमारे मुखिया भूपेश भइया ने जो प्रस्ताव रखा है उसमें गायों की दुर्दशा के लिए

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

व्यवस्थापन की जवाबदारी ली गई है । सभापति महोदय, मुझे पता नहीं कि सदन में कहना चाहिए या नहीं, लेकिन मैं कहना चाहूंगी पिछले 6 वर्षों से निरीह मनुष्यों को मॉब लिंचिंग के नाम पर पशुधन का परिवहन करने वालों को मार मार कर हत्या कर दिये जाने के कारण पशुओं के व्यापार में जो दिक्कत आई है, उसके कारण भी छत्तीसगढ़ में लावारिस जानवरों के पाये जा रहे हैं। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद् ।

श्री बृहस्पत सिंह (रामानुजगंज) :- माननीय सभापति महोदय, गांधी जी की 150 वीं जयंती के शुभ अवसर पर हम लोग बापू को नमन करते हैं । इस अवसर पर 2 अक्टूबर को हम लाल बहादुर शास्त्री जी को शत् शत् प्रणाम करते हैं । 2 अक्टूबर 1869 से 30 जनवरी 1948 के बीच इस धरती पर एक महान् आत्मा आई। 28559 दिनों तक बापू इस धरती पर रहे । 14 वर्ष की आयु में उनकी शादी हो गई थी । 19 साल की आयु में जहाज से पढ़ने के लिए विदेश गए थे । 22 साल की उम्र में वे बैरिस्टर की पढ़ाई करके स्वदेश वापस आए थे । सभापति महोदय, 30 जनवरी 1948 में उनकी शहादत हो गई थी, वे एक महान् आत्मा थे, इस दौरान उन्होंने हिंदुस्तान ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में अपनी एक पहचान बनाई, अलख जगाई । आज दुनिया के 100 से अधिक देशों में उनकी मूर्तियां स्थापित करके लोग गांधी जी को याद करते हैं । इसी अवधि में 78 वर्ष 02 माह 29 दिनों की जिंदगी में महात्मा जी ने बैरिस्टर की पढ़ाई की, आंदोलन किया, उपवास किया, जेल गए, आजादी की लड़ाई लड़ी, महिला और पुरूषों के बीच के भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया । उस समय ऐसे हालात थे कि छुआछूत के कारण एक इंसान दूसरे इंसान के हाथ का छुआ हुआ पानी भी नहीं पीता था । एक इंसान दूसरे इंसान का छुआ हुआ खाना नहीं खाता था । कोई अछूत पानी भर लेता था तो उस स्थान को साफ किया जाता था। इन सब कुरीतियों को मिटाने का काम बापू ने किया ।

सभापति महोदय, गांव की जो व्यवस्था के बारे में उन्होंने सपना देखा था । उन्हें समय के साथ सरकारों ने पूरा करना शुरू किया । बापू यह कहते थे कि यदि शहर से गांव की ओर रास्ता जाता है तो गांव से भी शहर की ओर रास्ता आता है । बहुत सारे वक्ताओं ने बातें बताई हैं । मैं बहुत ज्यादा न कहते हुए इतना ही कहुंगा कि बापू कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे, समाज सेवक रहे, महान् आत्मा रहे । बगैर गेरूआ वस्त्र पहने भी महात्मा कहलाए । अभी तो गेरूवा वस्त्र पहनकर लोग जय श्रीराम बोलते हैं । लेकिन बापू ने कभी ऐसा नहीं किया, बिना वेशभूषा के भी वे महात्मा कहलाए और हिंदुस्तान ही नहीं पूरी दुनिया में महात्मा कहलाए । सभापति महोदय, देश की आजादी के साथ-साथ, किसी जाति, किसी धर्म के साथ बिना भेदभाव के सभी को समान रूप से जीने का रास्ता दिखाया । सभापति महोदय, उन्होंने ग्राम सभा का सपना देखा । बापू से प्रभावित होकर जय जवान-जय किसान का नारा शास्त्री जी ने दिया । सभापति महोदय, बताना चाहूंगा कि 350 साल अंग्रेजों ने हमको लूटा, इसके बाद जब हमारा

असंशोधित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

देश आजाद हुआ तो हमारे देश में खाने के लिए अनाज नहीं होता था, जिसको बापू ने सहकारिता के माध्यम से सपना देखा था जो हमारे भारत के कांग्रेस के नेताओं ने शुरूआत की है। माननीय सभापति महोदय, उस समय देश में उतना अनाज नहीं होता था। आजादी के बाद भी विदेशों से बहुत सारा अनाज आता था। हम लोग जब छोटे थे, पढ़ते थे..।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप हो दूसरे के भाषण में बहुत खड़े होते हो। किसमें मारना है, चप्पल पकड़कर या कॉलर पकड़कर या जूता में, आप यह बताओ। उधर अधिकारी लोग बैठे हैं, इंतजार कर रहे हैं कि आप उसको किसमें मारोगे? आप इसमें बात करो। आपका जो गांधीवाद है, आप उसमें बात करो। इधर-उधर की बात छोड़ो।

श्री बृहस्पत सिंह :- गोडसे के अनुयायी, थोड़ा शांत तो रहिए।

श्री देवेन्द्र यादव :- जब हम इनसे पूछते हैं कि ये गोडसे को मानते हैं या गांधी जी को मानते हैं, तब ये चुप रहते हैं। तब कोई जवाब नहीं आता है। ऐसे में इनके जवाब आते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप अपने माननीय मुख्यमंत्री जी की तरह गांधीवाद को अपनाओ और घोषणा करो कि मैं अपने खानदान के दो बार को बंद करूंगा। आप यहां यह बात बोलिये। अपने खानदान के दो व्यापार को बंद करूंगा। बार को बंद करूंगा, यह घोषणा करो।

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, लखमा जी के विभाग का इन पर प्रभाव दिख रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप बस गोडसे-गोडसे मत करो। अच्छा अब बोलिए कि चप्पल से मारेंगे या जूता से मारेंगे। कॉलर पकड़कर मारेंगे, इसमें प्रकाश डालिए। इधर-उधर को छोडिए।

श्री देवेन्द्र यादव :- जी, निश्चित रूप से आपकी तरफ से यह बात आ रहा है कि आप किस विचारधारा से जुड़े हुए हैं, इसके बाद हम सारी बातें करेंगे।

सभापति महोदय :- बृहस्पत जी, कृपया अपनी बात पूरी करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- बृहस्पत जी, आप गांधीवाद के नये प्रवर्तक हैं। आप और कवासी लखमा जी।

श्री बृहस्पत सिंह :- मैं थोड़ा सा बस बोलूंगा।

सभापति महोदय :- कृपया अपनी बात समाप्त करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- (व्यवधान) बृहस्पति जी को बोलिए इन्होंने गांधीवाद को नये तरीके से परिभाषित किया है। काला पत्थर से मारने की बात की है। जूता से मारने की बात की है। चप्पल से मारने की बात की है। उन्होंने एक नई परिभाषा दी है। सदन उस नई परिभाषा को सुनना चाहता है। हम सब उसके दृष्टांत को सुनना चाहते हैं। उसका कैसे क्रियान्वयन होगा, हम सब जानना चाहते हैं।

असंशोधित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, जब सदन चले तो एक कैम्प जरूर लगवा दिया करे ताकि माननीय सदस्यों को जिस-जिस तरह की बीमारी है, उनके चेकअप के बाद सदन के अंदर आने दिया जाए। मेरे ख्याल से ये लगातार दवाई खाना भूल गये हैं और जब सदन में आते हैं तो हमेशा भूल जाते हैं। मैं बताना चाहूंगा कि बापू ने हम लोगों को आजादी दी। आंदोलन करके सिखाया। हमारे देश को आजाद कराया और इतना ही नहीं सभी को सिखाने का काम किया।

श्री शिवरतन शर्मा :- मगर बापू ने कब किसको जूता मारने के लिए कहा, आप यह भी बताओ और कब चप्पल मारने के लिए कहा यह भी आप बताओ।

श्री बृहस्पत सिंह :- बता रहा हूं। धीरज रखिए, बता रहा हूं। बापू ने यह भी कहा।

श्री अजय चन्द्राकर :- कब कहा? कहां कहा ? (हंसी)

श्री देवन्द्र यादव :- जूते चप्पल की लड़ाई हम लोगों ने वीडियो में देखी है। सांसद और आपके विधायक के बीच में।

श्री बृहस्पत सिंह :- ये जो बार-बार प्रश्न कर रहे हैं, ये उस स्कूल के स्टूडेंट हैं, उस संस्था से प्रशिक्षण प्राप्त किये हैं, जिनकी स्थापना 27 सितंबर, 1925 में हुआ था। उस संस्था से ये प्रशिक्षण प्राप्त करके आये हैं, इसलिए बार-बार इनसे उलझना अच्छा नहीं है। देश आजाद होने के बाद भी 50 साल तक झंडा नहीं फहराया गया है। 50 साल तक झंडा नहीं फहराया गया है। ये उस स्कूल के स्टूडेंट हैं। इसलिए उनको बोलने की आदत बनी हुई है।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम लोगों को उस संस्था से प्रशिक्षण प्राप्त करने का गर्व है। हम संस्था में स्वयं महात्मा गांधी जी के साथ हैं।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- वे उस विषय में आये ही नहीं है। जूता, चप्पल, कॉलर पकड़कर करने वाली बात।

श्री मोहन मरकाम :- चन्द्राकर साहब, हमने वीडियो देखा है। आपके सांसद और हमारे विधायक जूता चप्पल वाला हमने वीडियो के माध्यम से देखा है।

श्री बृहस्पत सिंह :- देश की आजादी होने के बाद हिन्दुस्तान के लोगों ने तय किया कि बापू हमारे महान आत्मा हैं। उन्होंने हमें आजादी दिलाई है, इसलिए भारत की जो मुद्रा होगी, उसमें गांधी जी की फोटो होगी और उस गांधी जी से इतना प्रेम हो गया। दूसरे गुजरात के नेता हो गये जो उस बापू के चश्मे को लेकर पूरी दुनिया में घूम रहे हैं। यह सही बात है। बापू ने कहा था उद्योग-धन्धों को हम गांव में लेकर जायेंगे, लेकिन अभी चश्मा लेकर दुनिया में घूम रहे सूट-बूट वाले साहब, पूरे उद्योगपतियों के हाथ में सौंपते जा रहे हैं।

असंशोधित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- कवासी लखमा जी उधर सो रहे हैं। मैं कवासी लखमा का त्याग करता हूँ, बोलिये। बोलिये, मैं कवासी लखमा जी का त्याग करता हूँ। गांधी जी के रास्ते पर चलता हूँ।

श्री बृहस्पत सिंह :- पहले आप त्याग करके आओ। अभी सुबह चेक करवा के देखिये, अभी भी मिल जायेगा। सुबह ही लिए हैं।

सभापति महोदय :- माननीय बृहस्पत सिंह जी, कृपया समाप्त करिये। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैं अंत में बताना चाहूंगा कि..।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें। माननीय पुन्नूलाल मोहले जी। कृपया समाप्त करें। आपने काफी लंबा समय ले लिया है।

श्री बृहस्पत सिंह :- सभापति महोदय, लास्ट। सभापति महोदय एक मिनट, मैं एक मिनट के अंदर समाप्त कर रहा हूँ। सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहूंगा कि 30 जनवरी, 1948 को बापू की हत्या हुई। गोडसे बैरिस्टर साहब ने किया। इसका षड़यंत्र कहां रचा गया था ? चन्द्राकर साहब जरा सुन लीजिये। बापू की हत्या का षड़यंत्र कहां रचा गया था, आप सुन लीजिये साहब, आप बहुत बोलते हैं। [xx][6] ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, यह गलत आरोप लगाया जा रहा है। इसको विलोपित किया जाना चाहिए। स्वयं महात्मा गांधी दो बार आर0एस0एस0 से काम करने गये हैं। यह गलत आरोप लगाया जा रहा है।

श्री बृहस्पत सिंह :- यह सही नहीं है तो बापू महात्मा गांधी जिंदाबाद और नाथूराम गोडसे मुर्दाबाद की तरह बताईये।

सभापति महोदय :- बृहस्पत सिंह जी, कृपया समाप्त करें। ....(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, यह घोर आपत्तिजनक है। इसको बिना किसी तथ्य के, या तो तथ्य रखें या इसको विलोपित किया जाये। यह आरोपात्मक है। ....(व्यवधान

सभापति महोदय :- इसको दिखवा लेंगे। ....(व्यवधान) कृपया आप शांत रहें। आप कृपया बैठे। (व्यवधान) यह दिखवा लेंगे न। ....(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- यह इतिहास के पन्नों में लिखा है। ....(व्यवधान)

सभापति महोदय :- यह आरोपित बात हो रही है, इसको विलोपित किया जाये। ठीक है, हो गया।

डॉ0 शिवकुमार डहरिया :- माननीय नेता जी, आपको बोलने का अवसर मिलेगा, बोल लीजियेगा। आप खड़े हो जाते हैं तो अच्छा लगता नहीं है।

[xx] [6] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- बात बोलने का नहीं है। जब कल आपको बोलने का अवसर दिया गया, आपका नाम पुकारा गया तो आप गांधी जी के नाम पर दो शब्द नहीं बोले।

डॉ0 शिव कुमार डहरिया :- मैं तो पहले ही बता दिया था गांधी जी के बारे में, ...(व्यवधान)

श्री धरम लाल कौशिक :- कल गांधी जी के बारे में बोलने का अवसर दिया गया, लेकिन नहीं बोल पाये। ये गांधीवादी विचारधारा के लोग हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता जी, वह हमारी टिप्पणी से परे हैं।

डॉ0 शिव कुमार डहरिया :- गांधी जी हमारे दिल में बसते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- वह नंबर-1 हैं।

श्री धरम लाल कौशिक :- हमने आपको देख लिया।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह हमारी टिप्पणी से परे हैं। हम लोग उनके ऊपर कोई टिप्पणी नहीं करते हैं।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय सभापति महोदय, मैं महात्मा गांधी जी की 150 वी जयंती को नमन करता हूँ। मैं माननीय अध्यक्ष जी और विधान सभा के पूरे सदस्यों सहित मुख्यमंत्री जी , विपक्ष के नेता को धन्यवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ, जिन्होंने सत्र बुलाया। इसी अवसर पर लाल बहादुर शास्त्री जो पूर्व प्रधानमंत्री थे, उनका भी जन्म दिन है।

महात्मा गांधी बने थे बैरिस्टर,
सुधार दिए देश का स्तर,
वह थे महात्मा गांधी बैरिस्टर,
सुन लो मेरे भाभी, भाई और सिस्टर।
वे बैरिस्टर बनकर आकर सेवा की।
सेवा की गंदी बस्ती गंदी,
मैं करता हूँ उनकी बन्दगी।
मैं आप सबको करता हूँ नमस्ते,
गांधी जी की बात को बहुत दो दिन तक हैं आप समझते।
उनका जन्म हुआ था पोरबंदर,
और कहते हैं कि गांधी जी के तीन बंदर,
और आजादी के आंदोलन से अंग्रेज हो गए पर सात समंदर,
जिसको कहते हैं कि गांधी के तीन बंदर,
गड़बड़ करोगे तो हो जाओगे अंदर।

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, मैं सबको धन्यवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ। महात्मा गांधी जी चरखा चलाया करते थे, लोगों को बुलाया करते थे, गरीबों की सेवा करते थे। मजदूरों को मजदूरी देते थे, बेकारों को बेकारी प्रथा मिटाते थे, बेकारी दिलाते थे-रोजगारी, आज मना रहे हैं हम जयंती का त्यौहार, हमारा कैसा होना चाहिए व्यवहार ।

समय :
2:00 बजे

ग्रामोद्योग बनाना है, आगे रोजगार को बढ़ाना है और गांधी के चरखा को हमें भी चलाना है । ये हमें आज सोचने की आवश्यकता है। ऐसे महान हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की जयंती हम दो दिनों से मना रहे हैं, उनके विषयों पर चर्चा कर रहे हैं । अब वह जयंती महात्मा गांधी महात्मा सबके आत्मा से ज्यादा हो उनकी आत्मा जिसको कहते हैं- महात्मा । राष्ट्रपिता हम तो अपने बच्चों के नहीं हो सकते पिता, पर महात्मा गांधी थे राष्ट्र के पिता ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तै अपन लईका मन के पिता नहीं हरे तो कौन हरे । (हंसी) वापस लो, शब्द वापस लो । अईसन नहीं चलय, शब्द वापस लो ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- पहले सुन लो, एक बार और बोल रहा हूं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नेता जी, उनको समझाईए । शब्द वापस लो।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- पहले मेरी बात तो सुन लो कि मैं क्या बोल रहा हूं ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- पहिली शब्द वापस ले, तेकर बाद सुनबो।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- हम अपने बच्चों को नहीं कहला सकते पिता और महात्मा गांधी को हम मानते हैं-राष्ट्रपिता और पढ़ते थे भगवतगीता और कहते थे राम, राम । सबको मैं करता हूं प्रणाम और उन्होंने अंग्रेजों को कर दिए बेकाम । ये हैं राष्ट्रपिता, हमको भी पढ़ना चाहिए भगवतगीता । घर को नहीं करना चाहिए रीता और आपकी पत्नी है सीता, आपको क्या जरूरत है ये बोलने की बात । (हंसी)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- सभापति जी, ये गड़बड़ पुराण पढ़ते हैं, गड़बड़ पुराण से काम नहीं चलेगा ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति जी, ये अमरजीत जी के संस्कृत का मोहले जी के संस्कृत में जवाब है (हंसी)

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, एक गरम दल के नेता थे, दूसरा नरम दल के भी नेता थे । सुभाषचन्द्र बोस ने लोगों को कर दिया बेहोश और लोगों के आंदोलन में आया जोश और अंग्रेज हो गए खामोश, जिस नेता को कहते हैं सुभाषचंद्र बोस । आज हमें सोचने की आवश्यकता है कि लाल बहादुर शास्त्री जी ने जय जवान, जय किसान का नारा दिया । इसी की है पहचान, हमें देना है

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ध्यान, जय जवान और जय किसान । सुन लो मेरे कांग्रेस वाले भाई मितान कि हमें अच्छे का करना है पहचान, सत्य और अहिंसा, इसके ऊपर भी देना है ध्यान । प्रेम, हम विधान सभा में प्रेम की बात कर रहे हैं या सत्य की बात कर रहे हैं या अहिंसा की बात कर रहे हैं । मैं इधर देख रहा हूं महात्मा गांधी का चित्र, उसको भी आप देखने का कष्ट करें । मैं ऊपर से बात करता हूं तो गलत हो जाएगा । नीचे से बात शुरू करता हूं । पैर के नीचे से उसे प्रणाम करता हूं, नमन करता हूं, अभिनंदन करता हूं । वे पहनते थे चप्पल और देश के लिए काफी सोचते थे पल-पल और पहनते थे चप्पल । अगर दूसरी बात करें तो धोती, जिसको आपने कहा लंगोटी । खेलता था गोटी और अंग्रेजों के दिल-दिमाग को कर देता था-छोटी, उनकी बात ऐसी थी-मोटी । नेता थे नरम दल के, वे करते थे गरम, पूरे देश को किए गरम और अंग्रेज को आ गया शरम, यही तो है गांधी जी का धरम और हमको जानना चाहिए मरम । पहनते थे धोती, सबके दिल दिमाग को अंग्रेजों के दिल-दिमाग को कर देते थे छोटी । ये है महात्मा गांधी । लाये थे आंधी, सबको एकता के सूत्र में उन्होंने बांधी, जिसको कहते हैं महात्मा गांधी।

सभापति महोदय :- मोहले जी, कृपया समाप्त करें । आपने दो मिनट कहा था ।

श्री बृहस्पत सिंह :- और आपके पीछे बैठे हैं-बांधी ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मैं उनके ऊपर बोलना चाहता हूं, एक मिनट समय दें । मैं तो गांधी जी के उपर बोल रहा हूं, अपने ऊपर नहीं बोल रहा हूं।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- वे पकड़े हैं डंडा, महात्मा गांधी चलते थे पकड़कर डंडा ।

महात्मा गांधी चलते थे पकड़कर डण्डा
आजादी दिलाये और हम जय बोले तिरंगा
पकड़ रहे थे डण्डा
पहनते थे चश्मा, हम देख रहे हैं पहने हुये चश्मा
हमको मत देना चकमा
अंग्रेजों को दे रहा था चकमा
और पहने थे चश्मा
अगर ऊपर में कहें नहीं है बाल
चले ऐसे चाल
अंग्रेजों को कर दिये बेहाल
बना दिये ढ़ाल

अशोधित/अपुनरीक्षित के लिए नहीं

सभापति महोदय :- चलिये, अब सर तक पहुंच गया है, फिर भी कृपया समाप्त करें । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- सभापति महोदय,

अछूतों को किया उद्धार
गंदी बस्ती का किया उन्होंने उद्धार
लाया स्वच्छता अभियान
दिया उस पर ध्यान
बन गये हमारे सियान
मोदी ने भी दिया ध्यान
बनाया स्वच्छता अभियान
और बनवा रहा है पक्का मकान
जय जवान, जय किसान, सबको नमस्कार,
सबकी किस्मत का होगा चमत्कार,
जय भारत, जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़,
महात्मा गांधी के आदर्शों पर
सब आगे बढ़
जय हिन्द, जय सतनाम, जय सलाम, जय जवान
और जय राम-राम

सभापति महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- उधर बुला लो ना, अपने तरफ बुला लो ?

सभापति महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- दो मिनट बोलना चाहते हैं, बोलने दीजिए ।

श्री अमितेश शुक्ल :- दो मिनट मैं भी बोलना चाहता हूँ, सभापति महोदय ।

श्री धरमलाल कौशिक :- बहुत ज्यादा नहीं बोलना है ।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय सभापति जी, दो मिनट मैं बोलना चाहता हूँ।

सभापति महोदय:- नहीं । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, कृपया आप ।

श्री अमितेश शुक्ल :- दो मिनट मैं बोलना चाहता हूँ ।

सभापति महोदय :- नहीं, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, कृपया आप जो है....

सभापति महोदय :- मैं बहिगर्मन करता हूँ, मुझे बोलने नहीं दिया जा रहा है।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

2:03 बजे

बहिर्गमन

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल के सदस्य श्री अमितेश शुक्ल द्वारा चर्चा हेतु अनुमति नहीं दिये जाने के विरोध में

(श्री अमितेश शुक्ल द्वारा चर्चा में भाग लेने हेतु अनुमति नहीं दिये जाने पर विरोध में सदन से बहिगर्मन किया गया ।)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा

(क्रमश:)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सभापति जी, दो-दो मिनट आप दोनों को बोलने दीजिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- नहीं, बहिगर्मन कर गये हैं ना ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उनको बुला लीजिए ।

सभापति महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप कृपया । ढ़ाई बजे तक समाप्त करना था । नेता प्रतिपक्ष और माननीय मुख्यमंत्री जी को भी बोलना है ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- माननीय सभापति जी, बोलने वाले बहुत हैं । नेता जी को बुलाईये ।

श्री धरमलाल कौशिक :- इसीलिए अजय जी ने प्रस्ताव रखा था, कम से कम तीन दिनों का रखो करके ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, नीचे से व्यवस्था दी जा रही है । आपने नीचे से व्यवस्था दी है । यह बहुत आपत्तिजनक है । आप नेताजी को बोलवाईये । नीचे से व्यवस्था दी जायेगी ।

सभापति महोदय :- नीचे से कोई व्यवस्था नहीं दी जा रही है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- दी गई है व्यवस्था । आप नेताजी को बोलवाईये कहा गया । रिकार्ड देख लीजिए । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- मैंने बार-बार आग्रह किया नेता प्रतिपक्ष जी से । बार-बार आग्रह किया है, नेता प्रतिपक्ष जी से । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप उनको भगा दिये ।

डॉ.शिवकुमार डहरिया :- जेन तोर चक्कर में रहि, वोखर बंठाधार होना तय हे ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय सभापति महोदय, आज सबसे पहले मैं महात्मा गांधी जी के 150 वीं जयंती पर उनको सादर नमन करता हूँ । माननीय अध्यक्ष जी, मुख्यमंत्री जी और हम सब लोग मिलकर ....!

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, इस पांचवे विधान सभा में पहली घटना हुई है कि सत्तारूढ़ पार्टी का एक सदस्य उसको बोलने का अवसर नहीं मिला, इसलिए बहिर्गमन करके गया है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति जी, क्योंकि हम गांधीयन पर दो दिन की चर्चा कर रहे हैं । ऐसे समय पर कोई सदस्य नाराज होकर जाये, मुझे लगता है कि यह उचित नहीं है । आपको उस सदस्य को वापस बुलाना चाहिये । उनको सदन में बिठाना चाहिये । मुझे लगता है कि शायद हमारी इतनी अच्छी परम्परा यहां पर प्रारंभ हुई है । दो दिन के लिए गांधी जी पर विचार करने के लिए सदन चल रहा है और छत्तीसगढ़ के इस सदन में बहुत सारी उच्च परम्परायें स्थापित की है और ऐसे में कोई एक सदस्य नाराज होकर चला जाये, मुझे लगता है कि यह उचित नहीं है । इनको वापस बुलाया जाना चाहिये । वापस बुलाकर उनको बैठाया जाना चाहिये, जिससे कि हमारा जो सत्र है, इसमें काला टीका लग जायेगा, यदि नहीं आये तो और यह उचित नहीं है ।

सभापति महोदय :- पूर्व में ही उनका नाम लिस्ट में दिया हुआ नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं, उनको बुलाकर बैठाएं, उनको बोलने का अवसर दें या नहीं दे यह आपका निर्णय है परंतु हम ये चाहते हैं कि ये सत्र बहुत सद्भावना के साथ चला है और इसलिए उनको बुलाकर बैठाएं तो मुझे लगता है कि ज्यादा उचित होगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- सत्र में बहुत बार ऐसा हुआ है कि नाम नहीं होने के बाद भी आसंदी ने विवेक का उपयोग करके लोगों को बोलने का अवसर दिया है। इस सदन में ऐसा हुआ है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय सभापति महोदय, हमारे दल के बहुत सारे सदस्यों का नाम है लेकिन माननीय अध्यक्ष जी का निर्देश है कि जल्दी समाप्त करना है इसलिए हम लोगों ने अपना नाम भी वापस लिया है और बहुत सारे हमारे सदस्य बोलने वाले हैं तो समय के अभाव को देखते हुए, क्योंकि सदन का समय खराब नहीं होना चाहिए इसलिए हम लोग ऐसा कर रहे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- डहरिया जी, आप विषय को नहीं समझ पा रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हम माननीय सभापति जी से आग्रह कर रहे हैं उसमें आप लोगों को क्या दिक्कत है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम बोलने की बात कर ही नहीं रहे हैं हम तो चाहते हैं कि वह सदस्य हैं सदन में रहें। हम आपसे बोलने का आग्रह नहीं कर रहे हैं।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- हमने आपके सुझाव को सुना है, माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी से आग्रह कर रहे हैं कि वह देख लेंगे। नेता प्रतिपक्ष जी, कृपया आप अपना वक्तव्य जारी रखें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, आप भी इस सदन के वरिष्ठ सदस्य हैं, हम सब वरिष्ठ सदस्यों का यह दायित्व है कि अगर कोई सदस्य इस प्रकार की अपनी नाराजगी व्यक्त करते हैं तो उनको समझाना, उनको सदन में बुलाना सदन की उच्च परंपराओं को कायम रखना जरूरी है।

सभापति महोदय :- माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी से आग्रह कर लिया है, वे देख लेंगे।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- हमारे दल के सदस्य उनको मनाने के लिए गये हैं। जरूरत है तो आप भी चले जाओ, वे पीछे वाले भाई भी हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, लो, मैं जा रहा हूं।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय पुन्नूलाल मोहले जी भी तो बोलना चाह रहे थे, उनको भी तो अवसर नहीं मिला।

श्री धरमलाल कौशिक :- मोहले जी बोल लिए हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप तो थे नहीं, आपके संस्कृत का वह अपने संस्कृत में जवाब दिये हैं। मैं तो आप ही को पता कर रहा था।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, आप ठीक चला रहे हैं, लेकिन हमारे संस्कृति मंत्री जी संस्कृति को और पलट रहे हैं। दो दिन में लगभग सदस्य जिनको अवसर प्राप्त हुआ, महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व, कृतित्व, उनके विचार, उनका जो संदेश था और लगभग सभी माननीय सदस्यों ने सत्य, अहिंसा, मानवता, प्रेम आदि गांधी जी पर आधारित बातों का सभी ने उल्लेख किया है। माननीय सभापति महोदय, मुझे लगता है कि सदन में जो चर्चा हुई वह थोड़ी सी मिश्रित हो गई। शायद यदि कुछ बातों का उल्लेख शुरू में नहीं किए होते तो गांधी जी की 150 वीं जयंती की जो गरिमा है वह और बढ़ गई होती।

समय :
2:13 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

गांधी जी के विचार हम सब लोगों ने देखा है कि स्वतंत्रता के आंदोलन में अपना पूरा जीवन देने वाले गांधी जी और आजादी के बाद उनकी जो कल्पना थी कि कैसे भारत का निर्माण होना चाहिए, आजाद भारत कैसा होना चाहिए निश्चित रूप से एक ऐसे स्वतंत्र भारत का निर्माण जहां आपसी भाईचारा हो, ग्राम आत्मनिर्भर और स्वतंत्र हों, अनिवार्य शिक्षा हो, अस्पृश्यता न हो, जातिवाद मुक्त भारत हो ये गांधी जी की कल्पना रही है। किंतु हम देख रहे हैं कि आजादी के बाद भारत के लिए गांधी जी ने जो

अशोधित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

कल्पना की थी, किन्तु आजादी के बाद भारत में जो उत्तरोत्तर सरकारें बनीं वह सरकारें शायद गांधी जी के विचारों और कल्पनाओं को भूल गई। आज जब हम चर्चा कर रहे हैं तो कल मैंने इसी बात को कहा था कि गांधी जी के विचार हमारे लिए आज भी प्रासंगिक क्यों हैं क्योंकि उनके उद्देश्य और उनके विचारों को लेकर चलेंगे तो शायद आजादी के हमारे महापुरूषों की जो कल्पना रही है, उनके जो सपने हैं वह साकार होंगे।

(माननीय सदस्य श्री अमितेश शुक्ल सदन में उपस्थित हुए।)

अध्यक्ष महोदय, मैं कल जिन विषयों पर चर्चा किया हूं मैं नहीं चाहता कि उसको मैं दोहराऊं लेकिन मुख्यमंत्री जी ने कल जो एक राष्ट्रवाद की कल्पना की और महात्मा गांधी जी के राष्ट्रवाद के बारे में मैं उसमें कहना चाहता हूं कि आपने जिस राष्ट्रवाद की बात की है, वह कौन सा राष्ट्रवाद है, इस राष्ट्रवाद में संविधान अर्थहीन होता जा रहा है। समाज खोखला होता जा रहा है, इस राष्ट्रवाद में राष्ट्र कुचला जा रहा है, गांधी की उपेक्षा करना चाहते हैं, गांधी को बदनाम करना चाहते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, अमितेश शुक्ल जी नाराज होकर बाहर चले गये थे, उनको बहुत मुश्किल से मनाकर गेट से वापस लाये हैं, हम ये चाहते हैं कि वे जिस परिवार से आते हैं, वह परिवार एक प्रतिष्ठित परिवार है, राजनीति में उसका एक स्थान है और उनके परिवार के साथ में कुछ गांधी जी की स्मृतियां जुड़ी हुई है, वे दो मिनट बोलना चाहते थे तो अगर आप उनको अवसर दें तो मुझे लगता है कि यह सदन की गरिमा बढ़ाने वाला होगा। हमने सदन का सम्मान बढ़ाने के लिये लेकिन इस दो दिन के विशेष सत्र में सदन का कोई सदस्य बहिर्गमन करके जाये यह उचित नहीं होगा। इसलिए हम सब लोग मिलकर उनको वापस सदन में लाये हैं, हम चाहेंगे कि आप जैसा उचित समझें वैसा निर्णय करें।

अध्यक्ष महोदय :- अभी नेता प्रतिपक्ष का भाषण चल रहा है, इनको चलने दीजिए। फिर मैं बाद में उनसे मत ले लेता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जी।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम तो संविधान के मानने वाले लोग हैं, हम गांधी जी को मानने वाले लोग हैं, आखिर गांधी जी के विचारों को किसने कुचला ? गांधी जी के उनके विचारों की धज्जियां किसने उड़ाई है ? आज जो बात आ रही है जिन बातों का यहां उल्लेख हुआ उसमें मुझे विस्तार से नहीं कहना है। लेकिन सबसे ज्यादा कानून का धारा 356 का उल्लंघन किसने किया ? व्यक्तिगत विचारों पर, स्वतंत्रता पर हनन किसने किया ? पाबंदी किसने लगाई ? इमरजेंसी किसने लगाई ? ये गांधी जी के विचार हैं ? 1984 के दंगे हम भूल गये हैं, ये गांधी जी के विचार हैं। ये गांधी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जी की नीतियां है, ये अहिंसा के मार्ग है और इसलिए जो यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बात आ रही है, मुझे नहीं लगता कि यह गांधी जी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है, जिसमें हत्या को और उसको कोई प्रोत्साहन मिल सके। ये गांधी जी के विचार नहीं हो सकते। ये गांधी जी के अहिंसा के पुजारी नहीं हो सकते। माननीय अध्यक्ष महोदय, इस देश में गांधी जी की जो कल्पना रही है कि सभी का विकास होना चाहिए, सभी धर्मों का विकास होना चाहिए। सभी सम्प्रदायों का विकास होना चाहिए। लेकिन केवल कुछ लोग राजनीतिक के केवल ओठ के रह गये, लेकिन उनका जो विकास होना चाहिए आज भी उनका विकास नहीं हुआ है। इसलिए इन समग्र बातों पर हम सबको मिलकर चिंता करने की आवश्यकता है। इस पूरे हिन्दुस्तान में हमारे बहुत सारे एरिया ऐसे हैं जो समुचित विकास होनी चाहिए थी, आज भी वह विकास नहीं हुआ है जो गांधी जी की कल्पना रही है। धारा 370 के कारण कश्मीर जो भारत का मुकुट है, धारा 370 लगाई गई और उसके बाद में हिन्दुस्तान के अंग से जो जुड़ाव होना चाहिए, कहीं न कहीं वह कश्मीर पीछे हुआ। आज धारा 370 हटने के बाद में, इसी प्रकार से बहुत सारे ऐसे प्रदेश हैं, जहां पर जितनी विकास होनी चाहिए थी, वह विकास नहीं हुआ, लेकिन देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी इस बार कि जो पिछड़े हुए प्रदेश हैं, उनका कैसा विकास होना चाहिए, वह गांधी जी के कल्पना के आधार पर उसकी रूप रेखा खींचने का प्रयास किये हैं। मुझे लगता है कि आने वाले समय में हम इस देश के विकास में चहुमुखी विकास की दिशा में अग्रसर होंगे। मैं आज बहुत कुछ नहीं बोलना चाहता, लेकिन मैं मुख्यमंत्री जी से यह कहना चाहूंगा, हालांकि इसमें कोई जवाब देने की बात नहीं है कि आप जवाब दें। अपनी-अपनी बात करने का है। गांधी जी के बारे में, उनके विचार के बारे में अपनी बात रखें। लेकिन यदि आप चाहें तो हम जब यह अवसर हमारे हाथ में आया है कि जब 150वीं जयंती मना रहे हैं, तो छत्तीसगढ़ से ऐसा कोई न कोई संदेश पूरे हिन्दुस्तान को जाना चाहिए जो मिल का पत्थर साबित हो कि हमने गांधी जी की 150 वीं जयंती पर, ये पत्थर रखने का काम किया है। जिसका संदेश पूरे हिन्दुस्तान में जाये तो मुझे लगता है कि हमारे ये दो दिन की चर्चा की सार्थकता होगी और मैं उम्मीद् करता हूँ कि शायद ये बात आये। आज जिस प्रकार से वातावरण का निर्माण हुआ है और जिस वातावरण का निर्माण होने जा रहा है मैंने जो व्यक्तिगत अनुभव किया है, मैं इसलिए उस विषय को यहां रखना चाहता हूँ कि यदि हम गांधी जी के अनुयायी हैं तो गांधी जी का केवल नारा लगाने या जिंदाबाद बोलने से हम गांधीवादी नहीं बन जायेंगे। बल्कि गांधी जी के जो संकल्प, विचार हैं, हमको उनको आत्मसात करना पड़ेगा। यदि हमारे मन में उनको आत्मसात कर पाने में यह बात आती है तो यहां पर हमारा केवल 2 दिन बोलना, चर्चा का विषय होगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने इसलिए कहा क्योंकि जो मुझे अनुभव आया है। मैं उसको रखना चाहता हूँ। हम लोग जहां पर काम करते हैं, विभिन्न दल के लोग काम करते हैं, हमारी विभिन्न

असंशोधित/मुद्रण हेतु नहीं

प्राथमिकताएं होती हैं, हमारी जो बातें हैं हम लोग उसको यहां रखते भी हैं। लेकिन मैंने कहा कि जिस प्रकार से बातें आ रही हैं कि राजनीति में मतभेद एक सीमा तक होनी चाहिए, व्यक्तिगत सीमा तक नहीं जाना चाहिए। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अब प्रदेश में राजनीति का मतभेद, व्यक्तिगत मतभेदों में बदल रहा है। हम आपस में भाईचारे के साथ में असहमति को भी सहमति में बदलते हुए, हम उसको स्वीकार करें। क्योंकि सबका उद्देश्य यह है कि इस प्रदेश का विकास करना और इस नव निर्माण में हम सबकी सार्थक भूमिका होनी चाहिए। जिस प्रकार से प्रदेश की राजनीति में भय का वातावरण पनप रहा है और यदि हम गांधी जी की जयंती मना रहे हैं तो मुझे लगता है कि आने वाले समय में इसमें हम सब को बदलाव दिखेगा। गांधी जी ने हमेशा प्रयास किया। अभी यहां पर बहुत सारे किसानों की बात आयी। यहां पर वास्तव में गांधी जी की बात थी और हम गांधी जी को लेकर चल रहे थे। अच्छी बातें हैं जो भी सरकार आएगी, काम करेंगे। लेकिन जब यहां पर किसानों की बात आयी तो गन्ना फैक्ट्री में किसानों को लेकर एक प्रदर्शन हुआ कि अभी तक उनका भुगतान नहीं हुआ है और उनका भुगतान होना चाहिए। वह एक प्रकार से गांधी जी के बताए हुए मार्ग पर चलकर ही हुआ। क्योंकि ज्ञापन देना, प्रदर्शन करना, धरने में बैठना, ये असहयोग आन्दोलन का ही रूप था। किन्तु मैं मुख्यमंत्री जी से इस बात का आग्रह करना चाहता हूँ कि जो किसान पीड़ित हैं, आज तक जिन किसानों को भुगतान नहीं हुआ, मैं खासकर के कवर्धा की बात कर रहा हूँ आप उसका निराकरण करें और उसका भुगतान करें और आप एक तिथि बता दें, उस दिन तक किसानों को भुगतान हो जाए। यह मैं आपके ऊपर छोड़ता हूँ। नहीं तो, गांधी जी के रास्ते पर चलकर, असहयोग आन्दोलन का सहारा लेते हुए, मैं अपने सभी विधायकों के साथ उस फैक्ट्री के सामने में उपवास पर बैठूंगा।

माननीय अध्यक्ष जी, आज के इस अवसर पर मैं आपको धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और मैं उम्मीद करता हूँ कि दो दिन की चर्चा के बाद में इस गांधी जयंती, गांधी जी के विचारों का असर दिखायी देगा और आने वाले समय में हमारे विधान सभा की गरिमा और बढ़े और उनके पद् चिन्हों पर चलते हुए, इस प्रदेश के विकास में हम सब मिलकर मार्ग प्रशस्त करें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, मैं अपनी बात को समाप्त करता हूँ। मैं महात्मा गांधी जी और लालबहादुर शास्त्री जी को नमन करते हुए यह कहना चाहता हूं कि गांधी जी यहां से हम सबको देख रहे हैं, ये बात को भूलना नहीं चाहिए कि हम उनके बताये हुए रास्ते पर कितना चल रहे हैं। मैं यही आग्रह करूंगा कि उनके पदचिन्हों पर चलते हुए हम उस रास्ते पर चलें और गांधी जी सबको सदबुद्धि दें। रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम, सबको राम-राम। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आपने समय का ख्याल रखा उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। माननीय मुख्यमंत्री जी।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको बहुत-बहुत बधाई कि 02 दिन तक इस विधानसभा में गांधी और गांधीवाद पर चर्चा के लिए सत्र आहूत किया और माननीय सभी सदस्यों ने, हमारे विपक्ष के भारतीय जनता पार्टी, छत्तीसगढ़ जनता कांग्रेस पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के साथियों ने और साथ ही हमारे दल के साथियों ने भी अपने विचार रखे। माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी के विचारों पर चर्चा करते-करते हम लोगों ने बहुत सी बातों पर भी शासन का या विधानसभा का ध्यान आकर्षित किया। अध्यक्ष महोदय, मैं धन्यवाद देता हूं, मेरे तुरन्त बाद नेता प्रतिपक्ष जी भाषण दिये और मुझसे दोगुना लंबा समय उन्होंने लिया और बहुत अच्छी बातें कही। माननीय अजय चन्द्राकर जी, बृजमोहन अग्रवाल जी, डॉ. रमन सिंह जी, शिवरतन शर्मा जी ने, पुन्नूलाल मोहले जी की कविता, हम सबने सुनी। एक बात मैं नये सदस्यों से कहना चाहूंगा कि हमारे वरिष्ठ सदस्य जब बोलते हैं तो अध्ययन करके आते हैं, चाहे बृजमोहन जी, अजय चन्द्राकर जी, शिवरतन शर्मा जी, रविन्द्र चौबे जी हों। नये सदस्यों को सीखना चाहिए। यदि आपको 10 मिनट बोलना है तो समझ लीजिए आप कम से कम 4 घंटे पढ़ाई करेंगे तब आपका 10 मिनट का भाषण होता है। इसलिए सभी माननीय सदस्यों से, मैं किसी खास की बात नहीं कह रहा हूं, नये सदस्यों के बारे में कह रहा हूं। क्योंकि आज जो सदन है, कभी यहां के बहुत सारे सदस्य मध्यप्रदेश में भी रहे हैं, छत्तीसगढ़ में भी हैं, उनका लंबा अनुभव है, सदन परंपरा से चलता है। जब सदस्य बोलते हैं तो बहुत कुछ सीखने को मिलता है, इसलिए अध्ययन बहुत जरूरी है। ये सीखने की बात है। अध्ययन करेंगे तो बहुत सारी बातें आती भी हैं। एक ही पुस्तक है उसमें से आप कुछ और ग्रहण करेंगे, कुछ या और कुछ ग्रहण करेंगे, माननीय शिवरतन जी कुछ और ग्रहण करते हैं।

माननीय अध्यक्ष जी ने कल सचिवालय के द्वारा बहुत अच्छे नाटक का आयोजन कराया था, बहुत ही बढ़िया मंचन हुआ था। बहुत से लोगों ने आजादी के बाद चाहे नोवाखाली में गये, चाहे वह दिल्ली में रहे।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय मुख्यमंत्री जी, एक मिनट। माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी 1920 में आये थे। हमारे आने वाले साल में गांधी जी के छत्तीसगढ़ आगमन का शताब्दी वर्ष होगा। हम दो दिन का गरिमामय कार्यक्रम किये हैं। मुझे लगता है कि जब उनका छत्तीसगढ़ में आने का शताब्दी वर्ष हो, इसके ऊपर भी हमारा कोई न कोई कार्यक्रम बने। इस पर भी विचार करेंगे तो मुझे लगता है कि ठीक होगा।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता प्रतिपक्ष जी का बहुत बढ़िया सुझाव है और मैं

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

इसे तुरंत स्वीकार करता हूं और ये पूरा वर्ष हम लोग गांधी वर्ष के रूप में मनायें। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर साथियों ने प्रकाश डाला। गांधी जी के आचार-विचार, उनके खान-पान, रहन-सहन, सब पर सब साथियों ने अपनी-अपनी बात कही। छत्तीसगढ़ विधानसभा को यह श्रेय जाता है कि गांधी जी पर दो दिन की चर्चा आहूत की गई, यह छत्तीसगढ़ के लिये एक उपलब्धि है । माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे माननीय साथियों ने और विपक्ष के साथियों ने किसी ने भी गांधीवाद का विरोध नहीं किया यह अच्छी बात है । उनहोंने यह भी कहा कि गांधी जी आर.एस.एस. की शाखा में गये, गये होंगे, गांधी जी सबके पास जाते थे, गांधी जी अपनी जो विरोध करने वाली विचारधारा के लोग हैं उनसे भी बात करते थे, उनको सहमत कराने की कोशिश करते थे । आदरणीय बृजमोहन जी ने यह भी बताया कि सन् 1963 में महापुरूषों की सूची में गांधी जी का नाम भी शामिल किया गया ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि गांधी जी जीवित होते तो सूची में जो शामिल किया गया उसमें शामिल होना चाहते या नहीं होना चाहते यह मैं नहीं समझ पा रहा हूं क्योंकि उस सूची में उन लोगों के भी नाम हैं जिन्होंने देश की आजादी की लड़ाई की मुखालफत की । क्या वे उस सूची में शामिल होना चाहते ?

श्री शिवरतन शर्मा :- आपने कहा कि उस सूची में ऐसे लोगों के भी नाम हैं जिन्होंने आजादी के आंदोलन की खिलाफत की थी, एकाध नाम बता दीजिये तो अच्छा रहेगा । हम लोगों का भी ज्ञानवर्धन हो जाएगा ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय बृजमोहन जी ने, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने कहा कि यह सरकार कांग्रेस है वह गांधी जी के रास्ते पर नहीं चल रही है । अब सवाल इस बात का है कि मैं इस 9 महीने की सरकार के सवाल का जवाब दूं या आपकी 15 साल की सरकार की समीक्षा करूं ? माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम इस सदन में हैं, आप हैं, मैं हूं तो गांधी जी की नीतियों के कारण से ही उस रास्ते पर कांग्रेस चली, जिस कारण से सदस्य बनाये, लोकतंत्र बना और संविधान बना। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, इस देश में नागरिकों को जो अधिकार मिला है वह कांग्रेस के कारण से मिला है, गांधी जी के रास्ते पर चले हैं तब यह मिला है । हम अपना-अपना धर्म मानते हैं, अपने धर्म पर गर्व करते हैं यह भी उसी सोच के कारण संभव हुआ है । हमें जो आजीविका का अधिकार मिला है, हमें शिक्षा का अधिकार मिला है वह इसी कांग्रेस की सरकार के कारण संभव हो पाया है । माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अजय जी ने जिस तरह से कल बात कही, उन्होंने कहा कि सरदार भगत सिंह जी को गांधी जी चाहते तो बचा सकते थे इसका उल्लेख उन्होंने किया । तत्कालीन वायसराय को उन्होंने चिट्ठी भी लिखी । उनको फांसी न लगायी जाये यह भी निवेदन

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

किया, नेहरू जी स्वयं जाकर उनको जेल में मिले लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आपके जो नेता थे, कब जाकर सरदार भगत जी से मिले, कब उनकी रिहाई की मांग किये, कब उनके पक्ष में खड़े हुए और आप अब यह बता दें कि आप सरदार भगत सिंह जी के विचारों को आप मानते हैं या नहीं मानते हैं ?

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री अजय जी विद्वान सदस्य हैं, पढ़ते हैं, मैं उनका सम्मान करता हूं, वे अध्ययनशील हैं, ज्ञानी भी हैं और विद्वान भी हैं । कल उन्होंने एक बात कही । यदि हम असहमत हैं, यदि असहमति है । केवल गोडसे ही असहमत नहीं थे, केवल सावरकर ही असहमत नहीं थे, सुभाष चन्द्र बोस भी असहमत थे, अम्बेडकर साहब भी असहमत थे, अन्य नेता भी उनसे असहमत थे । अध्यक्ष महोदय, सुभाष चन्द्र बोस जी असहमत थे, उन्होंने सेना भी बनाई लेकिन उनकी हत्या नहीं की । अगर गांधी जी को राष्ट्रपिता कहकर सबसे पहले सम्बोधित किया तो सुभाष चन्द्र बोस ने किया (मेजो की थपथपाहट) । असहमति होते हुए भी, असहमति होते हुए भी ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, इसी विषय पर बोलना चाहता हूं ।

श्री भूपेश बघेल :- रहने दीजिए । अध्यक्ष महोदय, असहमति होते हुए भी गांधी जी ने उन्हें नेता की उपाधि दी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे अनुमति नहीं दी, लेकिन यदि सुभाष बाबू के प्रति कांग्रेस का सम्मान है तो आजाद हिंद फौज के लड़ाकों को, सेनानियों को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का दर्जा कब मिला, यह मुख्यमंत्री जी जरूर बताएंगे, यदि सम्मान है तो ?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय चन्द्राकर जी, आप बहुत ही वरिष्ठ एवं सम्झदार सदस्य हैं । जब सदस्य या नेता बोल रहा हो तो हस्तक्षेप करने वाला उनकी अनुमति से बोलेगा न कि मेरी अनुमति से ।

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, सुभाष चन्द्र बोस जी ने इस्तीफा दिया था, अध्यक्ष चुने गए थे । अजय जी ने यह भी कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने सदस्यता नहीं ली थी, सदस्यता छोड़ दी थी । उस समय की परिस्थिति के बारे में आपको आकलन है । बिना जाने, बिना समझे कि किन परिस्थितियों में निर्णय लिया गया, उसके बारे में सोचे बिना आप कह रहे हैं । अध्यक्ष महोदय, महात्मा गांधी ने देखा कि उन्होंने हिंदुस्तान में ऐसे-ऐसे नेता तैयार कर लिये हैं । चाहे वह नेहरू जी हों, चाहे पटेल जी हों, चाहे राजगोपालाचार्य हों, मौलाना आजाद हों, उन्होंने पंत जी से लेकर सारे नेताओं को तैयार कर लिया था । अब जब उन्होंने देखा कि दूसरी पंक्ति के नेता अब कांग्रेस को संभाल सकते हैं तो उस परिस्थिति में उन्होंने इस्तीफा दिया। आधी-अधूरी बात नहीं करना चाहिए अजय जी । यदि सुभाष चन्द्र बोस ने इस्तीफा दिया उसके कारण के बारे में आप बात करना चाहते हैं तो सुभाष चन्द्र बोस ने इसलिए इस्तीफा दिया क्योंकि कांग्रेस में यह resolution पास हुआ था कि कोई भी मार्ग हिंसा का नहीं

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

होगा । यह कांग्रेस के अधिवेशन में पारित हुआ था और जब चुने गए तो सरदार पटेल ने कहा था कि यह जो resolution पास हुआ है । उसके विपरीत हो रहा है क्योंकि सुभाष चन्द्र बोस सेना खड़ा करना चाहते थे । सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गांधी से मिले । उन्होंने कहा कि पटेल जी इस प्रकार से कह रहे हैं तो गांधी जी ने कहा कि जब resolution पास हुआ उस समय तो आप भी थे । जो पास हुआ है अगर उसके साथ चलना चाहते हैं तो अध्यक्ष बने रहिए, यदि नहीं चलते तो इस्तीफा दे दीजिए और तब उनका इस्तीफा हुआ था, अजय जी । अजय जी, कल चर्चा की शुरूआत में, जिसमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बारे में बात कर रहे हैं । कल इसी पर मैंने चर्चा की शुरूआत की थी । हमारी लम्बी सांस्कृति धरोहर है । जिसमें महावीर से, बुद्ध से, कबीर से लेकर, राजा राममोहन राय से लेकर, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद से होते हुए गांधी जी की यात्रा के बारे में हमने कल विस्तार से चर्चा की । अध्यक्ष महोदय, इनका जिक्र जरूरी था क्योंकि ये सभी उज्जवल अध्येताओं ने गांधी और गांधी के साथ-साथ इस देश के मानस को बनाया था । अध्यक्ष महोदय, बुद्ध की करूणा और महात्मा गांधी की करूणा में कोई भेद नहीं है। चाहे हम उसे गांधी की करूणा कहें या बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की करूणा कहें, प्रज्ञा नेत्री कहें या भारत माता कहें । इन सबमें एक गंभीर राष्ट्रवाद के तत्व छिपे हुए हैं । यह राष्ट्रवाद अपने देश की प्रत्येक आवाज के लिए, विरोध में उठे हुए कमजोर ही सही, आवाज रखने की सम्मानपूर्वक इजाजत देता है । इसकी परंपरा बड़ी लंबी है, जो गांधी में प्रतिध्वनित होती है। हम अपनी शक्तियों और जिम्मेदारियों के साथ अपनी कृतियों के लिए जवाबदार बनते हैं। हमसे यदि गलती होती है तो शर्मिंदा होते हैं। पश्चाताप करने वाले में भी हमारे आखों में करूणा के आंसू होते हैं। असहमति की बात सुभाष की भी है। असहमति की बात गांधी और अंबेडकर की भी है। लेकिन जब उन्होंने शादी की और गांधी जी के सचिव अचानक उनसे मिल गये तब उन्होंने कहा कि आज अगर बापू होते तो बहुत खुश होते। यह अंबेडकर ने कहा। माननीय अध्यक्ष महोदय, ये वो तत्व हैं जोकि गंभीर राष्ट्रवाद का निर्माण करते हैं। जिन्होंने हिन्दुस्तान को इतने वर्ष तक संजोकर रखा। दूसरी ओर एक तरह की विचारधारा है, जो अपने स्वभाव में उत्तेजित है, अराजक है, भयानक है और भयानक रूप से हिंसक भी है। वह एक नये किस्म के राष्ट्रीयता की तस्वीर खींचती है। इस अराजक और उत्तेजित राष्ट्रवाद में जीवन का कोई सम्मान नहीं है। ये बस एक तरह की भाषा और क्रिया जानते हैं। यदि आप मेरी बात से सहमत नहीं हैं तो या तो आप मुझे मार डालें या मैं आपको मार डालूंगा। यह राष्ट्रवाद, इसकी जो मूल है यह देश के भीतर नहीं, देश के बाहर है। यह राष्ट्रवाद बाहर से आया हुआ राष्ट्रवाद है, जिसकी जड़ें जर्मनी, मुसोलिनी, इटली वहां गड़ी हुई है। अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है। मैंने पढ़ा है। 24 अक्टूबर, 1909 सावरकर के साथियों के बुलाने पर इंडिया हाउस लंदन में गांधी जी गये थे। उन्होंने कहा कि मैं आपके यहां भोजन नहीं करूंगा। मैं अपने हाथ से पकाउंगा, वह भोजन करूंगा। दोनों ने रामायण में बात कही। सावरकर ने भी रामायण

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

का उद्धरण दिया और गांधी ने भी रामायण का उद्धरण दिया, लेकिन गांधी ने रामायण का वह अंश लिया, जिसमें अहिंसा और त्याग है। अध्यक्ष महोदय, उन्होंने कहा रामायण ऐसा ग्रंथ है, जो सच्चाई के लिए कष्ट सहने की प्रेरणा देता है और हम संघर्ष में बड़े से बड़े आततायी चाहे वह रावण जैसे शक्तिशाली क्यों न हो, सत्य ही जीतता है और दूसरी तरफ सावरकर ने उसी रामायण का उद्धरण देते हुए चौपाइयों को पढ़ते हुए कहा कि दुष्टता का नाश हिंसापूर्वक दुष्ट के विनाश से ही संभव हो सकता है। गांधी अहिंसा और त्याग की बात करते हैं। सावरकर हिंसा की बात करते हैं। यह विदित तथ्य है कि गांधी मरने से नहीं डरते थे और इतिहास गवाह है कि सावरकर छिपकर मारने से भी नहीं हिचकते थे। माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी हमारे लिए वीर है, आपके लिए सावरकर वीर है। (मेजों की थपथपाहट) इतिहास के पन्ने में पर्याप्त सबूत है। नाथूराम गोडसे दरअसल सावरकर का ही शिष्य था। सावरकर गांधी की हत्या का षड्यंत्र चर रहे थे, इसका भी इतिहास में पर्याप्त साक्ष्य हैं। हिन्दू धर्म जैसे सर्वसवंशी, बहुदेवादि, बहुलतावादी, वैश्विक दृष्टिकोण पर आधारित है। गांधी का राष्ट्रवाद सलेक्टेड और गलत व्याख्याय किए गए घटनाओं पर आधारित यह उत्तेजक राष्ट्रवाद है।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका कुछ विषयों पर कथन असत्य है। वीर सावरकर को न्यायालय ने बाइज्जत बरी किया है। आज जिस षड़यंत्र का आरोप लगा रहे हैं, आप न्यायालय का निर्णय पढ़ लीजिये। वीर सावरकर बाइज्जत बरी हुए हैं, जो आप आरोप लगा रहे हो। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसको विलोपित किया जाना चाहिए।

श्री भूपेश बघेल :- कोई विलोपित करने की जरूरत नहीं है। मैं अपने शब्द भी वापिस नहीं लेता। पर्याप्त साक्ष्य हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह असत्य कथन पर सदन नहीं चलेगा। इसके लिए हम नहीं हैं।

श्री भूपेश बघेल :- आप धमकी दे रहे हैं। ये वहीं हैं, जिसे असहमति पर ....(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- यह सदन की गरिमा का अपमान है। ....(व्यवधान)

(सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये)

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैने पहले ही कहा था कि जिनके-जिनके विषय हैं, उनके विषय में एक दिन चर्चा करा लीजिये। लेकिन इस प्रकार की चर्चा ...(व्यवधान) हम नहीं सुनेंगे। हमारी असहमति है। यह गांधीजी के विचारधारा के विपरीत है। इन्होंने अहिंसा को खण्डित किया है। हम सदन से बर्हिगमन करते हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

2:47 बजे

बर्हिगमन

माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा दिए गए जवाब के विरोध में

(नेता प्रतिपक्ष श्री धरम लाल कौशिक के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा सदन से बर्हिगमन किया गया)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा (क्रमश:)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईये। आप शांति से मुख्यमंत्री जी का भाषण सुनिये।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सच सुनने का साहस होना चाहिए। सावरकर की भूमिका इतिहास में दर्ज है। यदि मदन लाल ढींगरा, जो शहीद हुए थे, उनको फांसी हुई थी। महाराष्ट्र के एक जिले में अंग्रेज अधिकारी के हत्या के षड़यंत्र में उसको काली पानी की सजा हुई थी। वे अंग्रेजों से 13 बार माफी मांगे कि वे कभी विरोध नहीं करेंगे। उसके बाद का सावरकर का जीवन देख लीजिये, वह कभी राष्ट्रीय आंदोलन में शरीक नहीं हुए थे। आज जो द्विराष्ट्र की बात हुई है, यह उन्हीं सोच के कारण हुई है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गांधी जी की हत्या हुई। गांधी जी ने जो लड़ाई लड़ी, उसके सामने अंग्रेज थे। लेकिन लड़ाई उतनी नहीं थी, उतनी भर ही नहीं थी। गांधी जी ने अपृश्यता के खिलाफ लड़ाई लड़ी। नारियों की शिक्षा के लिए लड़ाई लड़ी। उन्होंने ग्राम स्वराज के लिए संदेश दिया। हमारे हिन्दुस्तान में हमारे समाज में जो फैली हुई कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। अंग्रेज उन्हें बार-बार जेल में डालते थे। उनको सजा भी हुई। वे 10 साल तक जेल काटे। लेकिन क्या कारण है कि गोडसे ने उनकी हत्या कर दी। यदि अंग्रेज हत्या करते, लाठीचार्ज होती, चाहे अफ्रीका में हो, चाहे हिन्दुस्तान में हो तो समझ आता। लेकिन गोडसे ने हत्या की। जब उस समय हत्या हुई तो रेडियों में एनाउंस हो रहा था कि एक पागल व्यक्ति ने उसकी हत्या कर दी। अध्यक्ष महोदय, पागल नहीं था। एक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता था। (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा शेम की आवाजें) आज विचारधारा की लड़ाई है। एक परम्परा महावीर, गौतम बुद्ध से लेकर गुरूनानक, कबीर से लेकर, गुरू घासीदास लेकर महात्मा गांधी तक एक परम्परा चली आ रही है, जो राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का काम करती है । ये हमारा हिन्दुस्तान का राष्ट्रवाद है और एक राष्ट्रवाद वह है, जो जर्मन से आया है, जो ईटली, मुसोलिनी से सीखकर आया है, जो अपने मत से सहमत नहीं होने वालों को मिटा देने की बात करते हैं । एक वह राष्ट्रवाद, उत्तेजक

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

राष्ट्रवाद चला आ रहा है, जिसमें केवल हिंसा का सहारा लिया जाता है । आप मेरी बात से सहमत नहीं हैं तो आपको खत्म कर दिया जाएगा । यह राष्ट्रवाद समाज के लिए, हिन्दुस्तान के लिए बहुत ही खतरनाक है और ये लड़ाई हमको लड़नी पड़ेगी । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, रमन सिंह जी ने गांधी जी को लेकर बहुत सारी बातें बात कही कि वे सुत कातते थे । यहां बुनकरों की हालत खराब है । अब वे यहां नहीं हैं, लेकिन मैं बताना चाहूंगा कि हमारी सरकार 234 बुनकर सहकारी समितियों के माध्यम से 59 प्रकार के शासकीय वस्त्रों का उत्पादन करती है । इस साल भी शैक्षणिक सत्र के लिए भी स्कूल विभाग से गणवेश प्रदाय किया गया है और 2020-21 सत्र के लिए भी 80 प्रतिशत गणवेश तैयार हो चुके हैं। भुगतान भी हुए हैं, जिसमें 42 करोड़ का भुगतान बुनाई के लिए और 30 करोड़ धागा के लिए विभिन्न समितियों को दिया गया है । जो आरोप लगा रहे थे, वह बिल्कुल निराधार आरोप हैं ।

अध्यक्ष महोदय, राम के भक्त बनते हैं । हमारे संसदीय कार्यमंत्री जी ने राम के बारे में बात कही । अध्यक्ष महोदय, भगवान का नाम तो सब लेते हैं । जो ईमानदार है, वह भी नाम लेता है । बेईमान है, वह भी लेता है । भक्त है, वह भी लेता है । जो भक्त नहीं है, वह भी लेता है । साहूकार भी लेता है और चोरी करने वाला भी भगवान का नाम लेता है । राम का नाम तो सब लेते हैं । जो चोरी करने जाता है तो बोलता है कि भगवान, इस बार पकड़ने से बचा लेना । (हंसी) कोई सत्ता प्राप्त करने के लिए भगवान का नाम लेते हैं । रामायण में लिखा है कि जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं, लेकिन गांधी जी ऐसे थे । गोड़से ने उनके पैर छुए । यदि आपके मन में किसी के प्रति क्रोध है, गुस्सा है तो सामने से जाकर सीधा वार करते हैं, लड़ाई झगड़ा करते हैं, मारपीट करते हैं, लेकिन कोई पैर छूकर गोली नहीं चलाता, ये वैचारिक रूप से उसको तैयार किया गया । आज मानव बम तैयार किया जाता है, उसी प्रकार से गांधी जी के लिए भी मानव बम तैयार किया गया था । एक विचारधारा के द्वारा तैयार किया गया था और उन्होंने तीन गोलियां दागीं और गांधी जी ने हे राम कहा । वे पक्के वैष्णव थे क्योंकि वैष्णव धर्म में राम नाम का महत्व है, प्रार्थना है, जीवों पर दया है और इसीलिए पूरे जीवन भर हर पल, हर क्षण वे राम का नाम लेते थे और यही कारण है कि मरते वक्त भी उसके मुंह से राम शब्द निकला । ये विचारधारा की लड़ाई है, जो आज हमारे गंभीर राष्ट्रवाद बनाम उत्तेजक राष्ट्रवाद जो आज देश में फैला हुआ है, उसके खिलाफ लड़ाई लड़नी पड़ेगी, जो गांधी जी ने शुरूआत की है, उसको आगे बढ़ाने की आवश्यकता है और आज यह सदन संकल्प लेता है कि हम गांधी के राष्ट्रवाद, गंभीर राष्ट्रवाद पर चलते हुए देश के करोड़ों-करोड़, प्रदेश के करोड़ों लोगों के चाहे हमारे आदिवासी हों, चाहे अनुसूचित जाति के हों, चाहे हमारी महिला हों, चाहे किसान हो, मजदूर हों, चाहे वह छोटे व्यापारी हों, हर वर्ग के हित गांधी के रास्ते पर चलकर हम लोग करेंगे । इन्हीं शब्दों के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

समय :
2:55 बजे

संकल्प

"राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर यह कृतज्ञ राष्ट्र की तरह हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने बापू के विचारों को आत्मसात करते हुये जनसेवा का रास्ता अपनाया । यह सदन संकल्प लेता है कि हम महात्मा गांधी के द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलेंगे और समाज के साम्प्रदायिक सद्भाव और समरसता बनाये रखेंगे और सभी सामाजिक बुराईयों के साथ मिलकर लड़ेंगे ।"

अध्यक्ष महोदय :- कल दिनांक 2 अक्टूबर 2019 को माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व पर अपने विचार रखे जाने के पश्चात संकल्प प्रस्तुत किया गया था, जो इस प्रकार है-

"राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर यह कृतज्ञ राष्ट्र की तरह हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने बापू के विचारों को आत्मसात करते हुये जनसेवा का रास्ता अपनाया । यह सदन संकल्प लेता है कि हम महात्मा गांधी के द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलेंगे और समाज के साम्प्रदायिक सद्भाव और समरसता बनाये रखेंगे और सभी सामाजिक बुराईयों के साथ मिलकर लड़ेंगे ।"

संकल्प स्वीकृत हुआ ।

समय :
2:56 बजे

सत्र समापन

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ विधान सभा के इस ऐतिहासिक सत्र के समापन के अवसर पर मैं अभी सभी साथियों को, सभी सदस्यों को, बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ और सदन के नेताजी के प्रति, माननीय विपक्ष के नेता के प्रति, माननीय चौबे जी के प्रति, सभी माननीय सदस्यों के प्रति, बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ, जो उन्होंने सहयोग प्रदान किया, वह बहुत अभूतपूर्व रहा । मेंरा दृढ़ विश्वास है कि छत्तीसगढ़ विधान सभा की गौरवशाली इतिहास को जब भी लिखा जायेगा या पढ़ा जायेगा तो इस आवेदन के बारे में निश्चित रूप से चर्चा होगी । आपने जिस ढंग से

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अपनी भावनायें व्यक्त की है, बापू के संस्कारों को, विचारों को, आपने यहां प्रतिपादित करने की कोशिश किया है । उनके संस्कारों को यहां जागृत बनाये रखने की कोशिश हुई है, वह निश्चित रूप से एक ऐतिहासिक धरोहर बनेगा, ऐसा मैं मानता हूँ । इस अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदया, उपस्थित होकर हम लोगों का उत्साह बढ़ाया, उन्हें मैं विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूँ । गांधी जयंती के अवसर पर माननीय भारती बंधु जी ने जो भजन प्रस्तुत किया, गायन प्रस्तुत किया, माननीय भानुप्रताप सिंह जी ने जो टिकटों की प्रदर्शनी लगाई और नई दिल्ली के गांधी स्मृति संस्थान ने अपनी प्रदर्शनी के माध्यम से बापू जी के बचपन से लेकर अंतिम समय तक जो प्रदर्शनी थी, यहां प्रस्तुत की है । वह निश्चित रूप से बहुत ही सुंदर, अद्वितीय कहा जाना चाहिये । मैं उन सब के लिए उनका धन्यवाद देता हूँ। दिल्ली से पधारे टीकम सिंह जी ने जो यहां एकल नाट्य प्रस्तुत किया, बहुत ही सराहनीय रहा । मैं कहना चाहता हूँ कि मैंने अपने जीवन में इस प्रकार के पहले नाटक देखी, जो लगभग सभी दर्शकों के आंखों को नम कर दिया । अभी हम लोगों के भोजन अवकाश के बाद अपूर्वानंद जी का, लक्ष्मीदास जी का और तीजन बाई जी का प्रस्तुति होना है । मैं आप सबसे निवेदन करूंगा कि आप उसमें शामिल हो । वह भी इस आयोजन को गरिमा प्रदान करने के लिए रखा गया है । मैं सभी राज्य शासन के ओर से जो पांच लोक कल्याणकारी योजनायें माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा घोषित की गई, उसे मानता हूँ कि बापू जी की जनसेवा, उनकी जनकल्याण की भावना को, ध्यान में रखते हुये की गई है । मैं उसकी सराहना करना चाहता हूँ । उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- मैं माननीय राज्य शासन की ओर से जो 05 लोक कल्याणकारी योजनाएं यहां पर माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा घोषित की गई हैं उसे मानता हूं कि बापू जी की जनसेवा, उनके जन कल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए की गई है, मैं उसकी सराहना करना चाहता हूं, उनको धन्यवाद देना चाहता हूं। छत्तीसगढ़ सद्भावना और सद्विचार का हमेशा से केन्द्र रहा है, पावन भूमि है। यहां पूज्य कबीर जी की भावनाओं, आदर्श को हमेशा एक उँचाई में रखा गया है, देखा गया है। यहां पर बापू जी के साथ ही साथ बाबा गुरूघासीदास जी के सत्य, अहिंसा, प्रेम को सदैव से अपनाया जा रहा है और पंडित सुंदरलाल जी के जो विचार थे उन सबके प्रति बापू ने सार्वजनिक रूप से सम्मान प्रस्तुत किया उससे हम सब गौरवान्वित हुए और आज उनको याद करते हुए हम और भी गर्व का अनुभव कर रहे हैं। महात्मा गांधी जी के विषय में जिन सदस्यों ने भाषण के माध्यम से अपनी जानकारी प्रस्तुत की है, मैं भी लाभान्वित हुआ हूं, सदन भी लाभान्वित हुआ है और ऐसा लगा है कि हम एक दूसरे के बताये तथ्यों से, भाषणों से, ज्ञान से हम सबको लाभ मिला है। मैं चाहता हूं कि जो भावना आपने व्यक्त की है, वह आपके हृदय के उद्गार थे। उन भावनाओं को लेकर चलें, उन विचारों को लेकर चलें तो निश्चित रूप से आपकी जो भावना है आने वाले समय में हमें और मजबूती प्रदान करेगा, हम सबको महात्मा

असंशोधित/पुनरीक्षण के लिए नहीं

गांधी जी के स्मृतियों को जीवित रखने में उनके संस्कार, उनके आदर्श, उनकी भावनाओं को अपनी आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाने में मदद करेगा इसलिए मैं चाहता हूं कि उन भावनाओं और विचार को आप अपने व्यावहारिक रूप में प्रदर्शित करने का प्रयास करें। मेरी शुभकामनाएं रहेंगी। मैं आप सबको इस बारे में अपना आशीर्वाद तो सबको नहीं दे सकता, मैं चाहता हूं कि आप गांधी जी के आदर्शों के साथ, संकल्पों के साथ जीयें और आपका जीवन सफल हो। बापूजी की हम लोगों ने जो यहां 150वीं जयंती मनाई, मैं स्वयं उससे बहुत लाभान्वित रहा हूं। ये वर्ष मेरे लिए बड़े लाभ का रहा है, महत्वपूर्ण रहा है कि जहां पर गांधी जी ने बैरिस्टर गांधी से महात्मा गांधी बनने का सफर तय किया, दक्षिण अफ्रीका वहां जाकर मैं बहुत ही लाभ प्राप्त कर सका, दर्शन कर सका और उनके विचारों को अंर्तमन में अनुभव किया जो मैं यहां व्यक्त नहीं कर सकता। मैं यह मानता हूं कि जो हमारे देश के गिरमिटिया थे उनके दर्द ने बापू गांधी को महात्मा गांधी बनाने के लिए एक हीरा बनाने के लिए बहुत काम किया है। इस तरह के दर्द आपको अपने प्रदेश में और देश में भी देखने को मिलेंगे। मैं चाहूंगा कि उन दर्दों से आप भी सीखें और अपने आपको महात्मा जी के रास्ते पर चलायें, ये मेरा आपसे अनुरोध होगा। मुझे ये कहने के बावजूद भी थोड़ा दुख इस बात का हो रहा है कि दक्षिण अफ्रीका में भी महात्मा गांधी पर दो बार हत्या करने के प्रयास किए गए। खैर, वह तो हमारे भारत में नहीं है, हमारे हाथ में नहीं है मगर उनके कार्यों से जो वहां के लोगों ने असहमति व्यक्त की और वहां दो बार उनकी हत्या का प्रयास हुआ। यह एक अलग बात है, मगर भारत देश में ही उनकी हत्या के पहले पांच बार प्रयास हुए हैं। मैं इसे कल भी व्यक्त करना चाहता था मगर मैंने व्यक्त नहीं किया। चूंकि आपके किसी भाषण में ये बात नहीं आई है, मैं आपको थोड़ा यह जानकारी देना चाहता हूं कि गांधी जी की हत्या की पहली कोशिश सन् 1934 में हुई जब महात्मा गांधी जी के सम्मान में जब वह जा रहे थे तब बापू की हत्या के लिए उन पर बम फेंका गया। दूसरी कोशिश 22 जुलाई, 1944 को जब वह महादेव देसाई जी और अपनी मॉ को खोकर जब जेल से रिहा हुए थे, तब 22 जुलाई, 1944 को एक युवक ने छुरा से उनकी हत्या करने की कोशिश की। बापू जी ने उन पर नाराजगी व्यक्त नहीं की, बल्कि कहा कि उसको माफ करो और मेरे पास लाओ। वे मुझे बतायें कि वे मुझे क्यों मारने की कोशिश कर रहे हैं ? तीसरी कोशिश 1944 में ही हुई, वही जिसका माननीय मुख्यमंत्री जी आप जिक्र कर रहे थे, तथा कथित मानवता विरोधी शक्तियां, इनने बापू को घेर लिया और फिर से चाकू से वार करने की, हत्या करने की कोशिश हुई जिसमें वे सफल नहीं हो पाये। चौथी बार 30 जून, 1946 में जब वे ट्रेन से जा रहे थे, उस ट्रेन को उड़ाने की कोशिश की गई और उस ट्रेन को उड़ाने की घटना के बाद, हालांकि बापू जी को ज्यादा नुकसान नहीं हुआ, बापू जी ने खुद कहा कि मुझे मारने की यह सातवीं कोशिश है, मगर मैं मरूंगा नहीं, मेरा जीवन कम से कम 150 साल का होगा। ऐसी उनकी मंशा थी कि वे 150 साल तक भारत की सेवा करते हैं। पांचवीं असफल कोशिश

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

1948 में हुई जब 20 जनवरी की शाम प्रार्थना सभा के समय, यह शायद बहुत साथियों को मालूम होगा, उन पर बम फेंका गया, बम फटा भी, मगर निशाना चूक गया था, इस तरह से बापू की हत्या 20 जनवरी 1948 को नहीं हो पायी। अवंत: 30 जनवरी की वह घड़ी आई जब हमने बापू को खो दिया। किन परिस्थितियों में खोया, यह सब आप जानते हैं, मैं उसका जिक्र यहां नहीं करना चाहता।

आज के इस अवसर पर मैं कहना चाहता हूं कि शांति के कोख से ही समृद्धि का जन्म होता है। जब तक हम अपने हृदय को शांत नहीं रखेंगे, अपने समाज को शांत रखने का प्रयास नहीं करेंगे, अपने आस-पास के वातावरण को प्रयास नहीं करेंगे कि शांत रहे, प्रदेश को शांत नहीं रख पायेंगे, देश को शांत रखने की कोशिश नहीं करेंगे, तब तक न तो हम समाज में शांति की स्थापना कर पायेंगे, न ही हम बापू के आदर्शों का अनुसरण कर पायेंगे। मैं आप सबको शुभकामनाएं देता हूं और मैं चाहता हूं कि इस दो दिवसीय कार्यवाही का, जो दो दिवस तक आप सब लोगों ने यहां अपने विचार रखें हैं, अभिव्यक्ति दी है, उनका प्रकाशन हो। राष्ट्रीय स्तर पर यह बात पहुंचे कि छत्तीसगढ़ के विधायक साथियों ने, छत्तीसगढ़ विधानसभा ने किस तरह से गांधी जी को अपनाया। किस तरह से उनकी भावनाएं हैं, वह देश स्तर पर पहुंचे कि मैं एक निवेदन करना चाहता हूं, इसके पीछे मेरा यही उद्देश्य है कि आपकी भावना देश तक पहुंचे। आपकी भावनाओं से देश जाने, देश यह समझे कि छत्तीसगढ़ में इस प्रकार की भावनाएं माननीय हमारे परम पिता स्वरूप राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रति है। छत्तीसगढ़ विधानसभा के सभी साथियों को मैं धन्यवाद करते हुए, विशेष रूप से मैंने जो महसूस किया है कि यहां हमारे राज्य शासन के जो विभाग हैं, उनके प्रति जिस ढंग से एक सहयोगात्मक रवैया देखने को मिला, उसके लिये संसदीय कार्य विभाग के साथियों का, अधिकारियों का, जनसंपर्क विभाग के अधिकारियों का, ग्रामोद्योग विभाग, संस्कृति विभाग और छत्तीसगढ़ शासन के विभिन्न विभागों का जो सहयोग रहा है, उसकी मैं यहां प्रशंसा करना चाहता हूं। गांधी जी की स्मृति में जो कार्यक्रम आयोजित किये गये, उसमें आप सबने जो सहयोग दिया, उसके लिए आप सबका धन्यवाद करना चाहता हूं। गंगराड़े जी के साथियों के लिये और यहां के जितने भी अधिकारी कर्मचारी साथी हैं, उनको धन्यवाद अर्पित करते हुए, मैं इस पांचवीं विधानसभा के विशेष सत्र के समापन के अवसर पर मैं आपको शुभकामनाएं देता हूं। आपके लिये मंगल कामना करता हूं। आप गांधी जी के आदर्शों पर चल सकें, ईश्वर ऐसी शक्ति प्रदान करें और गांधी जी को नमन करते हुए, मैं बार-बार उनके प्रति सम्मान व्यक्त करता हूँ और जैसा कि नियम है आगामी शीतकालीन सत्र, आप सबके हिसाब से जो तय हुआ है 25 नवम्बर से 6 दिसम्बर तक। मैं आपको उसकी जानकारी देना चाहता हूँ। हम सब इस पावन अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आदर्शों और सिद्धांतों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए, एक बेहतर नागरिक बने और बेहतर नागरिक बनने का संकल्प लें और राज्य और राष्ट्र के निर्माण में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। यही मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ। धन्यवाद्।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आज गुरूवार, दिनांक 03 अक्टूबर, 2019 को विधान सभा की बैठक स्थगित होने के पश्चात् विधान सभा परिसर स्थित डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी प्रेक्षागृह में निम्नांकित कार्यक्रम आयोजित है :-

1. पद्मश्री शमशाद बेगम एवं साथी कमाण्डोज की माननीय सदस्यों से भेंट।

2. सांय 4.00 बजे श्री लक्ष्मी दास, पूर्व अध्यक्ष, खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग तथा सदस्य, कार्यकारिणी समिति, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली एवं डॉ. अपूर्वानंद, प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय का व्याख्यान।

3. सायं 06.00 बजे से सुप्रसिद्ध पंडवानी गायिका पद्म विभूषण डॉ.(श्रीमती) तीजन बाई द्वारा पंडवानी की प्रस्तुति ।

मेरा सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि उक्त कार्यक्रम में एवं पश्चात् आयोजित रात्रि भोज में सम्मिलित होवें।

अब राष्ट्रगान होगा । माननीय सदस्यगण राष्ट्रगान हेतु अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

समय :
3:12 बजे

<u>राष्ट्रगान</u>

(राष्ट्रगान "जन गण मन" की धुन बजाई गई।)

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित।

(अपराह्न 3 बजकर 13 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के स्थगित हुई।)

चन्द्र शेखर गंगराड़े
सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छत्तीसगढ़)
03 अक्टूबर, 2019

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं